



मामला सं. एडी (ओआई) - 23/2025

भारत सरकार
वाणिज्य विभाग
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
व्यापार उपचार महानिदेशालय

अंतिम जांच परिणाम

कुवैत राज्य, मलेशिया, ओमान सल्तनत, कतर राज्य, सऊदी अरब साम्राज्य और संयुक्त अरब अमीरात के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "लीनियर लो-डेंसिटी पॉलीएथिलीन" (एलएलडीपीई) के आयात से संबंधित पाटन रोधी जांच



लीनियर लो-डेंसिटी पॉलीएथिलीन" (एलएलडीपीई) का चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण

विषयसूची

मामले की पृष्ठभूमि	4
क. प्रक्रिया.....	5
ख. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु.....	10
ख.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार.....	10
ख.2 घरेलू उद्योग के विचार.....	13
ख.3 प्राधिकारी द्वारा जांच.....	17
ग. घरेलू उद्योग का कार्यक्षेत्र और स्थिति.....	22
ग.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार.....	22
ग.2 घरेलू उद्योग के विचार.....	27
ग.3 प्राधिकारी द्वारा जांच.....	31
घ. गोपनीयता.....	42
घ.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियाँ.....	42
घ.2 घरेलू उद्योग की टिप्पणियाँ.....	42
घ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच.....	42
ङ. विविध अनुरोध.....	44
ङ.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियाँ.....	44
ङ.2 घरेलू उद्योग की टिप्पणियाँ.....	45
ङ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच.....	45
च. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन.....	46
च.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियाँ.....	46
च.2 घरेलू उद्योग के विचार.....	49
च.3 प्राधिकारी द्वारा जांच.....	50
च.3.1 सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण.....	61
क) कुवैत से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य.....	61
ख) कुवैत से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत.....	62

मलेशिया से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य	63
ओमान से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य.....	63
कतर से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य	64
सऊदी अरब से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य	66
सऊदी अरब से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत	70
यूएई से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य.....	75
च.3.2 पाटन मार्जिन	76
छ. क्षति का आकलन.....	79
छ.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार	79
छ.2 घरेलू उद्योग के विचार	89
छ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच.....	94
छ.3.1 क्षति का संचयी आकलन	95
छ.3.2 पाटित किए गए आयातों का मात्रा प्रभाव.....	97
छ.3.3 पाटित किए गए आयातों का कीमत प्रभाव.....	104
छ.3.4 घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंड	108
छ.3.5 क्षति का समग्र आकलन	119
ज. गैर-आरोपण विश्लेषण और कारणात्मक संबंध	120
झ. क्षति अंतर का परिमाण	126
ञ. शुल्क प्रभाव आकलन.....	129
ञ.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार	129
ञ.2 घरेलू उद्योग के विचार.....	130
ञ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच	131
ट. प्रकटीकरण-पश्चात टिप्पणियाँ	135
ठ. निष्कर्ष	148
ड. सिफारिशें.....	150
ढ. आगे की प्रक्रिया.....	153

भारत के राजपत्र, असाधारण, के भाग-I, खंड- I में प्रकाशनार्थ

फा. सं. 6/26/2025-डीजीटीआर

भारत सरकार

वाणिज्य विभाग

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

व्यापार उपचार महानिदेशालय

चौथा तल, जीवन तारा बिल्डिंग, पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली - 110001

दिनांक: 25.06.2026

अंतिम जांच परिणाम

मामला सं. एडी(ओआई)-23/2025

विषय: कुवैत राज्य, मलेशिया, ओमान सल्तनत, कतर राज्य, सऊदी अरब साम्राज्य और संयुक्त अरब अमीरात के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "लीनियर लो-डेंसिटी पॉलीएथिलीन" (एलएलडीपीई) के आयात से संबंधित पाटन रोधी जांच।

फा. सं. 6/26/2025-DGTR - समय-समय पर संशोधित सीमा शुल्क अधिनियम, 1975 (इसके बाद 'अधिनियम' के रूप में संदर्भित) और उसके तहत बनाए गए सीमा शुल्क (पाटित वस्तुओं पर पाटन रोधी शुल्क की पहचान, आकलन और संग्रहण तथा क्षति के निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995, जैसा कि समय-समय पर संशोधित (इसके बाद "एडी नियमावली, 1995" के रूप में संदर्भित) को ध्यान में रखते हुए:

मामले की पृष्ठभूमि

1. केमिकल्स एंड पेट्रोकेमिकल्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सीपीएमए) (इसके बाद "आवेदक संघ" के रूप में संदर्भित) ने भारतीय एलएलडीपीई निर्माताओं की ओर से, सीमा शुल्क अधिनियम, 1975 और एडी नियमावली, 1995 के अनुसार, कुवैत राज्य ("कुवैत"), मलेशिया, ओमान सल्तनत ("ओमान"), कतर राज्य ("कतर"), सऊदी अरब साम्राज्य ("सऊदी अरब") और संयुक्त अरब अमीरात ("यूएई") के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'रैखिक

निम्न-घनत्व पॉलीएथिलीन" (इसके बाद 'विचाराधीन उत्पाद' या 'पीयूसी' या 'संबद्ध वस्तुएँ' या 'एलएलडीपीई' के रूप में भी संदर्भित) के आयात से संबंधित पाटन रोधी जांच शुरू करने के लिए प्राधिकारी (इसके बाद 'प्राधिकारी' के रूप में भी संदर्भित) के समक्ष एक आवेदन दायर किया, जिन्हें इसके बाद सामूहिक रूप से "संबद्ध देश" कहा गया है। हल्दिया पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड (इसके बाद "एचपीएल") और एचपीसीएल-मितल एनर्जी लिमिटेड (इसके बाद "एचएमईएल"), जिन्हें सामूहिक रूप से "घरेलू उद्योग" कहा गया है, ने क्षति की जानकारी प्रदान की और रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने एक समर्थन पत्र दायर किया।

2. और जबकि, आवेदक द्वारा दायर विधिवत प्रमाणित आवेदन के मद्देनजर, प्राधिकारी ने 30 जून 2025 की अधिसूचना संख्या 6/26/2025-डीजीटीआर द्वारा, भारत के राजपत्र में प्रकाशित एक सार्वजनिक सूचना जारी की, जिसमें पाटन रोधी नियमावली के नियम 5 के अनुसार संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात में पाटन रोधी जांच शुरू की गई ताकि कथित पाटन के अस्तित्व, मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटन रोधी शुल्क की राशि की सिफारिश की जा सके, जो यदि लगाया जाए, तो घरेलू उद्योग को कथित क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।

क. प्रक्रिया

3. जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है:

क.1 जांच की शुरुआत

- i. प्राधिकारी ने एडी नियमावली, 1995 के नियम 5(5) के अनुसार जांच शुरू करने के लिए आगे बढ़ने से पहले संबद्ध देशों के दूतावासों को भारत में वर्तमान पाटन रोधी आवेदन की प्राप्ति के बारे में सूचित किया।
- ii. इसके अलावा, भारत-यूएई व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते के अनुच्छेद 7.2 के पैरा 3 के तहत संयुक्त अरब अमीरात सरकार द्वारा जांच शुरू करने से पूर्व परामर्श के अनुरोध के अनुसरण में, 29.06.2025 को यूएई सरकार के साथ परामर्श किया गया।
- iii. क्षति अवधि के साथ-साथ जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों का लेन-देन-वार विवरण प्रदान करने के लिए डीजीसीआईएंडएस और डीजी सिस्टम्स से

अनुरोध किया गया था। प्राधिकारी ने लेन-देन की उचित जांच के बाद आयातों की मात्रा के निर्धारण और आवश्यक विश्लेषण के लिए डीजी सिस्टम्स के आंकड़ों पर भरोसा किया है।

- iv. नियम 6 के अनुसार, आवेदन की जांच करने और पाटन, क्षति, संभावना और कारणात्मक संबंध के प्रथम दृष्टया साक्ष्य पाए जाने पर, प्राधिकारी ने 30 जून 2025 की एक सार्वजनिक सूचना जारी की, जो भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित हुई, जिसमें संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात से संबंधित पाटन रोधी जांच शुरू की गई।
- v. एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(2) के अनुसार, प्राधिकारी ने संबद्ध देशों की सरकारों को, भारत में उनके दूतावासों के माध्यम से, संबद्ध देशों से ज्ञात उत्पादकों और निर्यातकों, ज्ञात आयातकों/उपयोगकर्ताओं, घरेलू उद्योग, अन्य भारतीय उत्पादकों के साथ-साथ अन्य हितबद्ध पक्षकारों को, आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार, जांच शुरू करने की सूचना की एक प्रति भेजी और उनसे निर्धारित समय सीमा के भीतर लिखित रूप में अपने विचार ज्ञात कराने का अनुरोध किया।

क.2 जांच अवधि

- vi. वर्तमान जांच के प्रयोजन के लिए जांच अवधि (पीओआई) 1 जनवरी 2024 से 31 दिसंबर 2024 (12 महीने) है। क्षति जांच अवधि [आईआईपी] वित्त वर्ष 2021-22, वित्त वर्ष 2022-23, वित्त वर्ष 2023-24 और जांच अवधि की अवधि को शामिल करती है।

क.3 आवेदन के अगोपनीय संस्करण का परिचालन

- vii. एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(3) के अनुसरण में, प्राधिकारी ने आवेदन के अगोपनीय संस्करण की एक प्रति ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और संबद्ध देशों की सरकारों को, भारत में उनके दूतावासों के माध्यम से प्रदान की।
- viii. नियम 6(4) के अनुसरण में, भारत में विचाराधीन उत्पाद के ज्ञात उत्पादकों, निर्यातकों, आयातकों और उपयोगकर्ताओं को आवश्यक सूचना प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली जारी की गई, जिसमें सामान्य मूल्य और निवल निर्यात कीमत का विवरण

शामिल था। जहाँ भी अनुरोध किया गया, अन्य हितबद्ध पक्षकारों को आवेदन के अगोपनीय संस्करण की एक प्रति प्रदान की गई।

क.4 हितबद्ध पक्षकारों द्वारा भागीदारी

ix. संबद्ध देशों से निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों ने प्रश्नावली प्रतिक्रियाएँ दाखिल करके उत्तर दिया है:

देश	उत्पादक/निर्यातक का नाम
कुवैत	इक्वेट पेट्रोकेमिकल कंपनी ("इक्वेट")
मलेशिया	मलेशिया से कोई उत्पादक भाग नहीं लिया है
ओमान	मेसर्स ओक्यू पॉलिमर एल.एल.सी. ("ओक्यू पॉलिमर")
	ओक्यू मार्केटिंग एल.एल.सी. ("ओक्यू मार्केटिंग")
कतर	कतोफिन कंपनी लिमिटेड क्यू.पी.जे.एस.सी ("कतोफिन")
कतर	कतर केमिकल एंड पेट्रोकेमिकल मार्केटिंग एंड डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी (मुंतजात) क्यू पी जे एस सी ("मुंतजात")
	कतर एनर्जी मार्केटिंग ("क्यूईएम")
	टोटलएनर्जीज पेट्रोकेमिकल्स फ्रांस - कतर शाखा कार्यालय ("टोटल एनर्जीज")
सऊदी अरब	अल-जुबैल पेट्रोकेमिकल कंपनी ("केम्या")
सऊदी अरब	अरेबियन पेट्रोकेमिकल कंपनी ("पेट्रोकेम्या")
सऊदी अरब	ईस्टर्न पेट्रोकेमिकल कंपनी ("शर्क")
सऊदी अरब	जुबैल यूनाइटेड पेट्रोकेमिकल कंपनी ("यूनाइटेड")
सऊदी अरब	राबिघ रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल कंपनी ("आरआरपीसी")
सऊदी अरब	सदारा केमिकल कंपनी ("सदारा")
सऊदी अरब	यान्बू राष्ट्रीय पेट्रोकेमिकल कंपनी ("यानसाब")
सऊदी अरब	सऊदी बेसिक इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन ("सैबिक")
सऊदी अरब	सैबिक एशिया पैसिफिक पीटीई लिमिटेड ("एसएपीपीएल")
सऊदी अरब	एसपीडीसी
सऊदी अरब	एक्सॉनमोबिल एशिया पैसिफिक पीटीई लिमिटेड
सऊदी अरब	डाउ सऊदी अरब प्रोडक्ट मार्केटिंग बी.वी. ("डीएसए")

सऊदी अरब	डाउ केमिकल पैसिफिक (सिंगापुर) प्राइवेट लिमिटेड ("डीसीपी (एस)")
सऊदी अरब	डाउ केमिकल पैसिफिक (सिंगापुर) प्राइवेट लिमिटेड, दुबई शाखा ("डीसीपी (डी)")
सऊदी अरब	डाउ केमिकल इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड दुबई शाखा ("डीसीआईपीएल")
संयुक्त अरब अमीरात	अबू धाबी पॉलिमर्स कंपनी लिमिटेड ("एडीपीसीएल")
संयुक्त अरब अमीरात	बोरौज पीटीई लिमिटेड
संयुक्त अरब अमीरात	एसआरजे ग्लोबल एफ.जेड.ई.

- x. निम्नलिखित आयातकों/उपयोगकर्ताओं ने प्रश्नावली प्रतिक्रियाएँ दाखिल करके उत्तर दिया है:
- सैबिक रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड ("एसआरटीपीएल")
 - एक्सॉनमोबिल कंपनी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ("ईएमसीआईपीएल")
- xi. जांच शुरू करने की सूचना के जवाब में, किसी भी संघ ने भाग नहीं लिया है या वर्तमान जांच में प्रश्नावली प्रस्तुत नहीं की है। अखिल भारतीय एचडीपीई/पीपी बुने कपड़े निर्माता संघ ने कानूनी अनुरोधों की हैं जिन पर प्राधिकारी ने विचार किया है।
- xii. निर्धारित समय सीमा के भीतर स्वयं को पंजीकृत करने वाले सभी हितबद्ध पक्षकारों की एक सूची वेबसाइट पर अपलोड की गई थी। सभी पंजीकृत हितबद्ध पक्षकारों को वर्तमान कार्यवाहियों में अपनी सभी अनुरोधों का अगोपनीय संस्करण अन्य सभी हितबद्ध पक्षकारों को परिचालित करने का निर्देश दिया गया था।
- xiii. सभी ज्ञात उत्पादकों और निर्यातकों, आयातकों और घरेलू उद्योग को एक आर्थिक हित प्रश्नावली जारी की गई थी। आर्थिक हित प्रश्नावली प्रशासनिक लाइन मंत्रालय को भी साझा की गई थी। आर्थिक हित प्रश्नावली केवल घरेलू उद्योग द्वारा दाखिल की गई थी।
- xiv. विदेशी उत्पादकों, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को, जिन्होंने उत्तर नहीं दिया है, या इस जांच के लिए प्रासंगिक सूचना प्रदान नहीं की है, असहयोगी माना गया है।

क.5 आगे की प्रक्रिया

- xv. विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दाखिल अनुरोधों के अगोपनीय संस्करण सभी भाग लेने वाले हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराए गए। सभी हितबद्ध पक्षकारों की एक सूची डीजीटीआर वेबसाइट पर अपलोड की गई थी जिसमें उन सभी से अपनी अनुरोधों का अगोपनीय संस्करण अन्य सभी हितबद्ध पक्षकारों को ईमेल करने का अनुरोध किया गया था।
- xvi. नियम 6(6) के अनुसार, प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों को 15 अप्रैल 2026 को आयोजित एक सुनवाई में मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। मौखिक सुनवाई में अपने विचार प्रस्तुत करने वाले पक्षों को मौखिक रूप से व्यक्त विचारों की लिखित अनुरोधियाँ देने का निर्देश दिया गया, जिसके बाद प्रत्युत्तर अनुरोधियाँ दी गईं।
- xvii. नियम 6(8) के अनुसार, जहाँ भी किसी हितबद्ध पक्षकार ने पहुँच से इनकार किया है या वर्तमान कार्यवाहियों के दौरान अन्यथा समयबद्ध तरीके से आवश्यक सूचना प्रदान नहीं की है, या जांच में महत्वपूर्ण बाधा डाली है, ऐसे पक्षों को असहयोगी माना गया है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर जांच परिणाम दर्ज किए गए हैं।
- xviii. नियम 7 के अनुसार, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान की गई सूचना की ऐसे गोपनीयता दावों की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई। संतुष्ट होने पर, गोपनीयता दावों को जहाँ भी उचित था स्वीकार कर लिया गया है और ऐसी सूचना को गोपनीय माना गया है और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं किया गया है। जहाँ भी संभव था, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षों को गोपनीय आधार पर दाखिल सूचना का पर्याप्त अगोपनीय संस्करण प्रदान करने का निर्देश दिया गया था।
- xix. नियम 8 के अनुसार, जांच के दौरान प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदान की गई सूचना और आंकड़ों की सटीकता का, जहाँ तक प्रासंगिक, व्यावहारिक और आवश्यक समझा गया, सत्यापन किया गया। प्रस्तुत आंकड़ों और दस्तावेजों का सत्यापन अंतिम निष्कर्ष का आधार बनता है और प्राधिकारी ने वर्तमान कार्यवाहियों में अपने विश्लेषण के लिए घरेलू उद्योग के सत्यापित आंकड़ों पर भरोसा किया है।
- xx. प्राधिकारी ने 30 जून 2025 की जांच शुरू करने की सूचना के पैरा 5 के माध्यम से जांच शुरू होने के 15 दिनों के भीतर विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र पर टिप्पणियाँ

मांगी थीं। हितबद्ध पक्षकारों को विचाराधीन उत्पाद और उत्पाद नियंत्रण संख्या (पीसीएन) पद्धति पर 20 जुलाई 2025 तक टिप्पणियाँ दाखिल करने के लिए अतिरिक्त समय दिया गया था। प्राधिकारी ने, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों पर विचार करने के बाद, 22 अगस्त 2025 की अधिसूचना के माध्यम से, विचाराधीन उत्पाद और पीसीएन के अंतिम कार्यक्षेत्र को अधिसूचित किया। सभी हितबद्ध पक्षकारों को पीसीएन पद्धति की अधिसूचना के 15 दिनों के भीतर, अंतिम रूप दिए गए विचाराधीन उत्पाद के अनुसार प्रश्नावली प्रतिक्रियाएँ दाखिल करने का निर्देश दिया गया था। कुछ हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध पर, समय सीमा को आगे बढ़ाकर 12 सितंबर 2025 कर दिया गया।

- xxi. क्षति रहित कीमत की गणना, आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर और सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) और नियमों के अनुबंध III में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार, भारत में घरेलू समान वस्तु के उत्पादन और बिक्री की इष्टतम लागत और लागत के आधार पर की गई है।
- xxii. इस जांच के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा की गई अनुरोधयाँ, जहाँ तक साक्ष्य से समर्थित और वर्तमान जांच के लिए प्रासंगिक मानी गई, प्राधिकारी द्वारा इस प्रकटीकरण विवरण में उचित रूप से विचार किया गया है।
- xxiii. सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए सभी तर्क और प्रदान की गई सूचना, जहाँ तक वही साक्ष्य से समर्थित है और वर्तमान जांच के लिए प्रासंगिक मानी गई है, पर विचार किया गया है।
- xxiv. इस दस्तावेज में '***' एक हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का प्रतिनिधित्व करता है और एडी नियमावली, 1995 के तहत प्राधिकारी द्वारा ऐसा माना गया है।
- xxv. इस जांच के लिए प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई विनिमय दर 1 अमेरिकी डॉलर = ₹ 84.58 है।

ख. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

ख.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

4. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- i. एलएलडीपीई मुख्यतः तीन प्रकार का होता है, इसके बहुलकीकरण के दौरान उपयोग किए जाने वाले सहबहुलक के आधार पर, यथा सी-4 (ब्यूटीन आधारित), सी-6 (हेक्सीन आधारित) और सी-8 (ऑक्टीन आधारित)। आवेदक सी-8 आधारित एलएलडीपीई का निर्माण नहीं करते हैं और मौखिक सुनवाई के दौरान इसे स्वीकार किया था। उत्पाद कार्यक्षेत्र में वे उत्पाद शामिल नहीं हो सकते जो वाणिज्यिक मात्रा में उत्पादित और बेचे नहीं जाते।
- ii. सी-8 आधारित एलएलडीपीई में मानक एलएलडीपीई की तुलना में उन्नत गुण होते हैं और यह आधार श्रेणियों पर एक महत्वपूर्ण मूल्य प्रीमियम प्राप्त करता है।
- iii. चूंकि सी-8 आधारित एलएलडीपीई भारत को निर्यात नहीं किया गया है, इस पर पाटन रोधी शुल्क नहीं लगाया जा सकता। तदनुसार, सभी सी-8 आधारित एलएलडीपीई को उत्पाद कार्यक्षेत्र से बाहर रखा जाना चाहिए।
- iv. चूंकि आवेदकों द्वारा उत्पादित सी-4 और सी-6 एलएलडीपीई व्यक्तिगत रूप से सीधे सी-8 आधारित एलएलडीपीई को प्रतिस्थापित नहीं कर सकते और केवल दोनों का संयोजन सी-8 आधारित एलएलडीपीई को प्रतिस्थापित कर सकता है, यह नहीं कहा जा सकता कि सी-4 और सी-6 एलएलडीपीई के भौतिक और रासायनिक गुण सी-8 आधारित एलएलडीपीई के समान हैं।
- v. रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा सी-8 एलएलडीपीई का उत्पादन, जो घरेलू उद्योग का घटक नहीं है, विचाराधीन उत्पाद के दायरे में एलएलडीपीई को शामिल करने का आधार प्रदान नहीं कर सकता। यदि केवल जांच के समर्थक सी-8 आधारित एलएलडीपीई का निर्माण कर रहे हों तो यह पर्याप्त नहीं है। समर्थकों को संपूर्णता में जांच का हिस्सा होना चाहिए।
- vi. अन्य उत्पादकों द्वारा भागीदारी के अभाव में, प्राधिकारी यह सत्यापित नहीं कर सकता कि अन्य उत्पादक सी-8 आधारित एलएलडीपीई का निर्माण कर रहे हैं या नहीं।
- vii. आवेदक एलएलडीपीई के चूर्ण रूप का निर्माण नहीं करते हैं और तदनुसार, इसे बाहर रखा जाना चाहिए। एचएमईएल के श्रेणियाँ एम2024एल और एम5026एल में उच्च प्रवाह सूचकांक है, तथापि, ऐसी श्रेणियों का रूप और उपयोग भिन्न है। इस प्रकार, एमजी200024 और एमजी500026 (यौगिकीकरण के लिए चूर्ण रूप) को विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र से बाहर रखा जाना चाहिए।

- viii. आवेदकों का यह दावा कि छर्छा और चूर्ण रूप विनिमेय हैं, इस तथ्य को संबोधित नहीं करता कि उत्तरदाताओं द्वारा उत्पादित श्रेणियों का रूप और उपयोग भिन्न है और तदनुसार, इसे विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र से बाहर रखा जाना चाहिए।
- ix. सैबिक की श्रेणियाँ 6821एनजे और 6318बी जो सी-6 आधारित एलएलडीपीई हैं, को बाहर रखा जाना चाहिए क्योंकि उनमें उच्चतर विदारण और तनन सामर्थ्य है, जो घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित नहीं किया जाता।
- x. घरेलू उद्योग ने इस तर्क का खंडन नहीं किया है कि भारत में सी6 एलएलडीपीई के लिए पर्याप्त मांग-आपूर्ति अंतराल मौजूद है। उसने न तो श्रेणी-वार उत्पादन या मांग आंकड़े प्रदान किए हैं।
- xi. गैर-धातुसीन श्रेणियों एन0118एल/एन0120एल और धातुसीन श्रेणियों (जैसे एफ0120एलएम/एफ0118एलएम/एन0118एलएम/एन0120एलएम) के बीच महत्वपूर्ण मूल्य अंतर है। एचएमईएल मूल्य परिपत्र के आधार पर यह मूल्य अंतर 15% तक है।
- xii. सदारा मुख्यतः उच्च एल्फा ओलेफिन एलएलडीपीई ("एचएओ एलएलडीपीई") के निर्यात में संलग्न है, जबकि एचएमईएल और एचपीएल मुख्यतः सी4 एलएलडीपीई का उत्पादन करते हैं। सी4 आधारित एलएलडीपीई का उपयोग प्लास्टिक बैग, किराना बैग, द्वितीयक बैग आदि में अनुप्रयोगों के लिए किया जाता है जबकि सी6 और सी8 आधारित एलएलडीपीई का उपयोग मुख्यतः उच्च-निष्पादन अनुप्रयोगों में किया जाता है क्योंकि इसमें काफी अधिक कठोरता, उच्चतर प्रभाव प्रतिरोध और बेहतर ऊष्मा सील गुण होते हैं, जैसे स्टैंडअप पाउच (एसयूपी), भारी शुल्क शिपिंग बोरे (एचडीएसएस), चूर्ण/तरल पाकिट, पिलो पाउच, डायपर/स्त्री स्वच्छता के लिए पश्च फलक फिल्म आदि।
- xiii. एचएओ एलएलडीपीई एक प्रीमियम उत्पाद है, जो उन्नत निष्पादन प्रदान करता है और उच्च कीमतें प्राप्त करता है। साथ ही, भारत में एचएओ एलएलडीपीई के लिए पर्याप्त मांग और आपूर्ति अंतराल है।
- xiv. बोरस्टार® एलएलडीपीई श्रेणियाँ "जिनका एमएफआई/एमएफआर 0.25 ग्राम/10मिनट या उससे कम है (एफबी2230, एफबी1200 और एफबी1350) स्वामित्व बोरस्टार® द्विबहुलकीय प्रौद्योगिकी का उपयोग करके उत्पादित की जाती हैं। इनमें द्विबहुलकीय आणविक भार वितरण और निम्न गलन प्रवाह अनुपात के साथ उच्च आणविक भार होता है। ये भारत में घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित नहीं की जाती हैं।

- xv. इन श्रेणियों में उच्चतर यांत्रिक गुण होते हैं जो एक मैट फिनिश भी प्रदान करते हैं। यह अधिक मोटी फिल्म शीट, यानी 2 मिमी तक मोटाई के उत्पादन की भी अनुमति देता है। यह सब पारंपरिक एलएलडीपीई के उपयोग से संभव नहीं है। इसके अलावा, बोरस्टार® एलएलडीपीई श्रेणियाँ उत्कृष्ट मुद्रण पंजीकरण और स्पष्टता के साथ आसान लेखन की अनुमति देती हैं। यह आवश्यकता घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पारंपरिक एलएलडीपीई से पूरी नहीं होती।
- xvi. एलडीपीई जांच के विपरीत, अधिकतम घनत्व निर्धारित नहीं किया गया है। तदनुसार, प्राधिकारी को विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र में शामिल एलएलडीपीई के अधिकतम घनत्व को स्पष्ट करना चाहिए।

ख.2 घरेलू उद्योग के विचार

5. घरेलू उद्योग की ओर से निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- i. किसी भी आयातक या उपयोगकर्ता ने उत्पाद बहिष्करण के संबंध में एक भी अनुरोध नहीं किया है या यह आरोप नहीं लगाया है कि आवेदकों सहित घरेलू उत्पादकों द्वारा आपूर्ति की गई श्रेणियाँ तुलनीय नहीं हैं या तकनीकी/वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं।
- ii. हाल के मध्य पूर्व संकट के बाद से, भारतीय उत्पादक उपयोगकर्ता उद्योग के अनन्य आपूर्तिकर्ता रहे हैं और सभी श्रेणियों की भारतीय मांग को पूरा कर रहे हैं। इन तथ्यों में, कोई बहिष्करण उचित नहीं है।
- iii. सी-8 आधारित एलएलडीपीई और उच्च एल्फा ओलेफिन (एचएओ) आधारित एलएलडीपीई का बहिष्करण उचित नहीं है क्योंकि आवेदक उत्पादक सी4 और सी6 धातुसीन श्रेणियाँ निर्मित करते हैं, जो आनुपातिक रूप से मिश्रित होने पर, सी8 आधारित एलएलडीपीई से सीधे प्रतिस्पर्धा करती हैं।
- iv. स्टैंडअप पाउच, भारी शुल्क शिपिंग बोरे, तरल पाकिट बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले एलएलडीपीई किसी एकल एकलक आधारित एलएलडीपीई का उपयोग करके निर्मित नहीं किए जाते हैं। बल्कि, ब्यूटीन और अन्य श्रेणियों का संयोजन ऐसे उत्पादों के निर्माण के लिए उपयोग किया जाता है।
- v. भारतीय उद्योग भारत में आयात किए जा रहे सी6, सी8 एलएलडीपीई और उन्नत एलएलडीपीई के समरूप या उनसे सीधे प्रतिस्पर्धा करने वाली श्रेणियाँ निर्मित करता

- है। एचएमईएल ने सी6 आधारित एलएलडीपीई से संबंधित प्रपत्र प्रस्तुत किए हैं। इसके अलावा, रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड सी8 आधारित एलएलडीपीई का उत्पादन करता है।
- vi. एचपीएल विचाराधीन उत्पाद का यौगिकीकृत रूप में निर्माण करता है।
 - vii. आवेदकों ने न केवल एलएलडीपीई का चूर्ण रूप निर्मित किया है बल्कि एलएलडीपीई का छर्चा रूप भी निर्मित किया है और जो सैबिक द्वारा निर्यात एलएलडीपीई के चूर्ण रूप से सीधे प्रतिस्पर्धा करता है।
 - viii. सैबिक श्रेणियों एमजी200024 और एमजी500026 के बहिष्करण के संबंध में, यह प्रस्तुत किया जाता है कि चूर्ण रूप मास्टरबैच निर्माताओं द्वारा उपयोग किया जाता है, जो या तो चूर्ण रूप आयात करना और स्वयं योजक जोड़ना चुन सकते हैं या सीधे एलएलडीपीई के छर्चा रूप का उपयोग कर सकते हैं। इस प्रकार, आवेदकों द्वारा बेचा गया एलएलडीपीई का छर्चा रूप सैबिक द्वारा निर्यात एलएलडीपीई के चूर्ण रूप से सीधे प्रतिस्पर्धा करता है।
 - ix. सैबिक श्रेणियाँ 6821एनजे और 6318बीजे भारत में आयात नहीं की गई हैं और इसलिए, ऐसी श्रेणियों के बहिष्करण का प्रश्न ही नहीं उठता। इस तथ्य के बावजूद, यह प्रस्तुत किया जाता है कि एचएमईएल समान और तुलनीय श्रेणियाँ उत्पादित करता है।
 - x. एचएमईएल समान गुणों वाली समान श्रेणियाँ, 6821एनजे और 6318बी, विशेष रूप से तनन सामर्थ्य, जो सामान्यतः निर्धारक कारक है, उत्पादित करता है। इस प्रकार, यदि ये श्रेणियाँ आयात की जानी थीं, तो वे एचएमईएल द्वारा निर्मित की जा रही श्रेणियों से सीधे प्रतिस्पर्धा करेंगी।
 - xi. जबकि एडीपीसीएल और बोरौज ने उत्पादों के बीच मामूली तकनीकी अंतर बताए हैं, यह स्थापित करने के लिए कोई साक्ष्य प्रदान नहीं किया गया है कि घरेलू रूप से उपलब्ध तुलनीय श्रेणियाँ वाणिज्यिक रूप से गैर-प्रतिस्थापनीय हैं।
 - xii. अंतिम उत्पाद (फिल्म) की मैट या ग्लॉस फिनिश संबद्ध वस्तुओं का अंतर्निहित गुण नहीं है, बल्कि यह प्रसंस्कर्ता द्वारा वांछित फिनिश पर निर्भर करता है, और आवेदकों या अन्य भारतीय उत्पादकों द्वारा निर्मित वस्तुओं का उपयोग मैट-आधारित फिल्म बनाने के लिए भी किया जाता है।
 - xiii. गलन प्रवाह सूचकांक ग्राहकों के संबद्ध वस्तुओं के उपयोग के निर्णय में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता है, जो इस तथ्य से स्पष्ट है कि आवेदक कंपनियों ने अपनी

- संबद्ध वस्तुएँ उन्हीं ग्राहकों को बेची हैं, जो आयातित और घरेलू उत्पादों का विनिमेय रूप से उपयोग करते हैं।
- xiv. स्वामित्व प्रौद्योगिकी बहिष्करण का आधार नहीं हो सकती जब भारतीय एलएलडीपीई उत्पादकों और बोरौज द्वारा निर्मित उत्पाद विनिमेय रूप से उपयोग किए जा रहे हों और एक ही बाजार में प्रतिस्पर्धा करते हों।
- xv. धातुसीन और अन्य उच्च-निष्पादन-आधारित श्रेणियाँ वाणिज्यिक रूप से धातुसीन श्रेणियाँ कहलाती हैं, ऐसी श्रेणियों का तकनीकी नाम भिन्न हो सकता है क्योंकि "धातुसीन" एक्सॉन द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक अनन्य व्यापार चिह्न है।
- xvi. धातुसीन एलएलडीपीई या उच्च-निष्पादन एलएलडीपीई या तो धातुसीन उत्प्रेरकों या अन्य धातुसीन परिवार उत्प्रेरकों के माध्यम से निर्मित होते हैं और इसलिए, उन्हें धातुसीन श्रेणी के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए।
- xvii. अबू धाबी पॉलिमर्स कंपनी लिमिटेड और बोरौज द्वारा आपूर्ति की जाने वाली धातुसीन श्रेणियाँ "एंटियो" नाम से व्यापारित होती हैं। इसी प्रकार, सदारा केमिकल्स ऐसी वस्तुओं की आपूर्ति डॉवलेक्स 5400 जी जैसे नामों से करती है और उन्हें उच्च-निष्पादन एलएलडीपीई के रूप में वर्गीकृत करती है, जबकि सैबिक उन्हें सुपीर नाम से आपूर्ति करता है और उन्हें धातुसीन के रूप में उल्लेखित करता है।
- xviii. घरेलू उद्योग ने निष्पादन उन्नत श्रेणियों को धातुसीन श्रेणियों के साथ क्लब करने का अनुरोध किया था और किसी हितबद्ध पक्षकार ने इस पर कोई आपत्ति नहीं की है।
- xix. प्राधिकारी को सत्यापित करना चाहिए कि क्या निर्यातकों ने अपने उत्पाद को उपयुक्त पीसीएन श्रेणी में सही ढंग से वर्गीकृत किया है और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उच्च-निष्पादन या धातुसीन श्रेणियाँ धातुसीन श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत हों।
- xx. मांग मुख्यतः सी4 आधारित एलएलडीपीई की है जो कुल मांग और आयातों का 80-90% है। सी6 और सी8 आधारित एलएलडीपीई के गुण आवेदकों द्वारा निर्मित उत्पाद के समान ही हैं, विशिष्ट तकनीकी गुण सी4 आधारित एलएलडीपीई को उपयुक्त अनुपात में धातुसीन श्रेणियों के साथ संयोजित करके प्राप्त किए जा सकते हैं।
- xxi. घरेलू उद्योग, यद्यपि सी8-आधारित एलएलडीपीई का निर्माण नहीं करता, सी4 और सी6 धातुसीन श्रेणियाँ उत्पादित करता है, जो आनुपातिक रूप से संयोजित होने पर सी8 आधारित एलएलडीपीई के साथ तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय

हैं। अन्य घरेलू उत्पादक, जिसमें रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड शामिल है, जो भारतीय उद्योग का हिस्सा है और जांच में एक समर्थक है, वाणिज्यिक मात्रा में सी8-आधारित एलएलडीपीई का निर्माण और बिक्री करता है। एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के अनुसार, घरेलू उद्योग में समान वस्तु के सभी घरेलू उत्पादक शामिल हैं, न कि केवल डीजीटीआर के समक्ष आवेदक। चूंकि पाटन रोधी शुल्कों का उद्देश्य संपूर्ण घरेलू उद्योग की रक्षा करना है, सी8-आधारित एलएलडीपीई को उत्पाद कार्यक्षेत्र से बाहर नहीं किया जा सकता।

- xxii. एलएलडीपीई का चूर्ण रूप एक मध्यवर्ती उत्पाद है जिसमें छर्रे बनाने के लिए योजक और वर्णक मिलाए जाते हैं। घरेलू उद्योग छर्रे के रूप में तुलनीय श्रेणियाँ निर्मित करता है, जो सैबिक द्वारा निर्यात चूर्ण रूप से सीधे प्रतिस्पर्धा करती हैं, क्योंकि मास्टरबैच निर्माता किसी भी रूप का उपयोग कर सकते हैं।
- xxiii. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने प्रस्तुत किया है कि आवेदकों द्वारा निर्मित उत्पाद उच्च-निष्पादन अनुप्रयोग के लिए उपयोग नहीं किए जा सकते। उक्त कथन अनिवार्य है। ऐसे अनुप्रयोगों में उपयोग किए जाने वाले एलएलडीपीई एक एकल एकलक से नहीं बल्कि सी4 आधारित एलएलडीपीई और अन्य श्रेणियों जैसे आवेदकों द्वारा उत्पादित सी6 धातुसीन श्रेणी या अन्य भारतीय निर्माताओं द्वारा निर्मित सी8 आधारित एलएलडीपीई के संयोजन से निर्मित होते हैं। इसलिए, आवेदकों द्वारा निर्मित वस्तुएँ अन्य उत्पादकों द्वारा निर्यात उत्पादों के साथ प्रतिस्थापनीय हैं।
- xxiv. कोई साक्ष्य प्रदान नहीं किया गया है कि तुलनीय घरेलू श्रेणियाँ वाणिज्यिक रूप से गैर-प्रतिस्थापनीय हैं या मूल्य या लागत में भिन्न हैं। "समान वस्तु" की परिभाषा के अनुसार, वस्तुओं का समरूप होना आवश्यक नहीं है बल्कि समान विशेषताएँ होनी आवश्यक हैं। बोरौज की स्वामित्व प्रौद्योगिकी से निम्न गलन प्रवाह सूचकांक पर आधारित दावे अप्रासंगिक हैं, क्योंकि ऐसे उत्पाद और घरेलू वस्तुएँ एक ही ग्राहकों द्वारा विनिमेय रूप से उपयोग की जाती हैं।
- xxv. घरेलू उद्योग भारतीय मानक सीमा 908.4 से 940.4 किग्रा/घन मीटर के भीतर किसी भी घनत्व का एलएलडीपीई उत्पादित कर सकता है, जांच अवधि के दौरान आवेदकों ने 938 किग्रा/घन मीटर तक उत्पादन किया है और बिना किसी अतिरिक्त मशीनरी परिवर्तन के 940.4 किग्रा/घन मीटर तक पहुँचने में सक्षम हैं।
- xxvi. धातुसीन और गैर-धातुसीन श्रेणियों के बीच महत्वपूर्ण मूल्य अंतर मौजूद हैं। दोनों श्रेणियों को प्रारंभ में संबद्ध देशों से धातुसीन श्रेणियों के नगण्य आयातों के कारण पृथक नहीं किया गया था।

ख.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

6. 22 अगस्त 2025 की विचाराधीन उत्पाद/पीसीएन पद्धति अधिसूचना के माध्यम से स्पष्ट किया गया विचाराधीन उत्पाद निम्नानुसार है:

"वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद (इसके बाद "विचाराधीन उत्पाद" के रूप में संदर्भित) रैखिक निम्न-घनत्व पॉलीएथिलीन है, जिसका घनत्व 908.4 से 940.4 किलोग्राम/घन मीटर है (इसके बाद "संबद्ध वस्तुएँ" भी कहा जाएगा)।

एलएलडीपीई एथिलीन और अन्य एल्कीनों जैसे ब्यूटीन, हेक्सीन या ऑक्टीन का एक सहबहुलक है। इसके परिणामस्वरूप एक अनिवार्यतः रैखिक श्रृंखला व्यवस्था होती है, जिसमें सहबहुलक (यानी ब्यूटीन, हेक्सीन या ऑक्टीन) मुख्य कार्बन रीढ़ पर छोटी, नियमित श्रृंखलाएँ बनाते हैं। यह एक रंगहीन, गैर-ज्वलनशील, गैर-अभिक्रियाशील ठोस है जिसमें कोई गंध नहीं होती। यह मुख्यतः प्लास्टिक प्रसंस्करण उद्योग के लिए कच्चे माल के रूप में विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाने के लिए उपयोग किया जाता है जैसे पैकेजिंग फिल्म, प्रोफाइल, तार और केबल, बहिर्वेधन लेपन, घूर्णी ढाला उत्पाद, इंजेक्शन ढलाई के लिए उच्च-निम्न श्रेणियाँ, मास्टर बैच आदि।"

7. विचाराधीन उत्पाद अध्याय 39 "प्लास्टिक और इसके वस्तुएँ" के तहत एचएस कोड 3901 40 10 और 3901 10 10 के अंतर्गत वर्गीकृत है। सीमा शुल्क वर्गीकरण संकेतात्मक है और विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।
8. इसके अतिरिक्त, धातुसीन और गैर-धातुसीन श्रेणियों के बीच मूल्य अंतर को संबोधित करने के लिए, हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध पर निम्नलिखित पीसीएन अपनाए गए:

- क. **धातुसीन श्रेणियाँ:** धातुसीन उत्प्रेरक का उपयोग करके उत्पादित एलएलडीपीई श्रेणियाँ।
- ख. **गैर-धातुसीन श्रेणियाँ:** धातुसीन के अतिरिक्त अन्य उत्प्रेरकों का उपयोग करके उत्पादित पारंपरिक एलएलडीपीई श्रेणियाँ।

क्र.सं.	विवरण	श्रेणियाँ	कोड
1.	उत्प्रेरक के रूप में धातुसीन का उपयोग करके उत्पादित एलएलडीपीई श्रेणियाँ	धातुसीन श्रेणियाँ	एमपीजी
2.	धातुसीन के अतिरिक्त अन्य उत्प्रेरक का उपयोग करके उत्पादित पारंपरिक एलएलडीपीई श्रेणियाँ	गैर-धातुसीन श्रेणियाँ	एनएमजी

9. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा विचाराधीन उत्पाद और पीसीएन पद्धति पर किए गए तर्कों की सावधानीपूर्वक जांच की गई। यह ध्यान दिया जाता है कि दावे मुख्यतः कुछ श्रेणियों के बहिष्करण के लिए इस आधार पर किए गए हैं कि घरेलू उद्योग कथित रूप से उनका निर्माण नहीं कर रहा है या आवेदकों द्वारा उत्पादित श्रेणियाँ तकनीकी या वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं। दूसरी ओर घरेलू उद्योग ने अनुरोधों का खंडन किया है और दावा किया है कि उनके द्वारा निर्मित उत्पाद उन्हीं अंतिम उपयोगकर्ताओं द्वारा विनिमेय रूप से उपयोग किए जाते हैं। उन्होंने दावा किया है कि विभिन्न एकलकों के एलएलडीपीई को वांछित विशेषताओं को प्राप्त करने के लिए आयातित उत्पादों के रूप में एक साथ संयोजित किया जा सकता है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने प्रपत्र और तकनीकी आंकड़ा पत्रक प्रदान करके भारतीय बाजार में उनके द्वारा उत्पादित और बेची जा रही तुलनीय श्रेणियों का साक्ष्य प्रदान किया है।
10. **एलएलडीपीई के चूर्ण रूप का बहिष्करण:** चूर्ण श्रेणी एलएलडीपीई के बहिष्करण से संबंधित सैबिक की अनुरोधों के संबंध में, यह ध्यान दिया जाता है कि घरेलू उद्योग भी एलएलडीपीई का चूर्ण रूप निर्मित करता है। घरेलू उद्योग ने एलएलडीपीई के चूर्ण रूप के बिक्री प्रपत्रों के रूप में साक्ष्य प्रदान किया है। आगे यह नोट किया जाता है कि एलएलडीपीई का चूर्ण रूप मुख्यतः यौगिकीकरण प्रक्रियाओं के लिए मास्टरबैच निर्माताओं द्वारा उपयोग किया जाता है जिसमें योजक और रंग वर्णक पिघलाए जाते हैं और फिर एलएलडीपीई में मिलाए जाते हैं, और बाद में एलएलडीपीई छर्रे निर्मित किए जाते हैं। इस प्रकार, एक उपयोगकर्ता के पास या तो यौगिकीकरण प्रक्रिया स्वयं करने का विकल्प होता है या वही एलएलडीपीई निर्माताओं द्वारा किया जा सकता है जो ऐसे उपयोगकर्ता के लिए सीधे एलएलडीपीई छर्रे निर्मित करते हैं। तदनुसार, चूंकि घरेलू उद्योग एलएलडीपीई का चूर्ण रूप निर्मित कर रहा है और चूंकि एलएलडीपीई का छर्रा और चूर्ण रूप केवल एलएलडीपीई के दो रूप हैं, प्राधिकारी उत्पाद कार्यक्षेत्र से एलएलडीपीई के चूर्ण रूप के बहिष्करण की अनुमति न देने का निर्णय करते हैं।

11. **उच्च एल्फा ओलेफिन ("एचएओ") आधारित एलएलडीपीई का बहिष्करण:** सैबिक समूह और सदारा के उच्च एल्फा ओलेफिन, अर्थात् सी6 और सी8 आधारित एलएलडीपीई के बहिष्करण के अनुरोध के संबंध में, यह ध्यान दिया जाता है कि घरेलू उद्योग वास्तव में सी6 आधारित एलएलडीपीई का निर्माण कर रहा है। सी8 आधारित एलएलडीपीई के संबंध में, घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया है कि यद्यपि वह सी8 आधारित एलएलडीपीई का निर्माण नहीं करता, इसका उपयोग अन्य एलएलडीपीई एकलकों जैसे सी4 या सी6 के साथ संयोजन में किया जाता है और सी8 आधारित एलएलडीपीई द्वारा प्रदर्शित गुण सी4 और सी6 धातुसीन श्रेणियों के संयोजन से प्राप्त किए जा सकते हैं। यह ध्यान दिया जाता है कि किसी भी व्यक्तिगत उपयोगकर्ता ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है और उपयोगकर्ता संघ, अखिल भारतीय एचडीपीई/पीपी बुने कपड़े निर्माता संघ ने घरेलू उद्योग के इस दावे पर आपत्ति नहीं की है। आगे यह नोट किया जाता है कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने भी घरेलू उद्योग के इस दावे का खंडन करने के लिए कोई साक्ष्य प्रदान नहीं किया है।
12. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सैबिक समूह ने सी8 आधारित एलएलडीपीई के बहिष्करण का अनुरोध इस आधार पर भी किया है कि घरेलू उद्योग ऐसी श्रेणियों का वाणिज्यिक मात्रा में उत्पादन और बिक्री नहीं कर रहा है। जबकि घरेलू उद्योग सी8 आधारित एलएलडीपीई का निर्माण नहीं करता, वह सी4 और सी6 श्रेणियाँ निर्मित करता है जिनके बारे में उसने दावा किया है कि कुछ अनुपातों में संयोजित होने पर वे आयातित सी8 आधारित एलएलडीपीई के साथ तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। घरेलू उद्योग द्वारा उक्त दावे का अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा खंडन नहीं किया गया है। आवेदक संघ ने सी8 आधारित एलएलडीपीई के लिए प्रपत्र भी प्रस्तुत किए हैं जो रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड, वर्तमान जांच के समर्थक, द्वारा निर्मित और बेचा जा रहा है। समर्थक द्वारा सी8 आधारित एलएलडीपीई के उत्पादन के बावजूद, प्राधिकारी नोट करते हैं कि सी8 आधारित एलएलडीपीई के गुण सी4 और सी6 धातुसीन श्रेणियों के संयोजन से प्राप्त किए जा सकते हैं, और तदनुसार, उत्पाद कार्यक्षेत्र से सी8 आधारित एलएलडीपीई के बहिष्करण की अनुमति न देने का निर्णय करते हैं।
13. सदारा के इस तर्क के संबंध में कि भारत में सी6 आधारित एलएलडीपीई के लिए महत्वपूर्ण मांग आपूर्ति अंतराल मौजूद है और घरेलू उद्योग ने इस तर्क का खंडन नहीं किया है या श्रेणी वार उत्पादन या मांग आंकड़े प्रदान नहीं किए हैं, यह ध्यान दिया जाता है कि उत्पाद कार्यक्षेत्र से बहिष्करण का प्रश्न भारत में संबद्ध वस्तुओं की मांग पर निर्भर नहीं करता,

बल्कि इसका निर्णय इस आधार पर किया जाता है कि क्या घरेलू उद्योग भारत में आयात की जा रही वस्तुओं के समान वस्तु का उत्पादन और बिक्री कर रहा है।

14. **6821एनजे और 6318बीजे श्रेणियों का बहिष्करण:** सैबिक समूह के श्रेणियों 6821एनजे और 6318बीजे के बहिष्करण अनुरोध के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि स्वीकार्य रूप से ये श्रेणियाँ भारत को निर्यात नहीं की गई हैं। आगे यह नोट किया जाता है कि सैबिक समूह ने मुख्य रूप से इस आधार पर इन वस्तुओं के बहिष्करण का अनुरोध किया है कि सैबिक श्रेणियों में उच्चतर विदारण सामर्थ्य है। दूसरी ओर, घरेलू उद्योग ने उनके द्वारा बेची गई तुलनीय श्रेणियों का साक्ष्य प्रदान किया है। इस संबंध में, प्राधिकारी एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(घ) को याद करते हैं जो कहता है:

“समान वस्तु” से तात्पर्य ऐसी वस्तु है जो भारत में पाटित की जाने की जांचाधीन वस्तु के सभी पहलुओं में समरूप या समान है या ऐसी वस्तु की अनुपस्थिति में, कोई अन्य वस्तु जो यद्यपि सभी पहलुओं में समान नहीं है, फिर भी जांचाधीन वस्तुओं से मिलती-जुलती विशेषताएँ रखती है”

15. उपरोक्त परिभाषा से यह नोट किया जाता है कि दो उत्पादों को एक-दूसरे के समान वस्तु तब माना जा सकता है, न केवल जब वे सभी पहलुओं में समरूप या समान हों बल्कि तब भी जब ऐसी वस्तुओं में मिलती-जुलती विशेषताएँ हों। वर्तमान मामले में, सैबिक श्रेणियों और घरेलू रूप से उत्पादित तुलनीय श्रेणियों दोनों में उच्च विदारण सामर्थ्य है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि इन श्रेणियों का विदारण सामर्थ्य भिन्न है, ऐसा अंतर अपने आप में उत्पादों को एक-दूसरे के समान वस्तु नहीं बनाता। आगे यह नोट किया जाता है कि विदारण सामर्थ्य फिल्म की मोटाई पर भी निर्भर करता है। आगे यह नोट किया जाता है कि ये श्रेणियाँ भारत में आयात नहीं की गई हैं क्योंकि भारत में इन उत्पादों की मांग मौजूद नहीं है। तदनुसार, प्राधिकारी सैबिक श्रेणियों 6821एनजे और 6318बीजे को बाहर न करने का निर्णय करते हैं।

16. बोरस्टार श्रेणियों का बहिष्करण: द्विबहुलकीय बोरस्टार प्रौद्योगिकी के माध्यम से निर्मित बोरस्टार श्रेणियों (एफबी2230, एफबी1200 और एफबी1350) के बहिष्करण के संबंध में, एडीपीसीएल ने तर्क दिया है कि इन श्रेणियों में उच्च आणविक भार और निम्न गलन प्रवाह दर (0.25 ग्राम/10 मिनट से कम या बराबर) है और घरेलू उद्योग 1 ग्राम/10 मिनट से

कम गलन प्रवाह दर वाली संबद्ध वस्तुओं का निर्माण नहीं करता है। जैसा कि ऊपर कहा गया है, यह आवश्यक नहीं है कि दो उत्पाद सभी पहलुओं में समान हों। निम्न गलन प्रवाह सूचकांक के अलावा, एडीपीसीएल द्वारा निर्यात की गई संबद्ध वस्तुएँ और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुएँ मिलती-जुलती विशेषताएँ रखती हैं। तदनुसार, निम्न गलन प्रवाह सूचकांक को बहिष्करण का आधार नहीं माना जा सकता। आगे यह नोट किया जाता है कि प्रत्येक उत्पादक के पास ऐसी प्रौद्योगिकी के लाइसेंस पर निर्भर करते हुए उत्पादन प्रक्रिया में उपयोग की जाने वाली भिन्न उत्पादन प्रौद्योगिकी हो सकती है। तथापि, जब तक ऐसी उत्पादन प्रक्रिया विशिष्ट भौतिक/रासायनिक विशेषताओं की ओर ले जाने वाला कोई गुण प्रदान नहीं करती, उत्पादन प्रक्रिया में अंतर अपने आप में किसी उत्पाद के बहिष्करण का आधार नहीं बन सकता। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि एडीपीसीएल ने यह स्थापित करने वाला कोई साक्ष्य प्रदान नहीं किया है कि एडीपीसीएल द्वारा उत्पादित एलएलडीपीई और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एलएलडीपीई वाणिज्यिक या तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं।

17. प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि एडीपीसीएल ने अपने इस दावे को प्रमाणित करने के लिए कुछ घरेलू उपयोगकर्ताओं से पत्र प्रस्तुत किए हैं कि बोरस्टार श्रेणियों का एक विशिष्ट अंतिम उपयोग अनुप्रयोग है और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुएँ तकनीकी रूप से उसका प्रतिस्थापन नहीं कर सकतीं। यह ध्यान दिया जाता है कि इनमें से किसी भी उपयोगकर्ता ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है। उनके द्वारा प्रदान किए गए पत्रों में सामान्य सूचना और समान वाक्य और शब्दावली है। आगे यह नोट किया जाता है कि ये सभी पत्र विशेष रूप से पारंपरिक सी4 आधारित एलएलडीपीई के साथ तुलना पर भरोसा करते हैं और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और आपूर्ति किए गए अन्य एलएलडीपीई की गुणवत्ता या विशेषताओं को संबोधित नहीं करते। जबकि, एडीपीसीएल द्वारा अपनी अनुरोधों के भाग के रूप में प्रदान किया गया प्रदर्श 3 धातुसीन और गैर-धातुसीन आधारित एलएलडीपीई दोनों के लिए ऐसी विशेषताओं का उल्लेख करता है न कि केवल पारंपरिक एलएलडीपीई के लिए। तदनुसार, प्राधिकारी एडीपीसीएल के दावे से असहमत हैं और बोरस्टार श्रेणियों को बाहर न करने का निर्णय करते हैं।
18. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं और संबद्ध देशों से आयातित वस्तुओं के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएँ और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तुएँ भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और

प्रौद्योगिकी, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशों, वितरण और विपणन, वस्तुओं के वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के संदर्भ में तुलनीय हैं। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि भारत में आयात की जा रही संबद्ध वस्तुएँ घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं के समरूप हैं। पाटित किए गए आयातों और आवेदकों द्वारा निर्मित वस्तुओं की तकनीकी विशिष्टताओं, गुणवत्ता, कार्यों या अंतिम-उपयोगों में कोई अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुएँ और आयातित वस्तुएँ तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं और तदनुसार, प्राधिकारी एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(घ) के तहत इन उत्पादों को 'समान वस्तु' मानने का विचार करते हैं।

ग. घरेलू उद्योग का कार्यक्षेत्र और स्थिति

ग.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

19. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- i. याचिका में नियम 2(ख) और एडी समझौते के अनुच्छेद 5.2 के तहत अपेक्षित जांच शुरू करने के प्रयोजन के लिए क्षति का अपर्याप्त साक्ष्य है और तदनुसार इसे शुरू नहीं किया जाना चाहिए था।
- ii. आवेदक ने कुल घरेलू उत्पादन के लिए वास्तविक आंकड़ों पर नहीं बल्कि अनुमानित आंकड़ों पर भरोसा किया है। यदि वास्तविक आंकड़ों पर विचार किया जाए, तो आवेदक स्थिति आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं हो सकता है।
- iii. ओएनजीसी पेट्रो एडिशनल्स लिमिटेड ("ओपीएएल") को जांच अवधि के दौरान एक विशेष आर्थिक क्षेत्र ("एसईजेड") इकाई होने के आधार पर बाहर रखने के कारण आवेदक की स्थिति दूषित है। एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) या नियम 5 में केवल एसईजेड इकाई होने के आधार पर किसी उत्पादक को बाहर रखना अनिवार्य नहीं है। यदि ओपीएएल को एक पात्र घरेलू उत्पादक के रूप में शामिल किया जाता है, तो एचपीएल और एचएमईएल नियम 5(3) की आवश्यकता को पूरा नहीं करेंगे।
- iv. ओपीएएल का कुल घरेलू उत्पादन से बहिष्करण पर्याप्त औचित्य के बिना है क्योंकि यह 08 मार्च, 2025 को एसईजेड से बाहर हो गया था, और आवेदक द्वारा आवेदन दाखिल करने के समय घरेलू शुल्क क्षेत्र का हिस्सा था।
- v. चाहे ओपीएएल एसईजेड में कार्य कर रहा था या नहीं, इसके उत्पादन को कुल घरेलू उत्पादन में शामिल किया जाना चाहिए क्योंकि यह भारत में स्थापित है और जांच

- अवधि के दौरान इसने अपना लगभग 85-90% एलएलडीपीई भारतीय घरेलू बाजार में बेचा।
- vi. ओपीएल का बहिष्करण कृत्रिम रूप से कुल पात्र उत्पादन को कम करता है और इस प्रकार, कुल घरेलू उत्पादन में एचपीएल और एचएमईएल के हिस्से को बढ़ाता है।
 - vii. ओपीएल की वार्षिक रिपोर्ट में प्रदान की गई सूचना के आधार पर, यदि ओपीएल का उत्पादन शामिल किया जाता है, तो एचपीएल और एचएमईएल का हिस्सा एडी नियमावली, 1995 के नियम 5(3) के तहत निर्धारित 25% की सीमा से नीचे गिर जाएगा। तदनुसार, एडी नियमावली, 1995 के नियम 5(3) की पूर्ति के संबंध में किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले, प्राधिकारी को सभी प्रासंगिक घरेलू उत्पादकों के उत्पादन और बिक्री की मात्रा का सत्यापन करना चाहिए।
 - viii. ओपीएल को उसकी एसईजेड स्थिति के आधार पर बाहर करने का प्रयास करके, आवेदक प्रभावी रूप से इस आर्थिक वास्तविकता की अवहेलना करता है कि ओपीएल भारत में स्थापित एक उत्पादक है जो घरेलू बाजार में विचाराधीन उत्पाद का पर्याप्त उत्पादन और बिक्री करता है।
 - ix. प्राधिकारी ने पिछली जांचों (विद्युत इन्सुलेटर और सौर सेल) में एसईजेड इकाइयों को घरेलू उद्योग का हिस्सा बनने के योग्य माना है।
 - x. यह दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय प्रथा के भी अनुरूप है। यूएसआईटीसी ने बड़े आवासीय वाशर में क्षति निर्धारण के संदर्भ में विदेशी व्यापार क्षेत्रों में उत्पादन को घरेलू उत्पादन माना। इसी प्रकार, यूएसआईटीसी ने जापान से माइक्रोवेव ओवन में मुक्त व्यापार क्षेत्र में उत्पादित वस्तुओं को घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुएँ माना। जबकि ये निष्कर्ष क्षति विश्लेषण के संदर्भ में निर्धारित किए गए थे न कि स्थिति के, अंतर्निहित सिद्धांत समान बने रहते हैं।
 - xi. यूरोपीय आयोग सामान्यतः स्थिति के निर्धारण और घरेलू उद्योग की परिभाषा के लिए मुक्त क्षेत्रों में कार्यरत उत्पादकों को घरेलू उत्पादक मानता है। मुक्त क्षेत्र संघ सीमा शुल्क संहिता के अनुच्छेद 243(1) के अनुसरण में यूरोपीय संघ के राज्यक्षेत्र का भाग हैं।
 - xii. एसईजेड ढांचा घरेलू शुल्क क्षेत्र बिक्री पर रोक नहीं लगाता। एसईजेड में कार्यरत इकाइयों को लागू शर्तों, जिनमें शुल्क और समग्र निवल विदेशी मुद्रा ("एनएफई") आवश्यकताएँ शामिल हैं, के अधीन घरेलू बाजार में वस्तुओं की आपूर्ति करने की अनुमति है। महत्वपूर्ण रूप से, सकारात्मक एनएफई बनाए रखने की आवश्यकता इकाई के समग्र परिचालन निष्पादन से संबंधित है और घरेलू बिक्री के तथ्य को

- नकारती या प्रतिबंधित नहीं करती। तदनुसार, केवल यह तथ्य कि कोई उत्पादक एसईजेड के भीतर कार्य करता है, उसे घरेलू उद्योग से बाहर करने का आधार नहीं हो सकता जहाँ वह घरेलू बाजार में पर्याप्त बिक्री करता है।
- xiii. चूंकि एचपीएल और एचएमईएल घरेलू उद्योग के प्रतिनिधि नहीं हैं और कुल भारतीय उत्पादन का 25% भी नहीं हैं (यदि ओपीएल उत्पादन शामिल किया जाए), प्राधिकारी को याचिका अस्वीकार कर देनी चाहिए थी।
- xiv. एचपीएल और एचएमईएल का घरेलू बिक्री (ओपीएल को छोड़कर) में 26.33% हिस्सा है, जबकि स्वयं ओपीएल की महत्वपूर्ण उत्पादन क्षमता है, जो इंगित करता है कि इसका समावेश स्थिति विश्लेषण को भौतिक रूप से बदल देगा।
- xv. भारतीय एलएलडीपीई उद्योग खंडित नहीं है और इसलिए, 25-35% का हिस्सा प्रमुख अनुपात माने जाने के लिए स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा, ऐसा अनुपात स्वतः प्रमुख अनुपात की आवश्यकता को संतुष्ट नहीं करता। अधिक जानकारी प्राप्त करने में कोई व्यावहारिक कठिनाई नहीं है, और इसलिए, आवेदन को अस्वीकार किया जाना चाहिए।
- xvi. एचपीएल और एचएमईएल की स्थिति अपीलीय निकाय द्वारा ईसी - फास्टनर में निर्धारित मानक से काफी नीचे आती है, विशेष रूप से जब ओपीएल के साथ-साथ अन्य घरेलू उत्पादकों के उत्पादन को ध्यान में रखा जाए। इसके अलावा, यदि अन्य भारतीय उत्पादकों के आंकड़ों पर विचार किया जाए, तो क्षति मापदंडों में महत्वपूर्ण परिवर्तन होगा।
- xvii. यदि प्राधिकारी घरेलू उद्योग की प्रस्तावित परिभाषा को उत्पादकों के सीमित उपसमुच्चय के रूप में स्वीकार करता है, तो वह प्रासंगिक भारतीय उद्योग के 20% से कम के एक अल्प और स्व-चयनित अनुपात के विरुद्ध क्षति का आकलन करेगा, जिससे विरूपण का भौतिक जोखिम उत्पन्न होगा और क्षति विश्लेषण तिरछा हो जाएगा, विशेष रूप से विचाराधीन उत्पाद के अन्य प्रमुख उत्पादकों के पास उत्पादन के बहुत बड़े हिस्से को देखते हुए।
- xviii. घरेलू उद्योग के उत्पादन का हिस्सा "कुल घरेलू उत्पादन का पर्याप्त प्रतिबिंब" होना चाहिए ताकि "घरेलू उद्योग" की परिभाषा क्षति निर्धारण को तिरछा या विकृत न करे।
- xix. पाटन रोधी शुल्क का उद्देश्य और लक्ष्य समग्र रूप से घरेलू उद्योग या उन उत्पादकों की रक्षा करना है जो भारतीय उत्पादन में अपने पर्याप्त/प्रमुख हिस्से के

- कारण घरेलू उद्योग के प्रतिनिधि हैं। पाटन रोधी शुल्क चुनिंदा कंपनियों के हितों की रक्षा के लिए नहीं लगाया जा सकता।
- xx. प्राधिकारी ने उचित रूप से यह निर्धारित करने में विफल रहा है कि आवेदन एडी नियमों के नियम 5(3) के तहत अपेक्षित "घरेलू उद्योग द्वारा या उसकी ओर से" दायर किया गया है।
- xxi. ईसी - फास्टनर में अपीलीय निकाय ने इस बात पर जोर दिया कि "एक प्रमुख अनुपात" को समग्र रूप से सभी उत्पादकों के प्रकाश में मूल्यांकित कुल घरेलू उत्पादन के अपेक्षाकृत उच्च और वास्तविक रूप से प्रतिनिधि हिस्से का प्रतिनिधित्व करना चाहिए। इसने ईयू के 27% और यहाँ तक कि 36% जैसे निम्न हिस्सों पर भरोसा करने को अस्वीकार कर दिया, यह निर्णय देते हुए कि ऐसे स्तर (विशेष रूप से जब स्व-चयनित या गैर-प्रतिनिधि नमूने से प्राप्त हों) मानक को पूरा नहीं करते और क्षति विश्लेषण को विकृत करते हैं।
- xxii. आवेदक एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के तहत प्रमुख अनुपात की पृथक आवश्यकता को संतुष्ट नहीं करते। एडी नियमावली, 1995 के नियम 5(3) के तहत आवेदन करने के लिए न्यूनतम सीमा को नियम 2(ख) तक विस्तारित नहीं किया जा सकता।
- xxiii. नियम 2(ख) में "प्रमुख अनुपात" की आवश्यकता नियम 5(3) के तहत 25% की सीमा से भिन्न और अतिरिक्त है। यदि प्रत्येक मामले में 25-30% के न्यूनतम हिस्से को पर्याप्त मान लिया जाए, तो नियम 2(ख) में पृथक आवश्यकता निरर्थक हो जाती है।
- xxiv. संचालन प्रथाओं की नियमावली का पैरा 4.9.11(iii) एक पूर्ण नियम नहीं बनाता कि प्रत्येक उत्पादक या उत्पादकों का समूह जो केवल 25% की न्यूनतम सीमा को पार करता है, उसे कुल घरेलू उत्पादन का "प्रमुख अनुपात" माना जाना चाहिए।
- xxv. ईसी - फास्टनर में विश्व व्यापार संगठन अपीलीय निकाय ने एडी समझौते के अनुच्छेद 5.4 के तहत स्थिति का पता लगाने के प्रयोजनों के लिए 25% की सीमा आवश्यकता को "प्रमुख अनुपात" की आवश्यकता के साथ समान करने को अस्वीकार कर दिया और इसे एडी समझौते के अनुच्छेद 4.1 के तहत "घरेलू उद्योग" का पता लगाने के लिए अप्रासंगिक माना।
- xxvi. अपीलीय निकाय ने समझाया कि "एक प्रमुख अनुपात" को समग्र रूप से घरेलू उत्पादकों के कुल उत्पादन के संदर्भ में परिभाषित अनुपात के रूप में समझा जाना

- चाहिए। ऐसे कुल उत्पादन का "एक प्रमुख अनुपात" मानक रूप से कुल घरेलू उत्पादन का पर्याप्त प्रतिबिंब होगा।
- xxvii. वास्तव में, अनुपात जितना कम होगा, एक जांच प्राधिकारी को यह सुनिश्चित करने के लिए उतना ही अधिक संवेदनशील होना होगा कि उपयोग किया गया अनुपात समग्र रूप से उत्पादकों के कुल उत्पादन को पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित करता है।
- xxviii. जबकि "प्रमुख अनुपात" क्या है इसके लिए कोई कठोर संख्यात्मक सीमा नहीं है, इस वाक्यांश को कुल घरेलू उत्पादन के "महत्वपूर्ण, गंभीर या सार्थक" अनुपात को इंगित करने के लिए समझा गया है। इस प्रकार, कुल उत्पादन का हिस्सा "कुल घरेलू उत्पादन का पर्याप्त प्रतिबिंब" होना चाहिए ताकि "घरेलू उद्योग" की परिभाषा क्षति निर्धारण को तिरछा या विकृत न करे।
- xxix. ईसी - फास्टनर (चीन) (अनुच्छेद 21.5) में अपीलीय निकाय ने निर्णय दिया कि कुल घरेलू उत्पादन का 36% का अनुपात भी, खंडित फास्टनर उद्योग के संदर्भ में, निम्न बना रहता है।
- xxx. प्राधिकारी को आगे बढ़ने से पहले जांच अवधि के लिए सभी प्रमुख घरेलू उत्पादकों से पूर्ण और सत्यापित आंकड़े मंगाने चाहिए। आवेदक का दावा उद्योग के एक सीमित खंड पर आधारित है, जबकि भारत की कुल क्षमता के पर्याप्त हिस्से वाले उत्पादकों ने क्षति के किसी आरोप का समर्थन नहीं किया है।
- xxxi. रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा प्रदान की गई सूचना अपर्याप्त है क्योंकि यह 29 जुलाई, 2021 की व्यापार सूचना संख्या 05/2021 में निर्धारित आवश्यकताओं का अनुपालन नहीं करती।
- xxxii. रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड अपनी स्थापित क्षमता, घरेलू और निर्यात बिक्री के लिए दस्तावेजी साक्ष्य प्रदान करने में विफल रहा है और तदनुसार, इसका सत्यापन नहीं किया जा सकता। भले ही बाद में साक्ष्य प्रदान किया गया हो, जांच शुरू करने के चरण में सूचना अपर्याप्त बनी रहती है और इसे अस्वीकार किया जाना चाहिए।
- xxxiii. रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड का आंकड़ा अपर्याप्त और डुप्लिकेट प्रविष्टियों के साथ असंगत है, जो इसे अविश्वसनीय बनाता है।
- xxxiv. अद्यतन समर्थन पत्र का बाद में दाखिल किया जाना मूलभूत दोष को ठीक नहीं कर सकता। आवेदक ने परिवर्तनों का पारदर्शी रूप से खुलासा नहीं किया।
- xxxv. आवेदक ने अपने आवरण पत्र में रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के समर्थन पत्र में किए गए परिवर्तनों की स्पष्ट रूप से पहचान नहीं की।

- xxxvi. याचिका में दावा किया गया है कि एलएलडीपीई के अन्य भारतीय उत्पादकों ने आवेदन का समर्थन किया है, तथापि, इनमें से किसी भी उत्पादक ने व्यापार सूचना 05/2021 के अनुसार समर्थन पत्र दाखिल नहीं किया है।
- xxxvii. प्राधिकारी को याचिका में उल्लिखित विचाराधीन उत्पाद के अन्य स्थापित भारतीय उत्पादकों, अर्थात् रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड, आईओसीएल, गेल, बीसीपीएल और ओपीएएल से क्षति और लागत आंकड़े मंगाने चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी क्षति आकलन समग्र रूप से घरेलू उद्योग का प्रतिनिधि हो और इस मामले में केवल एचएमईएल जैसे कुछ उत्पादकों को शामिल करने से तिरछा न हो।
- xxxviii. अन्य स्थापित खिलाड़ियों की भागीदारी के अभाव में, प्राधिकारी यह आकलन नहीं कर सकता कि ऐसे खिलाड़ी लाभ कमा रहे हैं या हानि उठा रहे हैं। प्राधिकारी को रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड से कम से कम उनकी लाभप्रदता के आंकड़े प्रदान करने के लिए कहना चाहिए।
- xxxix. प्राधिकारी ने पिछली जांचों जैसे 6मिमी और उससे अधिक मोटाई वाले सादे मध्यम घनत्व फाइबर बोर्ड (एमडीएफ) में विचाराधीन उत्पाद से संबंधित किसी अन्य उत्पादक से क्षति और लागत संबंधी आंकड़े मंगाए थे।
- xl. भारत के सबसे बड़े उत्पादकों से किसी भी सूचना की अनुपस्थिति का केवल यही अर्थ लगाया जा सकता है कि वे संबद्ध आयातों के कारण किसी क्षति का सामना नहीं कर रहे हैं, और उनकी गैर-भागीदारी का तात्पर्य है कि वे क्षति नहीं झेल रहे हैं।
- xli. रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड और आईओसीएल व्यापार उपचारात्मक उपायों के नियमित उपयोगकर्ता हैं। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड, आईओसीएल, गेल, बीसीपीएल और ओपीएएल के सहयोग के अभाव में, प्राधिकारी को यह मानना चाहिए कि एलएलडीपीई के ये घरेलू उत्पादक पाटन रोधी उपाय लगाए जाने के विरोधी हैं।

ग.2 घरेलू उद्योग के विचार

20. घरेलू उद्योग की ओर से निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:
- वर्तमान जांच के लिए क्षति की जानकारी एचपीएल और एचएमईएल द्वारा प्रदान की गई है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, सह-आवेदकों के अलावा, एलएलडीपीई के 5 अन्य उत्पादक हैं, यथा, रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड, ब्रह्मपुत्र क्रैकर एंड पॉलीमर लिमिटेड और ओएनजीसी-पेट्रो एडिशनल्स लिमिटेड। यह ध्यान दिया जा सकता है कि जांच अवधि

- और क्षति अवधि के दौरान, ओएनजीसी-पेट्रो एडिशनल्स लिमिटेड एक विशेष आर्थिक क्षेत्र इकाई के रूप में कार्यरत था और इसलिए इसे घरेलू उद्योग नहीं माना जा सकता था।
- ii. डीजीटीआर की संचालन प्रथाओं की नियमावली के पैरा 4.19.21 और 4.19.23, स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करते हैं कि एसईजेड में स्थित इकाइयों को "घरेलू उद्योग नहीं माना जाएगा" और "देश के कुल उत्पादन का अनुमान लगाते समय एसईजेड के उत्पादन को शामिल नहीं किया जाना चाहिए"।
 - iii. प्राधिकारी ने कई हाल के मामलों जैसे सौर सेल, औद्योगिक लेजर मशीनों में एसईजेड आधारित इकाइयों को अपात्र घरेलू उत्पादक माना है और एसईजेड आधारित उत्पादकों की बिक्री को भारत में आयात माना है।
 - iv. एचपीएल और एचएमईएल का भारत में कुल एलएलडीपीई उत्पादन का लगभग 25%-35% हिस्सा है। इस प्रकार, एचपीएल और एचएमईएल का उत्पादन एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के अनुसार भारत में कुल घरेलू उत्पादन का "प्रमुख अनुपात" है। आवेदक प्रस्तुत करते हैं कि कुल पात्र घरेलू उत्पादन के 25% से अधिक उत्पादन को "प्रमुख अनुपात" मानना प्राधिकारी की प्रथा है। इस संबंध में, आवेदक प्रमुख अनुपात के परीक्षण से संबंधित डीजीटीआर की मानक संचालन प्रथाओं की नियमावली के पैरा 4.9.11 (iii) में दी गई व्याख्या पर भरोसा करते हैं।
 - v. जैसा कि अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा स्वीकार किया गया, ओपीएएल 08 मार्च, 2025 को, जांच अवधि की समाप्ति के 2 महीने बाद, एसईजेड से बाहर हुआ। इस प्रकार, ओपीएएल का घरेलू शुल्क क्षेत्र में प्रवेश जांच अवधि के पश्चात पूर्ण हुआ।
 - vi. यह प्राधिकारी की सुसंगत प्रथा है कि जांच अवधि के दौरान किए गए उत्पादन के आधार पर कुल पात्र घरेलू उत्पादन का आकलन किया जाए, ठीक वैसे ही जैसे पाटन और क्षति जांच अवधि पश्चात के तथ्य पर आधारित नहीं होते।
 - vii. ईसी - फास्टनर में, यूरोपीय आयोग ने यूरोपीय संघ में लगभग 318 ज्ञात उत्पादकों को प्रश्नावली जारी की थी, जिनमें से केवल 70 उत्पादकों ने उत्तर दिया। इन 70 उत्पादकों में से, आयोग ने 25 उत्पादकों की प्रतिक्रियाओं को इस आधार पर अस्वीकार कर दिया कि वे पर्याप्त सूचना प्रदान करने में विफल रहे थे।
 - viii. इसलिए, आयोग ने अंततः शेष 45 उत्पादकों के आधार पर परिभाषित किया, जिससे घरेलू उद्योग का कार्यक्षेत्र केवल उन उत्पादकों तक सीमित हो गया जो नमूने में शामिल होने के इच्छुक थे और कुछ ऐसे उत्पादकों को बाहर कर दिया जिन्होंने

- अन्यथा प्रासंगिक सूचना प्रदान की थी, इस प्रकार क्षति विश्लेषण में भौतिक विरूपण का जोखिम उत्पन्न हुआ।
- ix. इसके अलावा, यूरोपीय आयोग ने संबद्ध वस्तुओं के कुल संघ उत्पादन के केवल 17.6% का प्रतिनिधित्व करने वाले 6 घरेलू उत्पादकों का एक नमूना चुना। इससे क्षति विश्लेषण के लिए उपलब्ध आंकड़ा कवरेज काफी सीमित हो गया।
 - x. इस प्रकार, ईसी - फास्टनर का निर्णय ऐसी स्थिति में दिया गया जहाँ प्रासंगिक उत्पादकों को पद्धतिगत रूप से बाहर रखा गया था और नमूना कुल उत्पादन के केवल सीमित अनुपात का प्रतिनिधित्व करता था।
 - xi. ईसी - फास्टनर में अपीलीय निकाय ने न्यूनतम सीमा प्रदान करने से परहेज किया लेकिन मुख्य रूप से इस आधार पर आगे बढ़ा कि जांच प्राधिकारियों को स्व-चयन प्रक्रिया के माध्यम से घरेलू उत्पादकों को बाहर नहीं करना चाहिए, जिससे आंकड़ा कवरेज कम होगा और जिससे क्षति विश्लेषण में विरूपण का भौतिक जोखिम उत्पन्न होगा।
 - xii. यह प्रस्तुत किया जाता है कि न तो विश्व व्यापार संगठन का पाटन रोधी समझौता और न ही भारतीय नगरपालिका कानून "प्रमुख अनुपात" निर्धारित करने के लिए कोई सीमा प्रदान करते हैं।
 - xiii. ईसी-फास्टनर के तथ्यों के विपरीत, जहाँ नमूना चयनित घरेलू उत्पादक कुल घरेलू उत्पादन का केवल 17.6% थे, वर्तमान जांच में, एचपीएल और एचएमईएल का भारत में कुल एलएलडीपीई उत्पादन का लगभग 25-35% हिस्सा है।
 - xiv. प्राधिकारी ने प्रथा के रूप में, जैसा कि डीजीटीआर की मानक संचालन प्रथाओं की नियमावली के पैरा 4.9.11 (iii) में समझाया गया है, एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के अनुसार 25% से अधिक उत्पादन को "प्रमुख अनुपात" माना है।
 - xv. एलएलडीपीई के 3 सबसे बड़े उत्पादक, जो भारतीय एलएलडीपीई उत्पादन का 50% से अधिक हिस्सा रखते हैं, ने भाग लिया है और समष्टि आर्थिक और मूल्य आंकड़े प्रस्तुत किए हैं।
 - xvi. आवेदकों ने अन्य भारतीय उत्पादकों के लिए अनुमानित बिक्री और मात्रात्मक मापदंड भी प्रदान किए हैं। तदनुसार, वर्तमान जांच में "क्षति निर्धारण को विकृत करने का भौतिक जोखिम उत्पन्न करने" का प्रश्न नहीं उठता।
 - xvii. आवेदन को रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा आगे समर्थन प्राप्त हुआ है, जिसने लागू व्यापार सूचनाओं के तहत आवश्यक समर्थक आंकड़े प्रदान किए हैं।

- xviii. सीईएसटीएटी ने लुब्रिजोल (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड बनाम प्राधिकारी 2005 (7) टीएमआई 132 में, "प्रमुख अनुपात" शब्द की व्याख्या करते हुए कुल घरेलू उत्पादन के 31% के उत्पादन को प्रमुख अनुपात माना। इसने आगे कहा कि "कुल घरेलू उत्पादन के प्रमुख अनुपात" को तुलनात्मक माप या संपूर्ण के विभिन्न भागों के आकार को शामिल करने वाले गणितीय योग को हल करने के कोण से नहीं देखा जा सकता।"
- xix. प्राधिकारी ने अपने कई पिछले निष्कर्षों (13.08.2025 दिनांकित मिश्रधातु या गैर-मिश्रधातु इस्पात के तप्त वेल्लित फ्लैट उत्पाद) में "प्रमुख अनुपात" की व्याख्या कुल घरेलू उत्पादन के 50% से अधिक उत्पादन के रूप में करने से इनकार किया है और इसे महत्वपूर्ण अनुपात के रूप में अर्थ लगाया है।
- xx. प्राधिकारी ने कई जांचों में कुल घरेलू उत्पादन के 25-35% प्रतिशत वाले घरेलू उत्पादकों को एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग माना है। पीवीसी निलंबन श्रेणी रेजिन (सूर्यास्त समीक्षा) में, प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तुओं के कुल उत्पादन का 30% रखने वाले उत्पादकों को प्रमुख अनुपात माना था।
- xxi. घरेलू उद्योग प्रस्तुत करता है कि उसे अन्य घरेलू उत्पादकों से आंकड़े मंगाने पर कोई आपत्ति या हिचक नहीं है। तथापि, ऐसे उत्पादकों की वर्तमान जांच में गैर-भागीदारी प्राधिकारी के समक्ष घरेलू उद्योग को राहत देने से इनकार करने का आधार नहीं बननी चाहिए।
- xxii. प्राधिकारी जांच प्रक्रिया के भाग के रूप में सभी उत्पादकों से आंकड़े मंगाते हैं। तथापि, रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड को छोड़कर किसी अन्य घरेलू उत्पादक ने जांच में भाग नहीं लिया है।
- xxiii. रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के समर्थन पत्र का गोपनीय संस्करण जांच शुरू करने के चरण से पहले आवेदन के साथ अभिलेख पर दाखिल किया गया था जिसमें माप की सभी इकाइयाँ और बिक्री का विवरण लागू व्यापार सूचनाओं के अनुसार ऐसे पत्र में स्पष्ट रूप से पहचाना गया था।
- xxiv. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा आग्रह किए गए तथ्यों के विपरीत रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के गोपनीय समर्थन पत्र में कोई अद्यतन नहीं किया गया है।
- xxv. घरेलू उद्योग एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के अनुसार प्रमुख अनुपात का गठन करता है और इसलिए, अन्य घरेलू उत्पादकों की गैर-भागीदारी प्राधिकारी को अपने समक्ष घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच करने से नहीं रोकती।

xxvi. आवेदन सीपीएमए द्वारा भारतीय एलएलडीपीई उत्पादकों की ओर से दायर किया गया है। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड पहले ही प्राधिकारी के पास अपना समर्थन पत्र दाखिल कर चुका है। इसके अलावा, सीपीएमए के अन्य सदस्यों, आईओसीएल और गेल ने भी संबद्ध देशों के विरुद्ध उपयुक्त व्यापार उपचारात्मक कार्यवाहियाँ चलाने के प्रस्ताव का समर्थन किया। इस प्रकार, भारतीय एलएलडीपीई उत्पादकों ने क्षति के आरोप का समर्थन किया है। इसके अलावा, जांच शुरू होने के बाद किसी भी घरेलू उत्पादक की ओर से कोई विरोध नहीं हुआ है।

ग.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

21. एडी नियमावली, 1995 का नियम 2(ख) घरेलू उद्योग को नीचे बताए अनुसार परिभाषित करता है:

'घरेलू उद्योग' से तात्पर्य समान वस्तु के निर्माण और उससे जुड़ी किसी गतिविधि में लगे समग्र रूप से घरेलू उत्पादक या वे जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का प्रमुख अनुपात है, सिवाय इसके जब ऐसे उत्पादक कथित पाटित की गई वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित हों या स्वयं उसके आयातक हों, ऐसी स्थिति में 'घरेलू उद्योग' शब्द का अर्थ शेष उत्पादकों के रूप में लगाया जा सकता है।'

22. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदन सीपीएमए द्वारा भारतीय एलएलडीपीई उद्योग की ओर से दायर किया गया है। अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने घरेलू उद्योग की स्थिति के संबंध में निम्नलिखित चिंताएँ उठाई हैं:

क. ओपीएल को कुल पात्र घरेलू उत्पादन के कार्यक्षेत्र में शामिल किया जाना चाहिए था

ख. हल्दिया पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड और एचपीसीएल-मित्तल एनर्जी लिमिटेड घरेलू उद्योग के प्रमुख अनुपात का प्रतिनिधित्व नहीं करते

क. ओपीएल को कुल पात्र घरेलू उत्पादन के कार्यक्षेत्र में शामिल किया जाना चाहिए था

23. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि ओपीएएल, एसईजेड इकाई होने के बावजूद, भारत में स्थित एक एलएलडीपीई उत्पादक है और तदनुसार, घरेलू उद्योग ने अपने आवेदन में ओपीएएल को कुल पात्र घरेलू उत्पादन की गणना से गलत तरीके से बाहर रखा है। उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि अन्य अधिकारिताएँ मुक्त व्यापार क्षेत्र में स्थित उत्पादकों को कुल पात्र घरेलू उत्पादन के कार्यक्षेत्र में मानती हैं। इसके अलावा, यह दावा किया गया है कि यदि ओपीएएल को कुल पात्र घरेलू उत्पादन के कार्यक्षेत्र में शामिल किया जाता है, तो एचपीएल और एचएमईएल का उत्पादन एडी नियमावली, 1995 के नियम 5(3) के तहत आवेदक के रूप में योग्य होने के लिए पर्याप्त नहीं होगा।
24. इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि एसईजेड अधिनियम, 2005 की योजना स्पष्ट रूप से स्थापित करती है कि एसईजेड इकाइयाँ प्राधिकृत प्रचालनों के लिए भारत के सीमा शुल्क राज्यक्षेत्र के बाहर के राज्यक्षेत्र मानी जाती हैं और मूलतः निर्यात-उन्मुख संस्थाएँ हैं। प्राधिकारी पहले ही पूर्व कार्यवाहियों में इस मुद्दे की विस्तार से जांच कर चुके हैं और यह मान्यता दी है कि एसईजेड इकाइयाँ घरेलू शुल्क क्षेत्र ("डीटीए") में कार्यरत उत्पादकों की तुलना में एक भिन्न कानूनी और आर्थिक आधार पर खड़ी हैं।
25. इसके अलावा, प्राधिकारी एसईजेड अधिनियम की धारा 53 को याद करते हैं जो स्पष्ट रूप से प्रावधान करती है कि किसी एसईजेड को प्राधिकृत प्रचालन करने के प्रयोजनों के लिए भारत के सीमा शुल्क राज्यक्षेत्र के बाहर का राज्यक्षेत्र माना जाएगा। इसके अलावा, एसईजेड अधिनियम की धारा 2(i) एसईजेड क्षेत्रों को "घरेलू शुल्क क्षेत्र" की परिभाषा से बाहर करती है। डीटीए इकाइयों से एसईजेड इकाइयों को आपूर्ति "निर्यात" मानी जाती है, और एसईजेड इकाइयों से डीटीए इकाइयों को वस्तुओं की आपूर्ति पर एसईजेड अधिनियम की धारा 30 के तहत सीमा शुल्क, जिसमें पाटन रोधी शुल्क, प्रतिकारी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क शामिल हैं, लगते हैं। इसलिए कानूनी ढांचा जानबूझकर एसईजेड इकाइयों और डीटीए उत्पादकों के बीच एक आर्थिक और सीमा शुल्क भेद उत्पन्न करता है।
26. यह भी उल्लेखनीय है कि विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम, 2005 की धारा 53 के अनुसार, विशेष आर्थिक क्षेत्र भारत के सीमा-शुल्क क्षेत्र से बाहर है, यद्यपि वह भारत की भौगोलिक सीमा के भीतर स्थित है। उपर्युक्त के आलोक में, बिना इसे स्वीकार किए, केवल तर्क यह मान भी लिया जाए कि विशेष आर्थिक क्षेत्र में स्थित उत्पादन इकाई ओपीएएल के उत्पादन को कुल भारतीय उत्पादन की गणना में शामिल किया जाना चाहिए, तब भी आवेदन का

समर्थन करने वाले घरेलू उत्पादकों का संयुक्त उत्पादन, आवेदन का समर्थन करने वाले घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद के कुल उत्पादन का ***% है। इसके अतिरिक्त, किसी भी घरेलू उत्पादक ने आवेदन का विरोध नहीं किया है।

27. प्राधिकारी नोट करते हैं कि एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के तहत घरेलू उद्योग की परिभाषा की व्याख्या एसईजेड अधिनियम, 2005 और एसईजेड प्रचालनों को शासित करने वाले सीमा शुल्क ढांचे के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से की जानी चाहिए। केवल इसलिए कि कोई संस्था भारत में निगमित है या भारत में भौतिक रूप से वस्तुओं का निर्माण करती है, वह व्यापार उपचारात्मक प्रयोजनों के लिए स्वतः घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं बन जाती जहाँ शासी कानूनी व्यवस्था स्वयं ऐसी संस्था को भारत के सीमा शुल्क राज्यक्षेत्र के बाहर कार्यरत मानती है। इसके अलावा, प्राधिकारी ने अपनी सभी हाल की जांचों में एसईजेड इकाइयों को घरेलू उद्योग के कार्यक्षेत्र से बाहर रखा है। तदनुसार, प्राधिकारी कुल पात्र घरेलू उत्पादन की गणना से ओपीएएल को बाहर रखते हैं।

28. प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी तर्क दिया है कि चूंकि ओपीएएल 08 मार्च, 2025 को, अर्थात् जांच अवधि के बाद, एसईजेड से बाहर हो गया था, और आवेदन दाखिल करने के समय डीटीए का हिस्सा था, इसे कुल पात्र घरेलू उत्पादन का हिस्सा माना जाना चाहिए था। प्राधिकारी अन्य हितबद्ध पक्षकारों की इस अनुरोध से असहमत हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच की जांच अवधि सीवाई 2024 है। पाटन और क्षति से संबंधित सभी निर्धारण जांच अवधि से संबंधित सूचना पर आधारित होने चाहिए। जांच अवधि के दौरान, ओपीएएल एसईजेड का हिस्सा बना रहा और डीटीए इकाई नहीं था। तदनुसार, एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के तहत कुल पात्र घरेलू उत्पादन की गणना के लिए, ओपीएएल द्वारा किए गए उत्पादन को कुल पात्र घरेलू उत्पादन का हिस्सा नहीं माना जा सकता।

ख. हल्दिया पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड और एचपीसीएल-मित्तल एनर्जी लिमिटेड घरेलू उद्योग के प्रमुख अनुपात का प्रतिनिधित्व नहीं करते

29. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी तर्क दिया है कि एचपीएल और एचएमईएल का भारत में कुल उत्पादन का केवल 25%-30% हिस्सा है और इस प्रकार ये कुल पात्र घरेलू उत्पादन का प्रतिनिधित्व नहीं करते। इस संबंध में, अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने ईसी - फास्टनर में

अपीलीय निकाय के निर्णय पर भरोसा किया है जिसमें अपीलीय निकाय ने निर्णय दिया था कि कुल घरेलू उत्पादन का 27% रखने वाले घरेलू उत्पादक पाटन रोधी पर विश्व व्यापार संगठन समझौते के अनुच्छेद 4.1 के अनुसार "प्रमुख अनुपात" नहीं बनते थे।

30. प्राधिकारी नोट करते हैं कि फास्टनर जांच में, यूरोपीय आयोग ने, फास्टनर मूल जांच में घरेलू उद्योग को परिभाषित करते हुए, घरेलू उद्योग की परिभाषा को केवल ऐसे उत्पादकों तक सीमित कर दिया था जो नमूने में शामिल होने के इच्छुक थे। जांच शुरू होने के बाद, आयोग को 318 ज्ञात उत्पादकों में से 70 उत्पादकों से सूचना प्राप्त हुई। इसके बाद, आयोग ने इन 70 उत्पादकों में से 25 को घरेलू उद्योग की परिभाषा के दायरे से बाहर कर दिया, इस आधार पर कि ऐसे उत्पादकों ने नमूने का हिस्सा बनने की अपनी अनिच्छा व्यक्त की थी, जिससे, जानबूझकर अभिलेख पर प्रासंगिक सूचना की अवहेलना की गई, और इस प्रकार, क्षति जांच में विरूपण का भौतिक जोखिम उत्पन्न हुआ। इस संबंध में, प्राधिकारी इसी - फास्टनर में अपीलीय निकाय की टिप्पणियों को स्मरण करते हैं

"429. यूरोपीय संघ के स्पष्टीकरण के अनुसार, आयोग ने विभिन्न कारणों से इन 70 उत्पादकों में से 25 को घरेलू उद्योग की परिभाषा से बाहर रखा, जिनमें से एक उत्पादकों की नमूने का हिस्सा बनने की व्यक्त अनिच्छा थी।⁵⁷⁷ तथापि, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, घरेलू उत्पादकों का नमूना घरेलू उद्योग से छोटा समूह है, और नमूने का हिस्सा बनने की अनिच्छा इस बात को प्रभावित नहीं करनी चाहिए कि किसी उत्पादक को घरेलू उद्योग का हिस्सा होना चाहिए या नहीं। इसकी पुष्टि फास्टनर जांच के प्रासंगिक तथ्यों से होती है। विशेष रूप से, आयोग ने नमूने के हिस्से के रूप में छह उत्पादकों का चयन किया, उनसे प्रासंगिक सूचना प्राप्त की, और उनके परिसरों पर सूचना का सत्यापन किया। आयोग ने तब नमूना चयनित उत्पादकों से प्राप्त सूचना का उपयोग "सूक्ष्म आर्थिक" क्षति कारकों के अपने विश्लेषण के लिए किया, लेकिन "समष्टि आर्थिक" क्षति कारकों का अपना विश्लेषण घरेलू उद्योग की परिभाषा में शामिल सभी 45 उत्पादकों से प्राप्त सूचना के आधार पर किया। इस प्रकार, घरेलू उद्योग की परिभाषा में केवल उन लोगों को शामिल करके जो नमूने का हिस्सा बनने के इच्छुक थे, आयोग के दृष्टिकोण ने उन उत्पादकों के समूह को सीमित कर दिया जिनके आंकड़ों का उपयोग क्षति निर्धारण के भाग के लिए किया जा सकता था। यद्यपि, फास्टनर उद्योग की खंडित प्रकृति के कारण, सूचना प्राप्त करने पर व्यावहारिक बाधाएं घरेलू उद्योग की परिभाषा में घरेलू उत्पादन के छोटे अनुपात को शामिल करने को उचित ठहरा सकती हैं, आयोग का उन लोगों को बाहर करने का दृष्टिकोण जिन्होंने प्रासंगिक सूचना प्रदान की

लेकिन नमूने का हिस्सा बनने के इच्छुक नहीं थे, ऐसी व्यावहारिक बाधाओं से असंबंधित था, और उनके द्वारा उचित नहीं ठहराया जा सकता।"

31. जैसा कि अपीलीय निकाय की टिप्पणियों से देखा जा सकता है, यूरोपीय आयोग ने घरेलू उद्योग की परिभाषा को केवल ऐसे उत्पादकों तक सीमित कर दिया जो नमूने में शामिल होने के इच्छुक थे। घरेलू उद्योग के कवरेज को केवल ऐसे उत्पादकों तक सीमित करके आयोग ने "उन उत्पादकों के समूह को सीमित कर दिया जिनके आंकड़ों का उपयोग क्षति निर्धारण के भाग के लिए किया जा सकता था" क्योंकि इसने उन उत्पादकों को बाहर कर दिया "जिन्होंने प्रासंगिक सूचना प्रदान की लेकिन नमूने का हिस्सा बनने के इच्छुक नहीं थे"।
32. उपरोक्त तथ्यों के विपरीत, वर्तमान जांच हल्दिया पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड और एचपीसीएल-मित्तल एनर्जी लिमिटेड द्वारा प्रदान किए गए क्षति सूचना आंकड़ों के आधार पर शुरू की गई थी जिनका कुल भारतीय उत्पादन में ***% से अधिक हिस्सा है। जांच शुरू करने के चरण से पहले, आवेदन को रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा समर्थन प्राप्त था, जिसने क्षति अवधि के लिए स्थापित क्षमता, उत्पादन, घरेलू और निर्यात बिक्री के मूल्य और मात्रा से संबंधित सूचना प्रदान की थी। जांच शुरू होने के बाद, प्राधिकारी ने 08.07.2025 के ईमेल के माध्यम से अन्य घरेलू उत्पादकों, अर्थात् इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड और ब्रह्मपुत्र क्रैकर पॉलीमर लिमिटेड और रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड से पूर्ण क्षति सूचना प्रदान करने के लिए सूचना मंगाई। तथापि, रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के अलावा, जिसने लागू व्यापार सूचनाओं के अनुसार जांच के समर्थक के रूप में सूचना प्रदान की, किसी अन्य उत्पादक ने इसका उत्तर नहीं दिया। प्राधिकारी नोट करते हैं कि अन्य घरेलू उत्पादकों द्वारा भाग न लेना विरूपण का भौतिक जोखिम उत्पन्न नहीं करता। इस संबंध में, प्राधिकारी चीन - ऑटोज (यूएस) में पैनल की टिप्पणी को स्मरण करते हैं जिसमें निम्नलिखित कहा गया था:

"7.214. हम अमेरिका के इस तर्क को अविश्वसनीय पाते हैं कि एमओएफसीओएम की पंजीकरण आवश्यकता ने विरूपण का एक भौतिक जोखिम उत्पन्न किया, एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में जो घरेलू उद्योग की परिभाषा में घरेलू उत्पादकों के बीच स्व-चयन की ओर ले जाने में सक्षम है। हम ध्यान देते हैं कि एडी और सीवीडी जांचों में कई कदम उठाए जाने चाहिए, और जांच प्राधिकारी इस संबंध में संभार-तंत्र संबंधी

बाधाओं का सामना करते हैं। पिछले मामलों में, पैनलों और अपीलीय निकाय ने निष्कर्ष निकाला है कि एक जांच प्राधिकारी को यह सुनिश्चित करने में कुछ लचीलापन दिया जाना चाहिए कि वह अपनी जांचों का व्यवस्थित संचालन कैसे सुनिश्चित करता है, उदाहरण के लिए हितबद्ध पक्षकारों के लिए घरेलू उद्योग में शामिल होने पर विचार किए जाने हेतु आगे आने की समय-सीमाएं स्थापित करके।³³⁶ हम मानते हैं कि लचीलेपन की वही आवश्यकता पंजीकरण प्रक्रिया के उपयोग को उचित ठहराती है, जो अनिवार्य रूप से हितबद्ध पक्षकारों से एक समय-सीमा तक आगे आने और स्वयं को जांच प्राधिकारी को ज्ञात कराने की अपेक्षा करती है ताकि उन्हें घरेलू उद्योग का हिस्सा माना जा सके। केवल यह तथ्य कि कुछ उत्पादक ऐसा न करना चुन सकते हैं, अर्थात्, आगे आने से 'स्व-चयन' करके बाहर हो जाना, अमेरिकी शब्दावली का उपयोग करें तो, हमारे विचार में, घरेलू उद्योग को परिभाषित करने की जांच प्राधिकारी की प्रक्रिया में विरूपण का कोई भौतिक जोखिम उत्पन्न नहीं करता। हमारे विचार में, केवल यह कि घरेलू उत्पादक भाग न लेना चुन सकते हैं, इसका अर्थ यह नहीं है कि पंजीकरण आवश्यकता अनुच्छेद 4.1 और 16.1 के साथ असंगत घरेलू उद्योग की परिभाषा की ओर ले जाती है। बशर्ते कोई पंजीकरण जांच में भाग लेने के हितबद्ध पक्षकारों के अधिकारों और प्रशासनिक दक्षता के बीच एक उपयुक्त संतुलन बनाए, हम प्रासंगिक प्रावधानों में ऐसा कुछ भी नहीं देखते जो इसे रोके।"

33. वर्तमान जांच में, प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के सभी घरेलू उत्पादकों से सूचना मंगाई थी, तथापि, ऐसी सूचना प्रदान नहीं की गई। यूरोपीय आयोग के विपरीत, प्राधिकारी ने अभिलेख पर उपलब्ध किसी भी सूचना की अवहेलना नहीं की है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि ऐसी कोई कानूनी आवश्यकता नहीं है कि आवेदकों को कुल भारतीय उत्पादन का कम से कम 50% होना चाहिए। जैसा कि अर्जेंटीना - ब्राजील से पोल्ट्री पर निश्चित पाटन रोधी शुल्क में पैनल द्वारा नोट किया गया, "प्रमुख अनुपात का संदर्भ बताता है कि 'घरेलू उद्योग' को परिभाषित करने के प्रयोजन के लिए एक से अधिक 'प्रमुख अनुपात' हो सकते हैं"।
34. प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि प्रमुख अनुपात गणितीय गणना के आधार पर निर्धारित नहीं किया जा सकता। इस संबंध में, प्राधिकारी माननीय सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपील अधिकरण के लुब्रिजोल (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड बनाम प्राधिकारी [2005

(187) ई.एल.टी. 402 (ट्राई. - देल.)] में की गई टिप्पणियों को स्मरण करते हैं, जिसमें यह निर्णय दिया गया था कि प्रमुख अनुपात बनाने के लिए, यह आवश्यक नहीं है कि प्राधिकारी के समक्ष घरेलू उद्योग का उत्पादन देश के कुल उत्पादन के 50% से अधिक हो।

"15.1 हम यहाँ ध्यान दे सकते हैं कि 'घरेलू उद्योग' को परिभाषित करने वाले नियम 2(ख) में शब्द 'कुल उत्पादन का प्रमुख अनुपात' की व्याख्या इस प्रकार भी की जा सकती है कि इसका अर्थ कुल उत्पादन का महत्वपूर्ण अनुपात या महत्वपूर्ण भाग है जो आवश्यक रूप से 50% से अधिक न हो। 'प्रमुख' शब्द, ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार, 'महत्वपूर्ण, गंभीर या सार्थक' का अर्थ देता है। 'अनुपात' शब्द, इस संदर्भ में, हिस्से का अर्थ देगा। इसलिए, 'प्रमुख अनुपात' अभिव्यक्ति, घरेलू उद्योग के कुल उत्पादन के संदर्भ में, महत्वपूर्ण या सार्थक हिस्से का अर्थ देगी। ऐसी व्याख्या स्पष्ट रूप से अनुज्ञेय है और इसके अनुसार, कुल घरेलू उत्पादन में आवेदक का हिस्सा, 31% से अधिक होना, निस्संदेह एक महत्वपूर्ण या सार्थक हिस्सा अर्थात् उसका एक प्रमुख अनुपात था। 'कुल घरेलू उत्पादन के प्रमुख अनुपात' शब्दों को तुलनात्मक माप या संपूर्ण के विभिन्न भागों के आकार को शामिल करने वाले गणितीय योग को हल करने के कोण से नहीं देखा जा सकता। इस वाक्यांश का उपयोग घरेलू उत्पादकों के उत्पादन उत्पाद के संदर्भ में किया गया है और यह एक व्यापक व्याख्या की अनुमति देता है ताकि अपने दायरे में उन उत्पादकों के सामूहिक उत्पाद को ले सके जो निर्माण में लगे हैं या ऐसे वस्तु के निर्माण से जुड़ी किसी गतिविधि में लगे हैं, जैसा कि नियम 2(ख) द्वारा परिकल्पित है, उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक महत्वपूर्ण या सार्थक हिस्सा बनता है..."

35. प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि ईसी - फास्टनर में अपीलीय निकाय की टिप्पणियाँ केवल ऐसी परिस्थितियों तक सीमित हैं जिनमें प्राधिकारी घरेलू उत्पादकों के लिए पंजीकरण प्रक्रिया के माध्यम से भौतिक विरूपण का जोखिम उत्पन्न करता है। इस संबंध में, प्राधिकारी चीन - ऑटोज (यूएस) में पैनल के निष्कर्षों को स्मरण करते हैं:

"7.220. ... इसके अलावा, अपीलीय निकाय ने नोट किया कि जांच प्राधिकारी ने, वास्तव में, अंततः घरेलू उद्योग में शामिल किए गए 45 से अधिक उत्पादकों की पहचान की थी और उनसे सूचना प्राप्त की थी। अपीलीय निकाय ने निष्कर्ष निकाला कि घरेलू उद्योग में केवल उन उत्पादकों को शामिल करके जो नमूने में शामिल होने के इच्छुक थे, जांच प्राधिकारी के

दृष्टिकोण ने उन उत्पादकों के समूह को सीमित कर दिया जिनके आंकड़ों का उपयोग क्षति निर्धारण करने में किया जा सकता था।"

36. वर्तमान मामले में, प्राधिकारी ने जांच शुरू करने पर सभी घरेलू उत्पादकों से सूचना मंगाई थी। इसके अलावा, यह प्रश्न कि क्या एचपीएल और एचएमईएल एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के अनुसार "प्रमुख अनुपात" को संतुष्ट करते हैं, एडी नियमावली, 1995 के नियम 5(3) से स्वतंत्र रूप से भी आंका गया है। तदनुसार, ईसी - फास्टनर में अपीलीय निकाय की टिप्पणियाँ वर्तमान मामले पर लागू नहीं होतीं।
37. प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर के घरेलू उत्पादकों से संबंधित सूचना घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले आर्थिक कारकों का मूल्यांकन करने के लिए प्रासंगिक नहीं है। इस संबंध में, प्राधिकारी ईसी - बेड लिनेन में पैनल की टिप्पणियों को स्मरण करते हैं, जिसमें निम्नलिखित कहा गया था:

"6.182 तथापि, भारत के दावे के दूसरे पहलू के संबंध में हमारा निष्कर्ष भिन्न है। जैसा कि हमने नोट किया है, क्षति का निर्धारण जांच प्राधिकारियों द्वारा परिभाषित घरेलू उद्योग के लिए किया जाना चाहिए, इस मामले में यूरोपीय समुदायों द्वारा परिभाषित 'समुदाय उद्योग' को शामिल करने वाले 35 उत्पादक। हमारे विचार में, घरेलू उद्योग के भीतर नहीं आने वाली कंपनियों से संबंधित सूचना अनुच्छेद 3.4 के तहत अपेक्षित 'उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले प्रासंगिक आर्थिक कारकों और सूचकांकों' के मूल्यांकन के लिए अप्रासंगिक है। यह सत्य है भले ही वे कंपनियाँ वर्तमान में उत्पादित कर रही हों, या अतीत में उत्पादित कर चुकी हों, समान उत्पाद, बेड लिनेन। घरेलू उद्योग से बाहर की कंपनियों के लिए अनुच्छेद 3.4 के कारकों से संबंधित सूचना स्वयं घरेलू उद्योग पर पाटित किए गए आयातों के प्रभाव के बारे में निष्कर्षों के लिए कोई आधार प्रदान नहीं करती। यदि अन्य वर्तमान या पूर्व बेड लिनेन उत्पादकों को घरेलू उद्योग का हिस्सा माना गया होता, तो यह तथ्य कि उनमें से कुछ व्यवसाय से बाहर हो गए, घरेलू उद्योग पर पाटित किए गए आयातों के प्रभाव के मूल्यांकन के लिए प्रासंगिक होता। लेकिन यह देखते हुए कि यूरोपीय समुदायों ने घरेलू उद्योग को 35 बेड लिनेन उत्पादकों के रूप में परिभाषित किया, अन्य कंपनियों से संबंधित सूचना एडी समझौते के अनुच्छेद 3.4 के तहत 'उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले कारकों और सूचकांकों' के मूल्यांकन को सूचित नहीं

करती, और इस प्रकार पाटित किए गए आयातों के घरेलू उद्योग पर प्रभाव के संबंध में निष्कर्षों का आधार नहीं बन सकती।"

38. इस प्राधिकारी की सुसंगत प्रथा रही है कि प्रमुख अनुपात को महत्वपूर्ण अनुपात माना जाए न कि केवल कुल घरेलू उत्पादन के 50% से अधिक का प्रतिनिधित्व करने वाले उत्पादक।
39. आवेदन में प्रदान की गई सूचना के आधार पर, निम्नलिखित तालिका भारत में संबद्ध वस्तुओं के कुल पात्र घरेलू उत्पादन को दर्शाती है:

भारतीय उत्पादन (मी.ट.)

उत्पादक का नाम	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
हल्दिया पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड (आवेदक)	***	***	***	***
एचपीसीएल-मितल एनर्जी लिमिटेड (आवेदक)	***	***	***	***
रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (समर्थक)	***	***	***	***
गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड	***	***	***	***
इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड	***	***	***	***
ब्रह्मपुत्र क्रैकर एंड पॉलीमर लिमिटेड	***	***	***	***
कुल उत्पादन	16,69,245	16,90,915	18,44,069	22,25,014
कुल उत्पादन में एचपीएल और एचएमईएल का हिस्सा	***	***	***	***
सीमा	0-10	0-10	20-30	25-35
आवेदक + समर्थक	***	***	***	***
सीमा	40-50%	60-70%	60-70%	70-80%

40. प्राधिकारी नोट करते हैं कि अन्य भारतीय हितबद्ध पक्षकारों ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान किए गए कुल भारतीय उत्पादन अनुमान का विरोध किया है। इस संबंध में, प्राधिकारी ने जांच अवधि सहित क्षति अवधि के लिए रसायन और उर्वरक मंत्रालय के आंकड़ों के आधार पर कुल पात्र भारतीय उत्पादन की पुनर्गणना की है। प्राधिकारी ने वित्त वर्ष 2021-22,

2022-23 और 2023-24 के लिए रिपोर्ट में रिपोर्ट किए गए कुल उत्पादन पर विचार किया है। इसके अलावा, यह देखते हुए कि जांच अवधि¹ कोई वित्तीय वर्ष नहीं है, प्राधिकारी ने जनवरी'24 - मार्च'24 और अप्रैल'24 - दिसंबर'24 के लिए उत्पादन का अनुमान वित्त वर्ष 2023-24 और वित्त वर्ष 2024-25 के आंकड़ों को आनुपातिक रूप से विभाजित करके लगाया। प्राधिकारी ने उपरोक्त अवधियों के लिए ओपीएएल की वार्षिक रिपोर्टों का भी संदर्भ लिया और इसकी बिक्री की गणना के लिए वही पद्धति लागू की। इसके अलावा, ओपीएएल के उत्पादन आंकड़ों पर पहुँचने के लिए मालसूची से आवर्त अनुपात लागू किया गया। इस प्रकार आकलित उत्पादन नीचे दिया गया है:

भारतीय उत्पादन (मी.ट.)

उत्पादक का नाम	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
हल्दिया पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड (आवेदक)	***	***	***	***
एचपीसीएल-मित्तल एनर्जी लिमिटेड (आवेदक)	***	***	***	***
रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (समर्थक)	***	***	***	***
अन्य भारतीय उत्पादक	***	***	***	***
ओपीएएल	***	***	***	***
कुल उत्पादन*	29,14,100	24,24,400	27,50,000	28,42,700
कुल पात्र उत्पादन (कुल उत्पादन ओपीएएल को छोड़कर)	22,81,600	17,91,900	22,32,500	22,30,325
कुल उत्पादन में एचपीएल और एचएमईएल का हिस्सा	***	***	***	***
सीमा	0-10	0-10	20-30	25-35
आवेदक + समर्थक	***	***	***	***
सीमा	40-50%	60-70%	60-70%	70-80%

41. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान किया गया कुल उत्पादन अनुमान और प्राधिकारी द्वारा जांच अवधि के लिए रिपोर्ट के आधार पर अनुमानित उत्पादन समान

¹ <https://chemindia.chemicals.gov.in/Publicationspdf/Statistics-at-a-Glance-2024.pdf>

सीमा में हैं। इस निर्धारण के लिए कि क्या घरेलू उद्योग कुल पात्र घरेलू उत्पादन का प्रमुख अनुपात बनाता है, प्राधिकारी ने रिपोर्ट के आधार पर उत्पादन आंकड़ों पर भरोसा किया है। इसी के आधार पर, प्राधिकारी नोट करते हैं कि कुल पात्र उत्पादन में एचएमईएल और एचपीएल के उत्पादन का हिस्सा ***% है, जो घरेलू उद्योग द्वारा दावा किए गए हिस्से की ही सीमा में है।

42. प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि एचएमईएल और एचपीएल भारत में एलएलडीपीई के दूसरे और तीसरे सबसे बड़े पात्र उत्पादक (ओपीएल को छोड़कर) हैं और कुल भारतीय उत्पादन का 25%-30% रखते हैं। इसके अलावा, समर्थक के साथ, एचपीएल और एचएमईएल कुल भारतीय उत्पादन का ***% रखते हैं। तदनुसार, प्राधिकारी यह मानने का प्रस्ताव करते हैं कि हल्दिया पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड और एचपीसीएल-मितल एनर्जी लिमिटेड एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के अनुसार 'प्रमुख अनुपात' बनाते हैं। इसके अलावा, प्राधिकारी ने रिपोर्ट में उल्लिखित अन्य उत्पादकों से संबंधित समष्टि आर्थिक आंकड़ों पर विचार किया है।
43. जहाँ तक अन्य घरेलू उत्पादकों से संबंधित आंकड़ों का प्रश्न है, प्राधिकारी ने अपने 08.07.2025 के ईमेल के माध्यम से संबद्ध वस्तुओं के सभी घरेलू उत्पादकों से निर्धारित प्रारूप के अनुसार पूर्ण क्षति सूचना मंगाई थी। मंगाई गई सूचना में बिक्री, उत्पादन लागत और घरेलू उत्पादकों की लाभप्रदता से संबंधित सूचना शामिल थी। तथापि, किसी भी अन्य घरेलू उत्पादक ने प्राधिकारी को ऐसी सूचना प्रदान नहीं की। प्राधिकारी को केवल रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड से एक समर्थन पत्र प्राप्त हुआ जो जांच शुरू होने से पहले ही प्राधिकारी के पास दाखिल किया जा चुका था। यह भी ध्यान दिया जाता है कि न तो प्राधिकारी और न ही घरेलू उद्योग किसी भी घरेलू उत्पादक को क्षति मापदंडों से संबंधित सूचना प्रस्तुत करने के लिए बाध्य कर सकता है।
44. प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि आवेदकों ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं का आयात नहीं किया है। इसके अलावा, आवेदक संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तुओं के किसी निर्यातक या भारत में संबद्ध वस्तुओं के आयातक से संबंधित नहीं हैं। इसके अलावा, आवेदकों का उत्पादन कुल पात्र घरेलू उत्पादन का एक महत्वपूर्ण और सार्थक अनुपात दर्शाता है और इस प्रकार कुल पात्र घरेलू उत्पादन का प्रमुख अनुपात है। इस प्रकार, आवेदक एडी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के तहत परिभाषित घरेलू उद्योग बनाते हैं, और आवेदन एडी नियमावली, 1995 के नियम 5(3) के अनुसार स्थिति की आवश्यकता को संतुष्ट करता है।

45. रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा दाखिल समर्थन पत्र के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच शुरू करने के चरण में दाखिल पत्र और आवेदन के अद्यतन अगोपनीय संस्करण के साथ परिचालित पत्र में कोई अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग ने आवेदन के अद्यतन अगोपनीय संस्करण में केवल अन्य हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों के आधार पर माप की इकाई का उचित रूप से उल्लेख किया है। तदनुसार, प्राधिकारी समर्थन पत्र में कोई दुर्बलता नहीं पाते हैं।

घ. गोपनीयता

घ.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियाँ

46. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने इस संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
- क. घरेलू उद्योग ने अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है।
 - ख. आवेदक ने विचाराधीन उत्पाद के कुल भारतीय उत्पादन के विवरण पर गोपनीयता का दावा किया है।
 - ग. घरेलू उद्योग ने आवेदन का अद्यतन अगोपनीय संस्करण विलंब से परिचालित किया है।

घ.2 घरेलू उद्योग की टिप्पणियाँ

47. घरेलू उद्योग द्वारा इस संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:
- क. घरेलू उद्योग ने व्यापार सूचना 10/2018 के अनुसार आंकड़े प्रदान किए हैं।
 - ख. अन्य हितबद्ध पक्षकार कुछ ऐसी सूचना दाखिल करने का अनुरोध कर रहे हैं, जो अब आवेदन प्रारूप का हिस्सा नहीं है।

घ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

48. सूचना की गोपनीयता के संबंध में, एडी नियमावली, 1995 का नियम 7 निम्नानुसार प्रावधान करता है:

'गोपनीय सूचना:

(1) नियम 6 के उप-नियमों (2), (3) और (7), नियम 12 के उप-नियम (2), नियम 15 के उप-नियम (4) और नियम 17 के उप-नियम (4) में किसी बात के होते हुए भी, नियम 5 के उप-नियम (1) के तहत प्राप्त आवेदनों की प्रतियाँ, या जांच के दौरान किसी पक्ष द्वारा गोपनीय आधार पर प्राधिकारी को प्रदान की गई कोई अन्य सूचना, प्राधिकारी के उसकी गोपनीयता के बारे में संतुष्ट हो जाने पर, उसके द्वारा ऐसी मानी जाएगी और ऐसी कोई सूचना ऐसी सूचना प्रदान करने वाले पक्ष के विशिष्ट प्राधिकारी के बिना किसी अन्य पक्ष को प्रकट नहीं की जाएगी।

(2) प्राधिकारी गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षों से अपेक्षा कर सकता है कि वे इसका अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करें और यदि, ऐसी सूचना प्रदान करने वाले पक्ष की राय में, ऐसी सूचना सारांश के योग्य नहीं है, तो ऐसा पक्ष प्राधिकारी को इस बात के कारणों का विवरण प्रस्तुत कर सकता है कि सारांश बनाना संभव क्यों नहीं है।

(3) उप-नियम (2) में किसी बात के होते हुए भी, यदि प्राधिकारी संतुष्ट है कि गोपनीयता का अनुरोध उचित नहीं है या सूचना प्रदान करने वाला या तो सूचना को सार्वजनिक करने के लिए अनिच्छुक है या सामान्यीकृत या सारांश रूप में इसके प्रकटीकरण को प्राधिकृत करने के लिए अनिच्छुक है, तो वह ऐसी सूचना की अवहेलना कर सकता है।'

49. इक्वेट और आरआरपीसी ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग ने आवेदन में कुल भारतीय उत्पादन आंकड़ों पर गोपनीयता का दावा किया है। इसका प्रकटीकरण प्राधिकारी द्वारा ऊपर कर दिया गया है।
50. देश-वार मूल्य और मात्रा आंकड़ों के प्रकटीकरण के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इसका प्रकटीकरण घरेलू उद्योग द्वारा आवेदन के अद्यतन अगोपनीय संस्करण में किया जा चुका है।
51. इक्वेट और कतोफिन ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग ने आवेदन का अद्यतन अगोपनीय संस्करण विलंब से परिचालित किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा 11.04.2026 को आवेदन का एक अद्यतन अगोपनीय संस्करण परिचालित किया गया था, इसके बाद कि इक्वेट और कतोफिन ने 09.04.2026 को पहली बार घरेलू उद्योग को गोपनीयता पर अपनी टिप्पणियाँ परिचालित की थीं। अद्यतन याचिका मुख्य रूप से उक्त निर्यातकों द्वारा दाखिल गोपनीयता पर टिप्पणियों को संबोधित करती है। यह ध्यान दिया

जाता है कि अनुरोधों के अगोपनीय संस्करणों का परिचालन स्वयं हितबद्ध पक्षकारों का दायित्व है। 09.04.2026 को टिप्पणियों के परिचालन के बाद, घरेलू उद्योग ने इक्वेट और कतोफिन सहित हितबद्ध पक्षकारों को अगोपनीय आवेदन का अद्यतन संस्करण परिचालित किया। इस प्रकार, चूंकि गोपनीयता पर टिप्पणियाँ इक्वेट और कतोफिन द्वारा विलंब से परिचालित की गई थीं, जिस पर घरेलू उद्योग ने 11.04.2026 को उत्तर दिया, तदनुसार, यह नहीं माना जा सकता कि घरेलू उद्योग ने विलंबित उत्तर परिचालित किया है।

52. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग ने आवेदन के अगोपनीय संस्करण के संबंध में व्यापार सूचना संख्या 10/2018 का अनुपालन नहीं किया है। इस संबंध में, यह ध्यान दिया जाता है कि अन्य हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियाँ घरेलू उद्योग को परिचालित की गई थीं, जिसके बाद घरेलू उद्योग ने देश-वार आयात आंकड़े (मात्रा और मूल्य), आवश्यक प्रारूप में क्षमता उपयोग, अन्य भारतीय उत्पादकों के उत्पादन की समग्र मात्रा, सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत में किए गए समायोजन प्रदान किए हैं। घरेलू उद्योग ने आगे प्रस्तुत किया है कि हितबद्ध पक्षकारों की अन्य टिप्पणियाँ अब गोपनीयता से संबंधित आवेदन प्रारूप का हिस्सा नहीं हैं।
53. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान की गई सूचना की गोपनीयता के दावों की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई। संतुष्ट होने पर, प्राधिकारी ने गोपनीयता के दावों को, जहाँ भी उचित था, स्वीकार कर लिया है और ऐसी सूचना को गोपनीय माना गया है और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं किया गया है। जहाँ भी संभव था, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षों को गोपनीय आधार पर दाखिल सूचना का पर्याप्त अगोपनीय संस्करण प्रदान करने का निर्देश दिया गया था।
54. सभी हितबद्ध पक्षकारों की एक सूची डीजीटीआर की वेबसाइट पर अपलोड की गई थी जिसमें उन सभी से अपनी अनुरोधों का अगोपनीय संस्करण अन्य सभी हितबद्ध पक्षकारों को ईमेल करने का अनुरोध किया गया था।

ड. विविध अनुरोध

ड.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियाँ

55. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- क. जांच शुरू करना भारत-यूएई सीईपीए की भावना के विरुद्ध है क्योंकि जांच अवधि के दौरान यूएई से आयात प्रदर्शनीय रूप से गिरे हैं।
- ख. याचिका में असंगत आंकड़े हैं और इसलिए इसे समाप्त कर दिया जाना चाहिए।

ड.2 घरेलू उद्योग की टिप्पणियाँ

56. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- क. घरेलू उद्योग प्राधिकारी से अनुरोध करता है कि अखिल भारतीय एचडीपीई निर्माता संघ द्वारा की गई सभी कानूनी और तथ्यात्मक अनुरोधों की अवहेलना करें और प्राधिकारी से अनुरोध करता है क्योंकि इसने न तो कोई प्रश्नावली प्रतिक्रिया दाखिल की है, और न ही अपना स्थान स्थापित करने के लिए कोई अन्य अनुरोध/दस्तावेज दाखिल किया है।
- ख. संघ ने अपने सदस्यों की पूर्ण सूची, अपने उप-नियम, बैठक के कार्यवृत्त यह प्रदर्शित करने के लिए प्रदान नहीं किए हैं कि किन सदस्यों ने उसे वर्तमान कार्यवाहियों में भाग लेने के लिए प्राधिकृत किया है। इसके अभाव में, संघ द्वारा की गई अनुरोधों पर कोई महत्व नहीं दिया जाना चाहिए।

ड.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

57. प्राधिकारी नोट करते हैं कि व्यापार उपचारात्मक जांचें एडी नियमावली, 1995 के तहत अपेक्षित पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध के प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर शुरू की जाती हैं। आगे यह नोट किया जाता है कि आयातों में गिरावट जांच शुरू न करने का कारण नहीं बन सकती यदि आवेदन में साक्ष्य में पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध से संबंधित सूचना शामिल थी। प्राधिकारी ने, भारत-यूएई व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते के तहत निर्धारित अनुसार, यूएई सरकार के प्रतिनिधियों के साथ जांच-पूर्व परामर्श किया और उन्हें तर्क प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया जिन पर प्राधिकारी ने इस अंतिम जाँच परिणाम में विचार किया है।

58. आवेदन में शामिल आंकड़ों में असंगति के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत और अंतिम जांच परिणाम उन आंकड़ों पर आधारित है, जिन्हें प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग के लेखा अभिलेखों से विधिवत सत्यापित किया गया था।
59. अखिल भारतीय एचडीपीई/पीपी बुने कपड़े निर्माता संघ द्वारा उपयोगकर्ता प्रश्नावली दाखिल न करने के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि अपनी सुसंगत प्रथा के अनुरूप और यह ध्यान में रखते हुए कि किसी अन्य भारतीय उपयोगकर्ता ने जांच में भाग नहीं लिया है, इसने संघ से कानूनी अनुरोधों की अनुमति दी है और उन पर विचार किया

च. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

च.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियाँ

60. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के निर्धारण के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:
- याचिका में कतर और कुवैत के विरुद्ध जांच शुरू करने को उचित ठहराने के लिए पाटन का पर्याप्त साक्ष्य नहीं था।
 - आवेदक यह प्रदर्शित करने में विफल रहा है कि उसने अपने इस दावे को प्रमाणित करने के लिए कोई विश्वसनीय प्रयास किए कि कतर राज्य, कुवैत और अन्य संबद्ध देशों में प्रचलित कीमतों; या तीसरे देशों को निर्यातों पर विश्वसनीय सूचना अनुपलब्ध थी।
 - एलएलडीपीई मूल्य सूचकांक और बाजार आकलन व्यापक रूप से प्रकाशित होते हैं। वास्तव में आवेदक को ज्ञात था कि प्राधिकारी ने कतर राज्य से एलडीपीई से संबंधित पिछली जांच में घरेलू बिक्री मूल्यों को प्रतिनिधि पाया था।
 - प्राधिकारी को पाना चाहिए कि याचिका में पाटन का सटीक और पर्याप्त साक्ष्य नहीं था। तदनुसार, जांच समाप्त की जानी चाहिए।
 - जहाँ घरेलू कीमतें उपलब्ध नहीं हैं, आवेदक को या तो निर्यात कीमतों या उत्पत्ति देश में उत्पादन लागत पर भरोसा करना आवश्यक है। भारतीय उत्पादकों की लागतों के आधार पर सामान्य मूल्य का अनुमान लगाने का कोई आधार नहीं था।
 - एडी समझौते का अनुच्छेद 5.2 पाटन मार्जिन की गणना के लिए उपयोग किए गए सामान्य मूल्य के लिए मानक के प्रकटीकरण की आवश्यकता रखता है। प्राधिकारी को

- याचिका को अस्वीकार कर देना चाहिए था क्योंकि सामान्य मूल्य किसी भी विधि पर आधारित नहीं था।
- vii. आवेदक ने उत्पत्ति देश में उपलब्ध उत्पादन लागत पर विचार न करने के लिए कोई आधार प्रदान नहीं किया है और यह भी नहीं समझाया है कि भारतीय घरेलू उत्पादकों की लागतें सऊदी अरब, कतर और ओमान राज्य में लागतों को क्यों प्रतिबिंबित करती हैं।
 - viii. संबंधित-पक्ष आपूर्ति का संदर्भ वास्तविक अंतरण कीमतों की अवहेलना करने को उचित नहीं ठहराता बिना यह प्रदर्शित किए कि ऐसे लेन-देन बाजार-आधारित नहीं हैं या वे बाजार मूल्य को युक्तियुक्त रूप से प्रतिबिंबित नहीं करते।
 - ix. सऊदी अरब से राबिघ समूह, केम्या समूह और सदारा समूह के लिए उनकी व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं के आधार पर पृथक पाटन और क्षति अंतर की गणना की जानी चाहिए।
 - x. यूई से समान उत्पादों (एलडीपीई) पर पाटन की अनुपस्थिति पिछली जांच में स्थापित की जा चुकी है।
 - xi. सऊदी अरब, कतर और कुवैत में कोई विशेष बाजार स्थिति (पीएमएस) नहीं है। सामान्य दावे के अलावा इसके अस्तित्व को प्रदर्शित करने के लिए कोई साक्ष्य प्रदान नहीं किया गया है।
 - xii. प्राधिकारी ने हाल ही में कुवैत, सऊदी अरब और सिंगापुर से मोनोएथिलीन ग्लाइकोल में, यह पाया कि जांच अवधि के दौरान कुवैत में पीएमएस का कोई प्रत्यक्ष साक्ष्य नहीं था।
 - xiii. प्राधिकारी ने सऊदी अरब के विरुद्ध पिछली जांच में यह मानने से इनकार कर दिया है कि पीएमएस मूल्य तुलनीयता को प्रभावित करता है।
 - xiv. प्राधिकारी ने एलडीपीई जांच में निर्धारित किया था कि यूई में कोई कच्चा माल/उपयोगिता मूल्य विकृति नहीं थी।
 - xv. आवेदक ने एक व्यापक और अप्रमाणित आरोप लगाया है कि जीसीसी कुछ इनपुट सामग्रियों और उपयोगिताओं के मूल्य निर्धारण में सरकारी हस्तक्षेप के कारण पीएमएस से प्रभावित है, बिना कोई आधार प्रदान किए।
 - xvi. प्राधिकारी ने पिछली जांचों जैसे ईरान और कतर से रैखिक एल्किल बेंजीन (एलएबी) और कतर, सऊदी अरब, सिंगापुर, थाईलैंड, संयुक्त अरब अमीरात और संयुक्त राज्य अमेरिका से निम्न-घनत्व पॉलीएथिलीन (एलडीपीई) में ऐसे अनुपयुक्त दावों को

- अस्वीकार कर दिया है। तदनुसार, पीएमएस के अस्तित्व के ऐसे सामान्य और निराधार दावों को खारिज किया जाना चाहिए।
- xvii. ऑस्ट्रेलिया - ए4 कॉपी पेपर में पैनल के निर्णय के अनुसार आवेदक को पीएमएस के अतिरिक्त, घरेलू और निर्यात बिक्री के बीच उचित तुलना को रोकने वाली ऐसी स्थिति स्थापित करनी आवश्यक है।
- xviii. आरआरपीसी को सैबिक समूह के लिए निर्धारित भारित औसत दर प्रदान की जानी चाहिए।
- xix. आरआरपीसी पहले सऊदी अरामको और सुमितोमो केमिकल के पास 37.5% प्रत्येक के साथ, शेष 25% सार्वजनिक शेयरधारकों के पास था। अरामको ने अक्टूबर 2025 में सुमितोमो से आरआरपीसी में 22.5% अतिरिक्त हिस्सेदारी अधिग्रहीत की। आरआरपीसी और सैबिक के सामान्य नियंत्रण में हैं।
- xx. प्राधिकारी ने हाल ही में संपन्न एमईजी जांच में आरआरपीसी को सैबिक समूह पर लागू शुल्क प्रदान किया था।
- xxi. किसी सहयोगी उत्पादक/निर्यातक की प्रतिक्रिया को केवल इसलिए अस्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि कोई अन्य संस्था जिसने उत्पादक के उत्पाद का एक छोटा भाग निर्यात किया है, ने प्रश्नावली प्रतिक्रिया दाखिल नहीं की है।
- xxii. आरआरपीसी द्वारा अधिकांश निर्यात मात्रा सैबिक के माध्यम से निर्यात की गई थी और कुछ मात्रा सुमितोमो के माध्यम से निर्यात की गई थी। अरामको द्वारा आरआरपीसी में सुमितोमो की 37.5% हिस्सेदारी में से 22.7% हिस्सा अधिग्रहीत करने की घोषणा के साथ, सुमितोमो की भूमिका सीमित हो गई।
- xxiii. भले ही प्राधिकारी यह मानता है कि सुमितोमो की गैर-भागीदारी के कारण आरआरपीसी की निर्यात श्रृंखला पूरी तरह से अभिलेख पर नहीं है, उसे फिर भी सहयोगी उत्पादक और सहयोगी संबंधित संस्था द्वारा अभिलेख पर रखी गई सूचना का उपयोग उस सीमा तक करना चाहिए जहाँ तक ऐसी सूचना अनुबंध II की आवश्यकताओं को संतुष्ट करती है।
- xxiv. आरआरपीसी ने सत्यापन दस्तावेजों के भाग के रूप में सुमितोमो की पुनर्विक्रय मूल्य सूचना और लाभप्रदता विवरण भी प्रस्तुत किया है। तदनुसार, सुमितोमो की गैर-भागीदारी को आरआरपीसी की संपूर्ण प्रश्नावली प्रतिक्रिया को अस्वीकार करने के आधार में परिवर्तित नहीं किया जा सकता।
- xxv. प्राधिकारी ने पॉलिस्टायरीन और एसीटोन निष्कर्षों में केवल असहयोगी बिक्री चैनल की सीमा तक उपलब्ध तथ्य लागू किए।

- xxvi. मलेशिया से संबंधित उत्पादक प्रीफकेम की गैर-भागीदारी सऊदी अरब में उत्पादकों/निर्यातकों के लिए पाटन रोधी शुल्कों के निर्धारण के लिए अप्रासंगिक है।
- xxvii. प्राधिकारी ने पीवीसी सस्पेंशन रेजिन, हैलोब्यूटाइल-रबर और आइसोब्यूटिलीन-आइसोप्रीन रबर में सहयोगी निर्यातकों को व्यक्तिगत शुल्क दर प्रदान की तब भी जब गैर-संबद्ध देशों से संबंधित उत्पादकों ने जांच में सहयोग नहीं किया।
- xxviii. शर्क सैबिक और एसपीडीसी का 50-50 का संयुक्त उपक्रम है। मित्सुबिशी कॉरपोरेशन सैबिक समूह का सहबद्ध नहीं है, बल्कि मित्सुबिशी कॉरपोरेशन एसपीडीसी का एक शेयरधारक है। व्यापार सूचना संख्या 09/2018 के तहत यह नहीं कहा जा सकता कि मित्सुबिशी शर्क या सैबिक से संबंधित है।
- xxix. दो पक्षों के बीच मात्र संबंध नियंत्रण स्थापित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। प्राधिकारी ने सौर पैनलों/मॉड्यूलों के लिए एनोडाइज्ड एल्यूमीनियम फ्रेम में निर्णय दिया है कि जांच को इस बात पर केंद्रित होना चाहिए कि क्या एक संस्था "कानूनी या प्रचालनात्मक रूप से दूसरे पर संयम या निर्देशन का प्रयोग करने की स्थिति में है"।
- xxx. मित्सुबिशी के पास एसपीडीसी के शेयरों का केवल 33.34% है, जबकि एसपीडीसी के पास शर्क के शेयरों का 50% है। न तो शर्क और न ही मित्सुबिशी के पास शर्क में 5% से अधिक है और इसलिए, यह नहीं कहा जा सकता कि मित्सुबिशी और शर्क संबंधित संस्थाएँ हैं।
- xxxi. शर्क सैबिक और एसपीडीसी के बीच 50:50 का संयुक्त उपक्रम है और उनमें से कोई भी कानूनी या प्रचालनात्मक रूप से शर्क पर संयम या निर्देशन का प्रयोग करने की स्थिति में नहीं है और इस प्रकार, वे स्वतंत्र रूप से शर्क पर नियंत्रण का प्रयोग नहीं कर सकते।
- xxxii. जबकि सैबिक और एसपीडीसी एक साथ शर्क को नियंत्रित कर सकते हैं, मित्सुबिशी एसपीडीसी में केवल एक अल्पांश शेयरधारक है और इसलिए कानूनी या प्रचालनात्मक रूप से एसपीडीसी पर संयम का प्रयोग नहीं कर सकता।

च.2 घरेलू उद्योग के विचार

61. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के निर्धारण के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- i. प्राधिकारी को जांच करनी चाहिए कि क्या संबद्ध देशों से भाग लेने वाले निर्यातकों द्वारा पूर्ण घरेलू और निर्यात बिक्री चैनल रिपोर्ट किया गया है।
- ii. एसएपीपीएल की प्रश्नावली प्रतिक्रिया के अगोपनीय संस्करण में इस तथ्य का कोई संदर्भ नहीं है कि इसने प्रीफकेम द्वारा निर्मित संबद्ध वस्तुओं की भारत को आपूर्ति की है।
- iii. यह अस्पष्ट है कि एसएपीपीएल द्वारा भारत को आपूर्ति की गई प्रीफकेम वस्तुएँ वास्तव में मलेशिया से उत्पन्न वस्तुएँ हैं या सऊदी अरब से उत्पन्न वस्तुएँ जिन्हें बाद में प्रीफकेम और एसएपीपीएल के माध्यम से व्यापारित किया गया और इसलिए, भारत को निर्यात किया गया।
- iv. जैसा कि एसएपीपीएल की प्रश्नावली से स्पष्ट है, एसएपीपीएल ने स्पष्ट रूप से कहा है कि उसने केवल केएसए में उत्पादकों द्वारा निर्मित वस्तुओं की आपूर्ति की है।
- v. सैबिक की प्रतिक्रिया में भी यह उल्लेख नहीं है कि उसने अन्य संबद्ध देशों में निर्मित संबद्ध वस्तुओं की भारत को आपूर्ति की है।
- vi. एसएपीपीएल और सैबिक की प्रतिक्रिया से निकलने वाला एकमात्र तार्किक निष्कर्ष यह है कि प्रीफकेम, मलेशिया से निर्यात की गई वस्तुएँ वास्तव में सऊदी अरब से उत्पन्न वस्तुएँ हैं जिन्हें प्रीफकेम और एसएपीपीएल के माध्यम से व्यापारित और निर्यात किया गया।
- vii. सैबिक समूह के संबंधित उत्पादक, मलेशिया में प्रीफकेम, शर्क के संबंधित निर्यातक, मित्सुबिशी कॉरपोरेशन और पेट्रो राबिघ के संबंधित निर्यातक सुमितोमो केमिकल एशिया पीटीई लिमिटेड ने जांच में भाग नहीं लिया है।
- viii. संचालन प्रथाओं की नियमावली का पैरा 12.20 स्पष्ट रूप से निर्धारित करता है कि उत्तरदाता उत्पादक को सहयोगी माने जाने और व्यक्तिगत पाटन मार्जिन प्राप्त करने के लिए विचाराधीन उत्पाद के निर्यातों में शामिल सभी संबंधित संस्थाओं के संबंध में पूर्ण प्रतिक्रिया दाखिल करनी होगी।
- ix. अपूर्ण बिक्री चैनल को देखते हुए, प्राधिकारी को सदारा और केम्या सहित सैबिक समूह की संपूर्ण प्रतिक्रिया को अस्वीकार कर देना चाहिए।

च.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

62. धारा 9क(1)(ग) के तहत, किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:

i) उप-धारा (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्धारित, निर्यातक देश या राज्यक्षेत्र में उपभोग के लिए अभिप्रेत होने पर, समान वस्तु के लिए, व्यापार के सामान्य क्रम में, तुलनीय कीमत, या

ii) जब निर्यातक देश या राज्यक्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार के सामान्य क्रम में समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं होती, या जब विशेष बाजार स्थिति या निर्यातक देश या राज्यक्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्री की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्री उचित तुलना की अनुमति नहीं देती, सामान्य मूल्य या तो होगा:

(क) उप-धारा (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्धारित, निर्यातक देश या राज्यक्षेत्र या उपयुक्त तीसरे देश से निर्यात किए जाने पर समान वस्तु का तुलनीय प्रतिनिधि मूल्य; या उप-धारा (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्धारित, प्रशासनिक, विक्रय और सामान्य लागतों और लाभों के लिए युक्तियुक्त जोड़ के साथ उत्पत्ति देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत;

(ख) परंतु उत्पत्ति देश से भिन्न किसी देश से वस्तु के आयात के मामले में और जहाँ वस्तु को केवल निर्यात के देश से पारगमित किया गया हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती या निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, सामान्य मूल्य उत्पत्ति के देश में इसकी कीमत के संदर्भ में निर्धारित किया जाएगा।'

63. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों के साथ-साथ उपयुक्त राजनयिक प्रतिनिधि को प्रश्नावली भेजी जिसमें उन्हें निर्धारित समय सीमा के भीतर प्राधिकारी द्वारा निर्धारित प्रपत्र और रीति में सूचना प्रदान करने की सलाह दी गई।

64. निम्नलिखित उत्पादकों ने जांच में भाग लिया है:

देश	उत्पादक/निर्यातक का नाम	उत्पादक-निर्यातक / निर्यातक
कुवैत	इक्वेट पेट्रोकेमिकल कंपनी ("इक्वेट")	उत्पादक-निर्यातक
मलेशिया	मलेशिया से कोई उत्पादक भाग नहीं लिया है	-
ओमान	मेसर्स ओक्यू पॉलिमर एल.एल.सी. ("ओक्यू")	उत्पादक-निर्यातक
	ओक्यू मार्केटिंग एल.एल.सी. ("ओक्यूएम")	निर्यातक

कतर	कतोफिन कंपनी लिमिटेड क्यू.पी.जे.एस.सी ("कतोफिन")	उत्पादक-निर्यातक
	कतर रासायनिक और पेट्रोरासायनिक विपणन और वितरण कंपनी (मुंतजात) क्यू.पी.जे.एस.सी ("मुंतजात")	निर्यातक
	कतरएनर्जी मार्केटिंग ("क्यूईएम")	निर्यातक
	टोटलएनर्जीज पेट्रोकेमिकल्स फ्रांस - कतर शाखा कार्यालय ("टोटलएनर्जीज")	निर्यातक
सऊदी अरब	अल-जुबैल पेट्रोकेमिकल कंपनी ("केम्या")	उत्पादक-निर्यातक
	अरेबियन पेट्रोकेमिकल कंपनी ("पेट्रोकेम्या")	उत्पादक-निर्यातक
	ईस्टर्न पेट्रोकेमिकल कंपनी ("शर्क")	उत्पादक-निर्यातक
	जुबैल यूनाइटेड पेट्रोकेमिकल कंपनी ("यूनाइटेड")	उत्पादक-निर्यातक
	राबिघ रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल कंपनी ("आरआरपीसी")	उत्पादक-निर्यातक
	सदारा केमिकल कंपनी ("सदारा")	उत्पादक-निर्यातक
	यान्बू राष्ट्रीय पेट्रोकेमिकल कंपनी ("यानसाब")	उत्पादक-निर्यातक
	सऊदी बेसिक इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन ("सैबिक")	निर्यातक
	सैबिक एशिया पैसिफिक पीटीई लिमिटेड ("एसएपीपीएल")	निर्यातक
	एसपीडीसी	निर्यातक
	एक्सॉनमोबिल एशिया पैसिफिक पीटीई लिमिटेड ("ईएमएपीपीएल")	निर्यातक
	डाउ सऊदी अरब उत्पाद विपणन बी.वी. ("डीएसए")	निर्यातक
	डाउ केमिकल पैसिफिक (सिंगापुर) प्राइवेट लिमिटेड ("डीसीपी (एस)")	निर्यातक
	डाउ केमिकल पैसिफिक (सिंगापुर) प्राइवेट लिमिटेड, दुबई शाखा ("डीसीपी (एस) (डी)")	निर्यातक
डाउ केमिकल इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड दुबई शाखा ("डीसीआईपीएल")	निर्यातक	
संयुक्त अरब अमीरात	अबू धाबी पॉलिमर्स कंपनी लिमिटेड ("एडीपीसीएल")	उत्पादक-निर्यातक
	बोरौज पीटीई लिमिटेड ("बोरौज")	निर्यातक
	एसआरजे ग्लोबल एफ.जेड.ई.	निर्यातक

65. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने संबद्ध देशों के विरुद्ध विशेष बाजार स्थिति के आरोप का विरोध किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने अभिलेख पर पर्याप्त साक्ष्य

नहीं रखा है। तदनुसार, प्राधिकारी ने आरोप की जांच नहीं की है, और विशेष बाजार स्थिति के कारण उत्पादन लागत या सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत में कोई समायोजन नहीं किया गया है।

66. जहाँ किसी निर्यातक उत्पादक ने अनेक बिक्री चैनलों (नीचे गणित) के माध्यम से निर्यात किया है, प्राधिकारी ने भारत औसत सामान्य मूल्य निर्धारित किया है और पाटन मार्जिन निर्धारित करने के लिए उस निर्यातक के भारत औसत निर्यात कीमत से तुलना की है। इसके अलावा, जहाँ किसी निर्यातक ने एक से अधिक पीसीएन निर्यात किया है, पाटन और क्षति अंतर पीसीएन वार निर्धारित किया गया है, और समग्र रूप से उत्पादक के लिए भारत औसत पाटन और क्षति अंतर भी निर्धारित किया गया है।
67. प्राधिकारी यह भी ध्यान देते हैं कि कई संबंधित उत्पादकों ने भी जांच में भाग लिया है। प्राधिकारी ने ऐसे उत्पादकों के लिए व्यक्तिगत पाटन और क्षति अंतर निर्धारित किए हैं और समूह के लिए भारत औसत पाटन और क्षति अंतर भी निर्धारित किया है। सभी संबंधित उत्पादकों के लिए अंतिम शुल्क अनुशंसा, यदि कोई हो, समूह के लिए भारत औसत पाटन या क्षति अंतर में से जो भी कम हो पर आधारित होगी। निम्नलिखित तालिका वर्तमान जांच में भाग लेने वाले उत्पादकों के बिक्री चैनल को दर्शाती है:

बिक्री चैनल	उत्पादक	निर्यातक 1*	निर्यातक 2*	निर्यातक 3*	टिप्पणी
घरेलू	इक्वेट	-	-	-	असंबंधित ग्राहक
निर्यात	इक्वेट	-	-	-	असंबंधित ग्राहक
घरेलू	ओक्यू पॉलिमर	ओक्यू मार्केटिंग	-	-	असंबंधित ग्राहक
निर्यात	ओक्यू पॉलिमर	ओक्यू मार्केटिंग	-	-	असंबंधित ग्राहक
घरेलू	कतोफिन	मुंतजात	-	-	असंबंधित ग्राहक
घरेलू	कतोफिन	क्यूईएम	-	-	असंबंधित ग्राहक

निर्यात	कतोफिन	मुंतजात	-	-	असंबंधित ग्राहक
	कतोफिन	क्यूईएम	-	-	असंबंधित ग्राहक
	कतोफिन	मुंतजात	टोटल एनर्जीज	-	असंबंधित ग्राहक
घरेलू	पेट्रोकेम्या	सैबिक	-	-	असंबंधित ग्राहक
निर्यात	पेट्रोकेम्या	सैबिक	एसएपीपीएल	-	असंबंधित ग्राहक
घरेलू	शर्क	सैबिक	-	-	असंबंधित ग्राहक
निर्यात	शर्क	सैबिक	एसएपीपीएल	-	असंबंधित ग्राहक
	शर्क	एसपीडीसी	मित्सुबिशी	-	असंबंधित ग्राहक
घरेलू	यूनाइटेड	सैबिक	-	-	असंबंधित ग्राहक
निर्यात	यूनाइटेड	सैबिक	एसएपीपीएल	-	असंबंधित ग्राहक
घरेलू	यानसाब	सैबिक	-	-	असंबंधित ग्राहक
निर्यात	यानसाब	सैबिक	एसएपीपीएल	-	असंबंधित ग्राहक
घरेलू	केम्या	सैबिक	-	-	-
निर्यात	केम्या	सैबिक	एसएपीपीएल	-	असंबंधित ग्राहक
	केम्या	ईएमसीएपी	-	-	असंबंधित ग्राहक
घरेलू	आरआरपीसी	सैबिक	-	-	असंबंधित ग्राहक

	आरआरपीसी	सुमितोमो	-	-	असंबंधित ग्राहक
	आरआरपीसी	-	-	-	असंबंधित ग्राहक
निर्यात	आरआरपीसी	सैबिक	एसएपीपीएल	-	असंबंधित ग्राहक
	आरआरपीसी	सुमितोमो	-	-	असंबंधित ग्राहक
घरेलू	सदारा	सैबिक	-	-	असंबंधित ग्राहक
निर्यात	सदारा	डीएमएस	-	-	असंबंधित ग्राहक
	सदारा	सैबिक	एसएपीपीएल	-	असंबंधित ग्राहक
	सदारा	डीएसए	डीसीपी (एस)	-	असंबंधित ग्राहक
	सदारा	डीएसए	डीसीपी (एस)	डीसीआईपीएल	असंबंधित ग्राहक
	सदारा	डीएसए	डीसीआईपीएल	-	असंबंधित ग्राहक
	सदारा	डीएसए	डीसीपी(एस) (डी)	असंबंधित निर्यातक	असंबंधित ग्राहक
	घरेलू	एडीपीसीएल	बोरौज	-	-
निर्यात	एडीपीसीएल	बोरौज	-	-	असंबंधित ग्राहक
	एडीपीसीएल	बोरौज	एसआरजे (असंबंधित निर्यातक)	-	असंबंधित ग्राहक

*सभी निर्यातक संबंधित हैं जब तक विशेष रूप से उल्लेख न किया गया हो कि वे असंबंधित हैं (असंबंधित निर्यातक)।

68. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कई उत्पादक-निर्यातकों, संबंधित और असंबंधित निर्यातकों ने वर्तमान जांच में भाग लिया है। इन उत्पादक-निर्यातकों ने संबद्ध वस्तुओं को अपने घरेलू बाजार में बेचा है और संबंधित पक्ष बिक्री चैनलों के माध्यम से भारत को निर्यात किया है। जांच के दौरान, प्राधिकारी ने पाया कि कुछ मामलों में उत्पादक अपने संबंधित निर्यातकों को उच्च कीमतों पर बेच रहे थे और बाद में ये संबंधित निर्यातक भारत को पाटित कीमतों पर वस्तुओं का निर्यात कर रहे थे। तदनुसार, सीमा शुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 9(क) के तहत अधिदेशित अनुसार, प्राधिकारी ने उत्पादक स्तर पर एक्स-फैक्ट्री मूल्य निर्धारित करने के लिए संबंधित निर्यातकों के एसजीए व्यय और लाभ और उत्पादकों के एसजीए व्यय को घटाने के बाद स्वतंत्र ग्राहकों को पहली पुनर्विक्रय के बिंदु से सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत दोनों निर्धारित किए हैं।
69. इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि सऊदी अरब के सभी उत्पादक अर्थात्, केम्या, पेट्रोकेम्या, शर्क, यूनाइटेड, आरआरपीसी, सदारा और यानसाब, या तो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सैबिक या सऊदी अरामको, सैबिक के बहुसंख्य शेयरधारक (70%), द्वारा नियंत्रित हैं और इस प्रकार, संबंधित पक्ष माने गए हैं। शेयरधारिता प्रतिरूप निम्नानुसार हैं:

उत्पादक	शेयरधारिता	प्रत्यक्ष शेयरधारक	शेयरधारिता	प्रत्यक्ष शेयरधारक का शेयरधारक
केम्या	***	सैबिक	***	सऊदी अरामको
	***	एक्सॉन केमिकल अरेबिया इंक.	***	
पेट्रोकेम्या	***	सैबिक	***	सऊदी अरामको
आरआरपीसी	***	सऊदी अरामको	***	
	***	सुमितोमो केमिकल	***	

उत्पादक	शेयरधारिता	प्रत्यक्ष शेयरधारक	शेयरधारिता	प्रत्यक्ष शेयरधारक का शेयरधारक
		कंपनी		
	***	सार्वजनिक शेयरधारिता	***	
शर्क	***	सैबिक	***	सऊदी अरामको
	***	एसपीडीसी	***	मित्सुबिशी कॉरपोरेशन
यूनाइटेड	***	सैबिक	***	सऊदी अरामको
	***	सामाजिक बीमा के लिए सामान्य संगठन	***	
यानसाब	***	सैबिक	***	
	***	सार्वजनिक	***	
एसएपीपीएल	***	सऊदी अरामको	***	सऊदी अरामको
सदारा	***	एक्सीलेंट परफॉर्मेंस केमिकल्स कंपनी	***	सऊदी अरामको
	***	डाउ सऊदी अरब होल्डिंग बी.वी.	***	

70. उपरोक्त के आधार पर, प्राधिकारी ने केम्या, पेट्रोकेम्या, शर्क, यूनाइटेड, आरआरपीसी, सदारा और यानसाब को संबंधित उत्पादक माना है और ये एक ही समूह, सऊदी अरामको - सैबिक समूह, का हिस्सा हैं।

71. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सैबिक समूह के दो उत्पादकों, अर्थात् शर्क और आरआरपीसी, का बिक्री चैनल संबंधित निर्यातकों की गैर-भागीदारी के कारण अपूर्ण है। शर्क के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि शर्क ने अपनी संबंधित संस्था एसपीडीसी के माध्यम से संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया है जिसने बदले में उन्हें अपनी संबंधित संस्था मित्सुबिशी कॉरपोरेशन ("मित्सुबिशी") को पुनर्विक्रय किया, जिसने आगे भारत को निर्यात किया है। मित्सुबिशी ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है। शर्क के अपूर्ण बिक्री चैनल को देखते हुए, घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि शर्क की प्रश्नावली प्रतिक्रिया को अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।
72. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रश्नावली प्रतिक्रिया के भाग के रूप में, भाग लेने वाले निर्यातकों को निर्यात और घरेलू बिक्री चैनलों से संबंधित सूचना प्रस्तुत करना आवश्यक है, जिसमें यह तथ्य शामिल है कि क्या कोई संबंधित या असंबंधित निर्यातक ऐसे बिक्री चैनलों का हिस्सा थे। इसके अलावा, प्रश्नावली में विचाराधीन उत्पाद के निर्यातों में शामिल गैर-उत्पादक संबंधित संस्थाओं को अनुबंध-5 के साथ भाग I, भाग II प्रस्तुत करना आवश्यक है। इसके अलावा, अनुबंध 3क में, प्राधिकारी विशेष रूप से भाग लेने वाले निर्यातक से निर्यातक और ग्राहक के बीच संबंध की पहचान करने की अपेक्षा करता है, अर्थात्, वे संबंधित हैं या नहीं, और संबंध की प्रकृति। यह सूचना निवल निर्यात कीमत के सटीक निर्धारण को सुनिश्चित करने के लिए मांगी जाती है, क्योंकि ऐसे उदाहरण हो सकते हैं जिनमें निर्यातक का संबंधित या असंबंधित निर्यातक पाटन कर रहा हो। सभी निर्यात बिक्री चैनलों से संबंधित सटीक सूचना के अभाव में, प्राधिकारी न तो उस कीमत का निर्धारण कर पाएगा जिस पर वस्तुएँ अंततः भारत को निर्यात की गईं और न ही भारत में ऐसी वस्तुओं की पहुँच कीमत का।
73. वर्तमान जांच में, शर्क और एसपीडीसी ने 12 सितंबर, 2025 को दाखिल अपनी मूल प्रश्नावली प्रतिक्रिया में अपने बिक्री चैनल का पूर्ण और सटीक प्रकटीकरण प्रदान नहीं किया। विशेष रूप से, एसपीडीसी ने अपनी विवरणात्मक प्रश्नावली प्रतिक्रिया में यह प्रकट करना भी छोड़ दिया कि उसने अपने संबंधित पक्ष मित्सुबिशी के माध्यम से भारत को बिक्री की थी। इसके अलावा, एसपीडीसी ने न केवल दो स्तंभों अर्थात्, "यदि संबंधित" (निर्यातक और ग्राहक के बीच संबंध) और "क्या संबंध" (संबंध की प्रकृति) से संबंधित सूचना प्रदान करना छोड़ दिया, बल्कि वास्तव में अनुबंध 3क से इन स्तंभों को पूरी तरह से हटा दिया। एसपीडीसी को छोड़कर, सैबिक समूह की अन्य संस्थाओं ने इन स्तंभों को सटीक रूप से रिपोर्ट किया था।

74. चूंकि प्रश्नावली में व्यापक सूचना दाखिल करना शामिल है, कभी-कभी, अनजाने में चूक हो सकती है। ऐसी चूकों को सुधारने के लिए, 12 अक्टूबर, 2025 के ईमेल के माध्यम से, प्राधिकारी ने सभी निर्यातकों को दूसरा अवसर प्रदान किया और विशेष रूप से निर्यातकों से अनुरोध किया कि वे अपनी प्रतिक्रिया (सामान्य प्रश्नों के प्रश्न (ज)) में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री या उत्पादन में संलग्न सभी संबंधित उत्पादकों, निर्यातकों और निर्यातकों के नाम स्पष्ट करें। शर्क और एसपीडीसी को भी अपनी प्रश्नावली प्रतिक्रिया पूर्ण करने का निर्देश दिया गया था। तथापि, अपनी प्रतिक्रिया में एसपीडीसी ने प्राधिकारी को यह सूचित नहीं किया कि मित्सुबिशी कॉर्पोरेशन के माध्यम से भारत को इसके निर्यात संबंधित बिक्री थे। प्राधिकारी द्वारा उठाए गए एक विशिष्ट प्रश्न के बावजूद, एसपीडीसी, अपने संशोधित अनुबंधों में, एक बार फिर एसपीडीसी और मित्सुबिशी के बीच निर्यात बिक्री को संबंधित पक्ष बिक्री के रूप में रिपोर्ट करने या मित्सुबिशी कॉर्पोरेशन को संबंधित पक्ष के रूप में पहचानने में विफल रहा। एसपीडीसी ने अपनी प्रश्नावली में फिर से अपने ग्राहक (मित्सुबिशी) के साथ संबंध से संबंधित स्तंभों को हटा दिया। इसलिए, यह निष्कर्ष निकलता है कि एसपीडीसी ने जानबूझकर मित्सुबिशी के साथ अपने संबंध से संबंधित सूचना को छोड़ा।
75. प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि शर्क ने तर्क दिया है कि मित्सुबिशी शर्क का सहबद्ध नहीं है और मित्सुबिशी शर्क को नियंत्रित नहीं करता। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि मित्सुबिशी और शर्क के बीच संबंध की जांच करने से पहले, प्राधिकारी को मित्सुबिशी और एसपीडीसी के बीच संबंध की जांच करनी चाहिए। मित्सुबिशी के पास एसपीडीसी में 33.34% हिस्सा है, और इस प्रकार सीधे एसपीडीसी में 5% से अधिक शेयर रखता है और अप्रत्यक्ष रूप से शर्क में 5% से अधिक हिस्सा रखता है। प्राधिकारी आगे मोनो एथिलीन ग्लाइकोल के आयातों से संबंधित अपनी हाल ही में संपन्न जांच को स्मरण करते हैं, जिसमें उसने एसपीडीसी और मित्सुबिशी कॉर्पोरेशन को संबंधित माना था, जिस पर न तो शर्क या एसपीडीसी या मित्सुबिशी कॉर्पोरेशन ने विवाद किया था। प्राधिकारी ने उस मामले में मित्सुबिशी कॉर्पोरेशन द्वारा दाखिल प्रश्नावली प्रतिक्रिया का भी अवलोकन किया है और पाया कि मित्सुबिशी कॉर्पोरेशन ने एसपीडीसी से खरीद को संबंधित पक्ष खरीद के रूप में रिपोर्ट किया था। इन तथ्यों के मद्देनजर, प्राधिकारी एसपीडीसी और मित्सुबिशी को एक-दूसरे से संबंधित पाते हैं और शर्क को अप्रत्यक्ष रूप से मित्सुबिशी से संबंधित पाते हैं। तदनुसार, प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार शर्क द्वारा

की गई बिक्री के निर्यात मूल्य और सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना का प्रयोग किया है।

76. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सैबिक समूह ने एक अन्य संबंधित उत्पादक, अर्थात् मलेशिया से प्रीफकेम, की गैर-भागीदारी का प्रकटीकरण नहीं किया है। जबकि एसएपीपीएल और सैबिक के अनुबंध 3क/अनुबंध 3ख में निर्यात लेन-देन प्रीफकेम द्वारा निर्यात सूचीबद्ध करते हैं, पूरक प्रश्नावली प्रतिक्रिया में प्रश्नों के उत्तर में, उनमें से किसी ने भी प्रीफकेम (50% सऊदी अरामको और 50% पेट्रोनास के स्वामित्व वाली) की गैर-भागीदारी को स्पष्ट नहीं किया। प्रीफकेम की गैर-भागीदारी के कारण, प्राधिकारी ने एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर मलेशिया के लिए पाटन और क्षति अंतर निर्धारित किया है।
77. यह भी ध्यान दिया जाता है कि आरआरपीसी का निर्यात बिक्री चैनल इसके संबंधित निर्यातक सुमितोमो की गैर-भागीदारी के कारण अपूर्ण है। आरआरपीसी ने यह दावा करने के लिए पॉलिस्टायरीन में इस प्राधिकारी के निष्कर्षों पर भरोसा किया है कि इसकी प्रतिक्रिया को केवल इसके संबंधित निर्यातक द्वारा गैर-भागीदारी की सीमा तक, अस्वीकार किया जाना चाहिए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पॉलिस्टायरीन में, निर्यातक (तख्त-ए-जमशीद पार्स अस्सलौयेह पेट्रोकेमिकल कंपनी) के सभी संबंधित निर्यातकों ने सहयोग किया था, और प्राधिकारी ने एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार असंबंधित निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत निर्धारित किया था। आरआरपीसी ने एसीटोन में प्राधिकारी के निर्धारण पर भी भरोसा किया है, जिसमें उसने असहयोगी बिक्री चैनल के लिए सर्वोत्तम सूचना लागू की थी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि एसीटोन में भी, असहयोगी बिक्री चैनल केवल असंबंधित निर्यातकों से संबंधित था। उस मामले के तथ्यों के विपरीत, वर्तमान जांच में, आरआरपीसी के भारत को निर्यात केवल संबंधित पक्षों, अर्थात् सैबिक और सुमितोमो के माध्यम से किए जाते हैं। तदनुसार, उपर्युक्त में से कोई भी निष्कर्ष आरआरपीसी की प्रतिक्रिया पर आंशिक विचार के तर्क को कोई समर्थन नहीं देता।
78. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आरआरपीसी ने अपनी प्रश्नावली प्रतिक्रिया की धारा ई में यह स्वीकार करते हुए कि उसने सुमितोमो और सैबिक दोनों के माध्यम से विचाराधीन उत्पाद का निर्यात किया था, उसने सुमितोमो के लिए प्रश्नावली प्रतिक्रिया दाखिल नहीं की, न ही

उसकी गैर-भागीदारी का कोई कारण निर्दिष्ट किया। 12 अक्टूबर, 2025² के ईमेल के माध्यम से, प्राधिकारी ने आरआरपीसी के बिक्री चैनलों के बारे में पूछताछ की। आरआरपीसी ने अपनी प्रतिक्रिया में समझाया कि 2024 में सऊदी अरामको और सुमितोमो ने सऊदी अरामको द्वारा आरआरपीसी में सुमितोमो की 22.5% शेयर पूंजी के अधिग्रहण की घोषणा की थी। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि अधिग्रहण अंततः अक्टूबर 2025 में पूरा हुआ, अर्थात् जांच अवधि के बाहर। इसके अलावा, अधिग्रहण के बाद भी, सुमितोमो के पास आरआरपीसी में 5% से अधिक हिस्सा बना हुआ है और इसलिए दिनांकित व्यापार सूचना 9/2018 के अनुसार संबंधित बना रहता है।

79. आरआरपीसी ने यह भी समझाया कि सुमितोमो अब व्यवसाय में रुचि नहीं रखता था और यह आरआरपीसी की समझ थी कि सुमितोमो पॉलिमर व्यवसाय से बाहर निकलने का इरादा रखता था। प्राधिकारी नोट करते हैं कि सुमितोमो के पास जांच अवधि के दौरान आरआरपीसी में महत्वपूर्ण शेयरधारिता थी और इस प्रकार एक संबंधित पक्ष बना रहा। चूंकि सुमितोमो ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि आरआरपीसी का बिक्री चैनल अपूर्ण बना हुआ है। जहाँ प्राधिकारी असंबंधित निर्यातकों के मामले में विवेक का प्रयोग करते हैं, वहीं संबंधित निर्यातकों की संलिप्तता के मामले में, वही छूट नहीं दी जा सकती क्योंकि यह निम्न निर्यात कीमतों वाले संबंधित निर्यातकों द्वारा गैर-भागीदारी को प्रोत्साहित करेगी और इस प्रकार, प्राधिकारी को पाटन के सटीक निर्धारण से रोकेगी। तदनुसार, प्राधिकारी एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार आरआरपीसी के निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य का निर्धारित किया है।

च.3.1 सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण

क) कुवैत से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

इक्वेट पेट्रोकेमिकल कंपनी ("इक्वेट") के लिए सामान्य मूल्य

80. इक्वेट ने जांच अवधि में ***मीट्रिक टन की घरेलू बिक्री रिपोर्ट की है। उत्पादक ने दावा किया है कि सभी घरेलू बिक्री असंबंधित पक्षों को है। उत्पादक ने बीमा, आंतरिक परिवहन, उधार लागत और किसी अन्य कटौती के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने

² <https://www.aramco.com/en/news-media/news/2025/aramco-completes-acquisition-of-additional-stake-in-petro-rabigh>

जहाँ तक इक्वेट द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, सामान्य मूल्य में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। इक्वेट द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत, जहाँ तक उसी का सत्यापन किया जा सकता था और इक्वेट द्वारा कानूनी रूप से प्रमाणित की जा सकती थी, प्राधिकारी द्वारा विचार की गई है। यह ध्यान दिया गया है कि 80% से अधिक घरेलू बिक्री लाभदायक पाई गई, तदनुसार, सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए सभी बिक्री पर विचार किया गया है। इस प्रकार निर्धारित एक्स-फैक्ट्री सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित किया गया है।

असहयोगी उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य

81. कुवैत से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

ख) कुवैत से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

इक्वेट के मामले में निर्यात कीमत

82. इक्वेट ने जांच अवधि के दौरान एनएमजी पीसीएन के *** मीट्रिक टन निर्यात रिपोर्ट किए हैं। उत्पादक ने दावा किया है कि उसने एक असंबंधित निर्यातक के माध्यम से भारत को संबद्ध वस्तुओं के प्रत्यक्ष और साथ ही अप्रत्यक्ष निर्यात किए हैं। असंबंधित निर्यातक ने जांच में भाग नहीं लिया है। यह ध्यान दिया जाता है कि असंबंधित निर्यातक के माध्यम से की गई निर्यात बिक्री नगण्य है। उत्पादक ने समुद्री माल भाड़ा, बीमा, आंतरिक परिवहन, पतन और अन्य संबंधित व्यय, उधार लागत और किसी अन्य कटौती के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक इक्वेट द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, निर्यात कीमत में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। प्राधिकारी ने उपयुक्त अनुबंधों में रिपोर्ट की गई मात्रा और मूल्य के आधार पर भारतीय ग्राहकों को की गई प्रत्यक्ष बिक्री को ध्यान में रखा है, और उन चैनलों के लिए उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्यात कीमत पर भी विचार किया है जिनके लिए भारत को निर्यात कीमत उपलब्ध नहीं था क्योंकि असंबंधित निर्यातकों ने इस जांच में सहयोग नहीं किया। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए निर्यात कीमत।

83. कुवैत से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

मलेशिया से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

असहयोगी उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य।

84. मलेशिया से किसी उत्पादक-निर्यातक ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है। तदनुसार, मलेशिया से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए निर्यात कीमत।

85. मलेशिया से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

ओमान से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

ओक्यू पॉलिमर्स एलएलसी के लिए सामान्य मूल्य

86. ओक्यू पॉलिमर्स एलएलसी ने अपने घरेलू बाजार में *** मीट्रिक टन की घरेलू बिक्री रिपोर्ट की है। ये बिक्री इसके संबंधित निर्यातक ओक्यू मार्केटिंग एलएलसी के माध्यम से की गई है। ओक्यू पॉलिमर्स एलएलसी ने आंतरिक परिवहन के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक ओक्यू पॉलिमर्स द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, सामान्य मूल्य में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। ओक्यू पॉलिमर्स द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत, जहाँ तक उसी का सत्यापन किया जा

सकता था और ओक्यू पॉलिमर्स द्वारा कानूनी रूप से प्रमाणित की जा सकती थी, प्राधिकारी द्वारा विचार की गई है। यह ध्यान दिया गया है कि केवल ***% घरेलू बिक्री लाभदायक पाई गई, तदनुसार, सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए केवल लाभदायक बिक्री पर विचार किया गया है। इस प्रकार निर्धारित एक्स-फैक्ट्री सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित किया गया है।

असहयोगी उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य।

87. ओमान से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

ओक्यू पॉलिमर्स एलएलसी के लिए निर्यात कीमत

88. ओक्यू पॉलिमर्स एलएलसी ने जांच अवधि के दौरान एनएमजी पीसीएन के *** मीट्रिक टन निर्यात की बिक्री रिपोर्ट की है। ओक्यू पॉलिमर्स एलएलसी ने दावा किया है कि उसने केवल अपने संबंधित निर्यातक, ओक्यू मार्केटिंग एलएलसी के माध्यम से भारत को अप्रत्यक्ष निर्यात किए हैं। ओक्यू पॉलिमर्स एलएलसी ने जहाजरानी लागत के कारण निर्यात कीमत में समायोजनों का दावा किया है। ओक्यू मार्केटिंग एलएलसी ने उधार लागत के लिए समायोजन का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक ओक्यू समूह द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, निर्यात कीमत में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए निर्यात कीमत।

89. ओमान से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

कतर से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

कतोफिन कंपनी लिमिटेड क्यू.पी.जे.एस.सी ("कतोफिन") के लिए सामान्य मूल्य

90. कतोफिन ने अपने घरेलू बाजार में *** मीट्रिक टन की घरेलू बिक्री रिपोर्ट की है। ये बिक्री इसके संबंधित निर्यातक कतर रासायनिक और पेट्रोरासायनिक विपणन और वितरण कंपनी (मुंतजात) क्यू.पी.जे.एस.सी ("मुंतजात") के माध्यम से की गई है। कतोफिन ने विपणन शुल्क के कारण समायोजनों का दावा किया है। इसके अलावा, इसके संबंधित निर्यातक, मुंतजात ने बीमा, आंतरिक परिवहन, उधार लागत, एलसी प्रभार, बैंक प्रभार, उधार बीमा और दस्तावेजीकरण प्रभारों के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक कतोफिन और इसके संबंधित निर्यातकों द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, सामान्य मूल्य में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। कतोफिन द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत, जहाँ तक उसी का सत्यापन किया जा सकता था और कतोफिन द्वारा कानूनी रूप से प्रमाणित की जा सकती थी, प्राधिकारी द्वारा विचार की गई है। यह ध्यान दिया गया है कि 80% से अधिक घरेलू बिक्री लाभदायक पाई गई, तदनुसार, सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए सभी बिक्री पर विचार किया गया है। इस प्रकार निर्धारित एक्स-फैक्ट्री सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित किया गया है।

असहयोगी उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य।

91. कतर से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

कतोफिन के लिए निर्यात कीमत

92. कतोफिन ने जांच अवधि के दौरान एनएमजी पीसीएन के *** मीट्रिक टन निर्यात की बिक्री रिपोर्ट की है। कतोफिन ने दावा किया है कि उसने केवल अपने संबंधित निर्यातकों, मुंतजात, कतरएनर्जी मार्केटिंग और टोटल पेट्रोकेमिकल्स फ्रांस - कतर शाखा कार्यालय के माध्यम से भारत को अप्रत्यक्ष निर्यात किए हैं। कतोफिन ने आंतरिक परिवहन के कारण निर्यात कीमत में समायोजनों का दावा किया है। टोटल पेट्रोकेमिकल्स फ्रांस - कतर शाखा कार्यालय ने समुद्री माल भाड़ा, बीमा, उधार लागत, बिल ऑफ लेडिंग शुल्क, लिफ्ट ऑन लिफ्ट ऑफ

प्रभार, सीमा शुल्क प्रभार, एलसी प्रभार, उधार बीमा और दस्तावेजीकरण प्रभारों का दावा किया है। कतर एनर्जी मार्केटिंग ने समुद्री माल भाड़ा, बीमा, उधार लागत, एलसी प्रभार, बैंक प्रभार, उधार बीमा और दस्तावेजीकरण प्रभारों के कारण समायोजनों का दावा किया है। मुंतजात ने समुद्री माल भाड़ा, बीमा, उधार लागत, बिल ऑफ लेडिंग, लिफ्ट ऑन लिफ्ट ऑफ, सीमा शुल्क प्रभार, एलसी प्रभार, सीमा शुल्क प्रभार, बैंक प्रभार, उधार बीमा और दस्तावेजीकरण प्रभारों पर समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक कतोफिन और इसके संबंधित निर्यातकों द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, निर्यात कीमत में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए निर्यात कीमत।

93. कतर से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

सऊदी अरब से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

केम्या के लिए सामान्य मूल्य

94. केम्या ने जांच अवधि में एनएमजी पीसीएन की *** मीट्रिक टन घरेलू बिक्री रिपोर्ट की है। सभी घरेलू बिक्री संबंधित निर्यातक सैबिक के माध्यम से की गई है। उत्पादक ने कोई समायोजन दावा नहीं किया है। सैबिक ने हैंडलिंग और पैकेजिंग, दस्तावेजीकरण, भंडारण, स्थल परिवहन और उधार बीमा के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक केम्या द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, सामान्य मूल्य में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है।
95. प्राधिकारी ने पाया कि केम्या को छोड़कर सऊदी अरब में अन्य सभी उत्पादक जो केम्या से संबंधित हैं और एक ही बिक्री चैनल (सैबिक के माध्यम से) का उपयोग कर रहे हैं, ने विक्रय और वितरण व्यय का दावा किया है। केम्या ने बाद में अपनी पूरक प्रश्नावली प्रतिक्रिया में भी कोई समायोजन दावा न करना जारी रखा। यह सत्यापित करने के लिए कि क्या ऐसी

लागते इसके संबंधित निर्यातक द्वारा वहन की गई थीं, प्राधिकारी ने अन्य उत्पादकों के लिए सैबिक द्वारा दावा किए गए प्रति इकाई समायोजनों की जाँच की और पाया कि केम्या के लिए सैबिक द्वारा वहन किए जाने वाले प्रति इकाई व्यय अन्य उत्पादकों की ही सीमा में थे। प्राधिकारी ने यह भी ध्यान दिया कि सैबिक को की गई बिक्री एक्स-फैक्ट्री नहीं बल्कि एफओबी लेन-देन थी। प्राधिकारी ने यह भी ध्यान दिया कि केम्या अपने संबंधित उत्पादकों के समान भौगोलिक क्षेत्र में स्थित था और इसलिए, विक्रय और वितरण व्यय के लिए समायोजन रिपोर्ट न करने का कोई कारण नहीं था। चूंकि अन्य सभी उत्पादक विक्रय और वितरण व्यय वहन कर रहे थे जिसके अतिरिक्त सैबिक भी ऐसी वस्तुओं को बेचने में व्यय वहन कर रहा था, प्राधिकारी ने एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार इसके संबंधित उत्पादकों के अनुबंध 4क में रिपोर्ट की गई प्रति इकाई दर लागू करके केम्या के विक्रय मूल्य को भी समायोजित किया। इसके अलावा, केम्या द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत, जहाँ तक उसी का सत्यापन किया जा सकता था और केम्या द्वारा कानूनी रूप से प्रमाणित की जा सकती थी, प्राधिकारी द्वारा विचार की गई है। यह ध्यान दिया गया है कि केवल ***% घरेलू बिक्री लाभदायक पाई गई, तदनुसार, सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए केवल लाभदायक बिक्री पर विचार किया गया है। इस प्रकार निर्धारित एक्स-फैक्ट्री सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित किया गया है।

पेट्रोकेम्या के लिए सामान्य मूल्य

96. पेट्रोकेम्या ने जांच अवधि में एनएमजी पीसीएन की ***मीट्रिक टन घरेलू बिक्री रिपोर्ट की है। सभी घरेलू बिक्री संबंधित निर्यातक सैबिक के माध्यम से की गई है। पेट्रोकेम्या ने विक्रय और वितरण व्यय के कारण समायोजनों का दावा किया है। सैबिक ने हैंडलिंग और पैकेजिंग, दस्तावेजीकरण, भंडारण, स्थल परिवहन और उधार बीमा के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक पेट्रोकेम्या द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, सामान्य मूल्य में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। पेट्रोकेम्या द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत, जहाँ तक उसी का सत्यापन किया जा सकता था और पेट्रोकेम्या द्वारा कानूनी रूप से प्रमाणित की जा सकती थी, प्राधिकारी द्वारा विचार की गई है। प्राधिकारी ने व्यापार के सामान्य क्रम का परीक्षण करने के लिए ऐसी लागत का उपयोग किया। यह ध्यान दिया गया है कि 80% से अधिक घरेलू बिक्री लाभदायक पाई गई, तदनुसार, सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए सभी बिक्री पर विचार

किया गया है। इस प्रकार निर्धारित एक्स-फैक्ट्री सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित किया गया है।

शर्क के लिए सामान्य मूल्य

97. शर्क ने जांच अवधि में एनएमजी पीसीएन की ***मीट्रिक टन घरेलू बिक्री रिपोर्ट की है। ऊपर उल्लिखित कारणों से, शर्क का सामान्य मूल्य एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार निर्धारित किया गया है। प्राधिकारी ने सऊदी अरब से सहयोगी उत्पादकों के उच्चतम सामान्य मूल्य को शर्क के सामान्य मूल्य के रूप में विचार किया है। इस प्रकार निर्धारित एक्स-फैक्ट्री सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित किया गया है।

यूनाइटेड के लिए सामान्य मूल्य

98. यूनाइटेड ने जांच अवधि में एनएमजी पीसीएन की ***मीट्रिक टन घरेलू बिक्री रिपोर्ट की है। सभी घरेलू बिक्री संबंधित निर्यातक सैबिक के माध्यम से की गई है। यूनाइटेड ने आंतरिक परिवहन के कारण समायोजनों का दावा किया है। सैबिक ने हैंडलिंग और पैकेजिंग, दस्तावेजीकरण, भंडारण, स्थल परिवहन और उधार बीमा के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक यूनाइटेड द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, सामान्य मूल्य में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। यूनाइटेड द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत, जहाँ तक उसी का सत्यापन किया जा सकता था और यूनाइटेड द्वारा कानूनी रूप से प्रमाणित की जा सकती थी, प्राधिकारी द्वारा विचार की गई है। प्राधिकारी ने व्यापार के सामान्य क्रम का परीक्षण करने के लिए ऐसी लागत का उपयोग किया। यह ध्यान दिया गया है कि 80% से अधिक घरेलू बिक्री लाभदायक पाई गई, और तदनुसार, सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए सभी बिक्री पर विचार किया गया है। इस प्रकार निर्धारित एक्स-फैक्ट्री सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित किया गया है।

राबिघ रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल कंपनी के लिए सामान्य मूल्य

99. आरआरपीसी ने जांच अवधि में एनएमजी पीसीएन की *** मीट्रिक टन घरेलू बिक्री रिपोर्ट की है। ऊपर उल्लिखित कारणों से, आरआरपीसी का सामान्य मूल्य एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार निर्धारित किया गया है। प्राधिकारी ने सऊदी अरब से सहयोगी उत्पादकों के उच्चतम सामान्य मूल्य को आरआरपीसी के सामान्य मूल्य के रूप में विचार किया है। इस प्रकार निर्धारित एक्स-फैक्ट्री सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित किया गया है।

सदारा केमिकल कंपनी के लिए सामान्य मूल्य

100. सदारा केमिकल कंपनी ने अपने घरेलू बाजार में *** मीट्रिक टन की घरेलू बिक्री रिपोर्ट की है। ये बिक्री इसकी संबंधित संस्थाओं डाउ मटेरियल साइंसेज कंपनी और सैबिक के माध्यम से की गई है। सदारा ने आंतरिक परिवहन, उधार लागत, पैकिंग लागत और विपणन शुल्क के कारण समायोजनों का दावा किया है। डाउ मटेरियल साइंसेज कंपनी ने आंतरिक परिवहन, उधार लागत, पैकिंग लागत और किसी अन्य कटौती के कारण समायोजनों का दावा किया है। सैबिक ने हैंडलिंग और पैकिंग, दस्तावेजीकरण, भंडारण, स्थल परिवहन और उधार बीमा के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक सदारा द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, सामान्य मूल्य में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। सदारा द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत, जहाँ तक उसी का सत्यापन किया जा सकता था और सदारा द्वारा कानूनी रूप से प्रमाणित की जा सकती थी, प्राधिकारी द्वारा विचार की गई है। प्राधिकारी ने व्यापार के सामान्य क्रम का परीक्षण करने के लिए ऐसी लागत का उपयोग किया। यह ध्यान दिया गया है कि सभी बिक्री हानिकारक पाई गई।

101. चूंकि सदारा की सभी घरेलू बिक्री हानिकारक पाई गई, और चूंकि सऊदी अरब में अन्य उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य उपलब्ध था, प्राधिकारी ने सदारा के सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए सऊदी अरब में अन्य सहयोगी उत्पादकों के आंकड़ों पर भरोसा किया। प्राधिकारी ने सऊदी अरब में मात्रा के संदर्भ में उच्चतम घरेलू बिक्री वाले पूर्णतः सहयोगी उत्पादकों के एनएमजी पीसीएन के सामान्य मूल्य पर विचार किया है। इस प्रकार निर्धारित एक्स-फैक्ट्री सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित किया गया है।

यानसाब के लिए सामान्य मूल्य

102. यानसाब ने अपने घरेलू बाजार में *** मीट्रिक टन की घरेलू बिक्री रिपोर्ट की है। ये बिक्री इसकी संबंधित संस्था सैबिक के माध्यम से हुई है। यानसाब ने भंडारण और परिवहन लागतों के कारण समायोजनों का दावा किया है। सैबिक ने हैंडलिंग और पैकेजिंग, दस्तावेजीकरण, भंडारण, स्थल परिवहन और उधार बीमा के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक यानसाब द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, सामान्य मूल्य में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। यानसाब द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत, जहाँ तक उसी का सत्यापन किया जा सकता था और यानसाब द्वारा कानूनी रूप से प्रमाणित की जा सकती थी, प्राधिकारी द्वारा विचार की गई है। प्राधिकारी ने व्यापार के सामान्य क्रम का परीक्षण करने के लिए ऐसी लागत का उपयोग किया। यह ध्यान दिया गया है कि 80% से अधिक घरेलू बिक्री लाभदायक पाई गई, तदनुसार, सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए सभी बिक्री पर विचार किया गया है। इस प्रकार निर्धारित एक्स-फैक्ट्री सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित किया गया है।

असहयोगी उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य।

103. सऊदी अरब से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

सऊदी अरब से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

केम्या के लिए निर्यात कीमत

104. केम्या ने जांच अवधि के दौरान एनएमजी पीसीएन के *** मीट्रिक टन निर्यात रिपोर्ट किए हैं। केम्या ने दावा किया है कि उसने केवल अपने संबंधित निर्यातकों, अर्थात् सैबिक-एसएपीपीएल और ईएमसीएपी के माध्यम से भारत को अप्रत्यक्ष निर्यात किए हैं। केम्या ने अपनी प्रतिक्रिया में कोई समायोजन दावा नहीं किया है। सामान्य मूल्य के समान, प्राधिकारी ने पाया कि केम्या को छोड़कर सऊदी अरब में अन्य सभी उत्पादक जो केम्या से संबंधित हैं और एक ही बिक्री चैनल (सैबिक के माध्यम से) का उपयोग कर रहे हैं, ने विक्रय और

वितरण व्यय का दावा किया है। केम्या ने बाद में अपनी पूरक प्रश्नावली प्रतिक्रिया में यह भी कहा कि उसने निर्यातों के संबंध में कोई व्यय वहन नहीं किया। यह सत्यापित करने के लिए कि क्या ऐसी लागतें इसके संबंधित निर्यातकों द्वारा वहन की गई थीं, प्राधिकारी ने अन्य उत्पादकों के लिए सैबिक द्वारा दावा किए गए प्रति इकाई समायोजनों की जाँच की और पाया कि केम्या के लिए सैबिक द्वारा वहन किए जाने वाले प्रति इकाई व्यय अन्य उत्पादकों की ही सीमा में थे। प्राधिकारी ने यह भी ध्यान दिया कि सैबिक को की गई बिक्री एक्स-फैक्ट्री नहीं बल्कि एफओबी लेन-देन थी। प्राधिकारी ने यह भी ध्यान दिया कि केम्या अपने संबंधित उत्पादकों के समान भौगोलिक क्षेत्र में स्थित था और इसलिए, विक्रय और वितरण व्यय के लिए समायोजन रिपोर्ट न करने का कोई कारण नहीं था। चूंकि अन्य सभी उत्पादक विक्रय और वितरण व्यय वहन कर रहे थे जिसके अतिरिक्त सैबिक भी ऐसी वस्तुओं को बेचने में व्यय वहन कर रहा था, प्राधिकारी ने इसके संबंधित उत्पादकों के अनुबंध 3क में रिपोर्ट की गई प्रति इकाई दर लागू करके केम्या के विक्रय मूल्य को भी समायोजित किया।

105. सैबिक ने छूटों, पतन प्रभारों, समुद्री माल भाड़ा, हैंडलिंग और पैकिंग, दस्तावेजीकरण, अतिरिक्त पतन, अन्य व्यय, भंडारण, गोदाम में लेना, बैंक प्रभार, सीमा शुल्क निकासी, विलंब शुल्क, बीमा, युद्ध जोखिम, स्थल परिवहन, चढ़ाने/उतारने और उधार बीमा के कारण समायोजनों का दावा किया है। एसएपीपीएल ने एलसी बीमा प्रीमियम, उधार बीमा, बाह्यस्रोत के शुल्क, बैंक प्रभार और कमीशन के कारण समायोजनों का दावा किया है। ईएमसीएपी ने समुद्री माल भाड़ा, बीमा, पतन और अन्य संबंधित व्यय, बट्टा, उधार लागत और प्रचार कमीशन के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, निर्यात कीमत में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

पेट्रोकेम्या के लिए निर्यात कीमत

106. पेट्रोकेम्या ने जांच अवधि के दौरान एनएमजी पीसीएन के *** मीट्रिक टन निर्यात रिपोर्ट किए हैं। पेट्रोकेम्या ने दावा किया है कि उसने केवल अपने संबंधित निर्यातकों, अर्थात् सैबिक-एसएपीपीएल के माध्यम से भारत को अप्रत्यक्ष निर्यात किए हैं। पेट्रोकेम्या ने विक्रय और वितरण व्यय के कारण समायोजनों का दावा किया है। सैबिक ने छूटों, पतन प्रभारों, समुद्री माल भाड़ा, हैंडलिंग और पैकिंग, दस्तावेजीकरण, अतिरिक्त पतन, अन्य व्यय,

भंडारण, गोदाम में लेना, बैंक प्रभार, सीमा शुल्क निकासी, विलंब शुल्क, बीमा, युद्ध जोखिम, स्थल परिवहन, चढ़ाने/उतारने और उधार बीमा के कारण समायोजनों का दावा किया है। एसएपीपीएल ने एलसी बीमा प्रीमियम, उधार बीमा, बाह्यस्रोतन शुल्क, बैंक प्रभार और कमीशन के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, निर्यात कीमत में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

शर्क के लिए निर्यात कीमत

107. शर्क ने जांच अवधि के दौरान एनएमजी पीसीएन के *** मीट्रिक टन निर्यात रिपोर्ट किए हैं। शर्क ने दावा किया है कि उसने केवल अपने संबंधित निर्यातकों, अर्थात् सैबिक-एसएपीपीएल और एसपीडीसी-मित्सुबिशी के माध्यम से भारत को अप्रत्यक्ष निर्यात किए हैं। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, मित्सुबिशी कॉरपोरेशन, शर्क के संबंधित पक्ष ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है। तदनुसार, शर्क का बिक्री चैनल अपूर्ण बना हुआ है और इसलिए, प्राधिकारी ने एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर शर्क के लिए निर्यात कीमत निर्धारित किया है और सऊदी अरब से सहयोगी उत्पादकों के न्यूनतम निर्यात कीमत पर विचार किया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

यूनाइटेड के लिए निर्यात कीमत

108. यूनाइटेड ने जांच अवधि के दौरान एनएमजी पीसीएन के *** मीट्रिक टन निर्यात रिपोर्ट किए हैं। यूनाइटेड ने दावा किया है कि उसने केवल अपने संबंधित निर्यातकों, अर्थात् सैबिक-एसएपीपीएल के माध्यम से भारत को अप्रत्यक्ष निर्यात किए हैं। यूनाइटेड ने आंतरिक परिवहन के कारण निर्यात कीमत में समायोजनों का दावा किया है। सैबिक ने छूटों, पत्तन प्रभारों, समुद्री माल भाड़ा, हैंडलिंग और पैकिंग, दस्तावेजीकरण, अतिरिक्त पत्तन, अन्य व्यय, भंडारण, गोदाम में लेना, बैंक प्रभार, सीमा शुल्क निकासी, विलंब शुल्क, बीमा, युद्ध जोखिम, स्थल परिवहन, चढ़ाने/उतारने और उधार बीमा के कारण समायोजनों का दावा किया है। एसएपीपीएल ने एलसी बीमा प्रीमियम, उधार बीमा, बाह्यस्रोतन शुल्क, बैंक प्रभार और कमीशन के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक दस्तावेजी साक्ष्य से

ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, निर्यात कीमत में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

राबिघ रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल कंपनी के लिए निर्यात कीमत

109. आरआरपीसी ने जांच अवधि के दौरान एनएमजी पीसीएन के *** मीट्रिक टन निर्यात रिपोर्ट किए हैं। आरआरपीसी ने दावा किया है कि उसने केवल अपने संबंधित निर्यातकों, अर्थात् सैबिक-एसएपीपीएल और सुमितोमो केमिकल एशिया पीटीई लिमिटेड के माध्यम से भारत को अप्रत्यक्ष निर्यात किए हैं। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, सुमितोमो केमिकल एशिया पीटीई लिमिटेड, आरआरपीसी के संबंधित पक्ष ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है। तदनुसार, आरआरपीसी का बिक्री चैनल अपूर्ण बना हुआ है और इसलिए, प्राधिकारी ने एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर आरआरपीसी के लिए निर्यात कीमत निर्धारित किया है और सऊदी अरब से सहयोगी उत्पादकों के न्यूनतम निर्यात कीमत पर विचार किया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

सदारा केमिकल कंपनी के लिए निर्यात कीमत

110. एससीसी ने जांच अवधि के दौरान एनएमजी पीसीएन के *** मीट्रिक टन निर्यात की बिक्री रिपोर्ट की है। एससीसी ने दावा किया है कि उसने केवल अपने संबंधित निर्यातकों, अर्थात् सैबिक-एसएपीपीएल, डाउ सऊदी अरब मार्केटिंग बी.वी., डाउ केमिकल पैसिफिक (सिंगापुर) प्राइवेट लिमिटेड, डाउ केमिकल पैसिफिक (सिंगापुर) प्रा. लिमिटेड - दुबई शाखा और डाउ केमिकल इंटरनेशनल प्रा. लिमिटेड दुबई शाखा के माध्यम से भारत को अप्रत्यक्ष निर्यात किए हैं। एससीसी ने आंतरिक परिवहन, पत्तन और अन्य संबंधित व्यय, पैकिंग लागत, उधार लागत और विपणन शुल्क के कारण समायोजनों का दावा किया है। डाउ सऊदी मार्केटिंग बी.वी. ने सदारा से डाउ गोदाम तक माल भाड़ा, बीमा, गोदाम लागत के कारण समायोजनों का दावा किया है, डाउ पैसिफिक सिंगापुर ने सऊदी अरब से डाउ गोदाम तक माल भाड़ा, बीमा, पत्तन और अन्य संबंधित व्यय के कारण समायोजनों का दावा किया है। डाउ केमिकल पैसिफिक (सिंगापुर) प्रा. लिमिटेड - दुबई शाखा ने बीमा और उधार लागत के कारण समायोजनों का दावा किया है। डीसीआईपीएल ने ऋण लागत के मद में समायोजन का दावा किया है।

111. सैबिक ने छूटों, पत्तन प्रभारों, समुद्री माल भाड़ा, हैंडलिंग और पैकिंग, दस्तावेजीकरण, अतिरिक्त पत्तन, अन्य व्यय, भंडारण, गोदाम में लेना, बैंक प्रभार, सीमा शुल्क निकासी, विलंब शुल्क, बीमा, युद्ध जोखिम, स्थल परिवहन, चढ़ाने/उतारने और उधार बीमा के कारण समायोजनों का दावा किया है। एसएपीपीएल ने एलसी बीमा प्रीमियम, उधार बीमा, बाह्यस्रोतन शुल्क, बैंक प्रभार और कमीशन के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, निर्यात कीमत में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

यानसाब के लिए निर्यात कीमत

112. यानसाब ने जांच अवधि के दौरान एनएमजी पीसीएन के *** मीट्रिक टन निर्यात की बिक्री रिपोर्ट की है। यानसाब ने दावा किया है कि उसने केवल अपने संबंधित निर्यातकों, अर्थात् सैबिक-एसएपीपीएल के माध्यम से भारत को अप्रत्यक्ष निर्यात किए हैं। यानसाब ने आंतरिक परिवहन के कारण निर्यात कीमत में समायोजनों का दावा किया है। सैबिक ने छूटों, पत्तन प्रभारों, समुद्री माल भाड़ा, हैंडलिंग और पैकिंग, दस्तावेजीकरण, अतिरिक्त पत्तन, अन्य व्यय, भंडारण, गोदाम में लेना, बैंक प्रभार, सीमा शुल्क निकासी, विलंब शुल्क, बीमा, युद्ध जोखिम, स्थल परिवहन, चढ़ाने/उतारने और उधार बीमा के कारण समायोजनों का दावा किया है। एसएपीपीएल ने एलसी बीमा प्रीमियम, उधार बीमा, बाह्यस्रोतन शुल्क, बैंक प्रभार और कमीशन के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, निर्यात कीमत में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए निर्यात कीमत।

113. सऊदी अरब से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

यूई से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

अबू धाबी पॉलिमर्स कंपनी लिमिटेड ("एडीपीसीएल") के लिए सामान्य मूल्य

114. एडीपीसीएल ने अपने घरेलू बाजार में *** मीट्रिक टन की घरेलू बिक्री रिपोर्ट की है। एडीपीसीएल ने घरेलू बाजार में एनएमजी और एमजी दोनों पीसीएन बेचे हैं। ये बिक्री इसकी संबंधित संस्था बोरौज पीटीई लिमिटेड के माध्यम से हुई है। एडीपीसीएल ने स्थल परिवहन, गोदाम और हैंडलिंग लागत, उधार लागत, पैकिंग लागत के कारण समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, सामान्य मूल्य में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त, इसके संबंधित निर्यातक, बोरौज ने उधार लागत और ग्राहकों को दी गई छूटों के कारण समायोजनों का दावा किया है। एडीपीसीएल द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत, जहाँ तक उसी का सत्यापन किया जा सकता था और एडीपीसीएल द्वारा कानूनी रूप से प्रमाणित की जा सकती थी, प्राधिकारी द्वारा विचार की गई है। प्राधिकारी ने व्यापार के सामान्य क्रम का परीक्षण करने के लिए ऐसी लागत का उपयोग किया। यह ध्यान दिया गया है कि 80% से अधिक घरेलू बिक्री लाभदायक पाई गई, तदनुसार, सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए सभी बिक्री पर विचार किया गया है। इस प्रकार निर्धारित एक्स-फैक्ट्री सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित किया गया है।

असहयोगी उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य।

115. यूई से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

एडीपीसीएल के लिए निर्यात कीमत

116. एडीपीसीएल ने जांच अवधि के दौरान एनएमजी और एमपीजी पीसीएन के *** मीट्रिक टन निर्यात की बिक्री रिपोर्ट की है। एडीपीसीएल ने दावा किया है कि उसने केवल अपने संबंधित निर्यातक बोरौज पीटीई लिमिटेड और असंबंधित निर्यातक, एसआरजे ग्लोबल एफजेडई के माध्यम से भारत को अप्रत्यक्ष निर्यात किए हैं। एडीपीसीएल ने समुद्री माल भाड़ा और बीमा,

आंतरिक परिवहन, पत्तन गोदाम और अन्य व्यय, उधार लागत और पैकिंग लागत के कारण निर्यात कीमत में समायोजनों का दावा किया है। बोरौज पीटीई लिमिटेड ने उधार लागत, भारत कार्यालय की नियत लागत और छूटों के कारण समायोजनों का दावा किया है। एसआरजे ग्लोबल एफजेडई ने कोई समायोजन दावा नहीं किया है। प्राधिकारी ने जहाँ तक दस्तावेजी साक्ष्य से ऐसे दावों का सत्यापन किया जा सकता था, सामान्य मूल्य में ऐसे समायोजनों को स्वीकार किया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए निर्यात कीमत।

117. यूई से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत एडी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत नीचे पाटन मार्जिन तालिका में उल्लिखित है।

संबंधित उत्पादकों और निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन

118. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध जांच में कई सहयोगी उत्पादक और निर्यातक एक-दूसरे से संबंधित हैं और संबंधित कंपनियों का एक समूह बनाते हैं। पाटन/क्षति अंतर के निर्धारण के लिए संबंधित निर्यातक उत्पादकों और निर्यातकों को एकल संस्था मानना और इस प्रकार उनके लिए एकल पाटन/क्षति अंतर निर्धारित करना प्राधिकारी की सुसंगत प्रथा रही है। यह विशेष रूप से इसलिए है क्योंकि व्यक्तिगत पाटन/क्षति अंतरों की गणना करना संबंधित निर्यातक उत्पादकों को न्यूनतम व्यक्तिगत पाटन/क्षति अंतर वाली कंपनी के माध्यम से भारत को अपने निर्यात प्रेषित करने में सक्षम बनाकर पाटन रोधी उपायों के परिवर्तन को प्रोत्साहित कर सकता है, इस प्रकार उन्हें अप्रभावी बना सकता है।
119. उपरोक्त के अनुसार, संबंधित उत्पादकों और निर्यातकों को एकल संस्था माना गया है और सहयोगी संबंधित उत्पादकों और निर्यातकों के पाटन/क्षति अंतरों के भारित औसत के आधार पर परिकल्पित एकल पाटन/क्षति अंतर आरोपित किया गया है।

च.3.2 पाटन मार्जिन

120. वर्तमान जांच में निर्धारित सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन निम्नानुसार हैं:

पाटन मार्जिन तालिका

उत्पादक	पीसीएन	सामान्य मूल्य (\$/मी.टन)	निर्यात कीमत (\$/मी.टन)	पाटन मार्जिन (\$/मी.टन)	पाटन मार्जिन (%)	पाटन मार्जिन (सीमा)
कुवैत						
इक्वेट पेट्रोकेमिकल कंपनी	एनएम जी	***	***	***	***	10-20
अन्य	सभी	***	***	***	***	20-30
सऊदी अरब						
अल-जुबैल पेट्रोकेमिकल कंपनी ("केम्या")	एनएम जी	***	***	***	***	0-10
अरेबियन पेट्रोकेमिकल कंपनी ("पेट्रोकेम्या")	एनएम जी	***	***	***	***	0-10
ईस्टर्न पेट्रोकेमिकल कंपनी ("शर्क")	एनएम जी	***	***	***	***	20-30
जुबैल यूनाइटेड पेट्रोकेमिकल कंपनी ("यूनाइटेड")	एनएम जी	***	***	***	***	0-10
राबिघ रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल कंपनी	एनएम जी	***	***	***	***	20-30
सदारा केमिकल कंपनी	एनएम	***	***	***	***	0-10

उत्पादक	पीसीएन	सामान्य मूल्य (\$/मी.टन)	निर्यात कीमत (\$/मी.टन)	पाटन मार्जिन (\$/मी.टन)	पाटन मार्जिन (%)	पाटन मार्जिन (सीमा)
	जी					
यान्बू राष्ट्रीय पेट्रोकेमिकल कंपनी ("यानसाब")	एनएमजी	***	***	***	***	0-10
सऊदी अरामको - सैबिक समूह	एनएमजी	***	***	***	***	10-20
अन्य	सभी	***	***	***	***	20-30
कतर						
कतोफिन कंपनी लिमिटेड क्यू.पी.जे.एस.सी	एनएमजी	***	***	***	***	(10)-0
ओमान						
ओक्यू पॉलिमर्स एल.एल.सी.	एनएमजी	***	***	***	***	0-10
अन्य	सभी	***	***	***	***	10-20
यूएई						
अबू धाबी पॉलिमर्स कंपनी लिमिटेड	एनएमजी	***	***	***	***	0-10
अबू धाबी पॉलिमर्स कंपनी लिमिटेड	एमजी	***	***	***	***	(10)-0

उत्पादक	पीसीएन	सामान्य मूल्य (\$/मी.टन)	निर्यात कीमत (\$/मी.टन)	पाटन मार्जिन (\$/मी.टन)	पाटन मार्जिन (%)	पाटन मार्जिन (सीमा)
अबू धाबी पॉलिमर्स कंपनी लिमिटेड	भारित औसत	***	***	***	***	0-10
अन्य	सभी	***	***	***	***	0-10
मलेशिया						
कोई भी	सभी	***	***	***	***	40-50

छ. क्षति का आकलन

छ.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

121. क्षति और कारणात्मक संबंध के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:
- मांग-आपूर्ति अंतराल का अस्तित्व या अनुपस्थिति क्षति का निर्धारक नहीं है, और आवेदक की भारतीय मांग को पूरा करने की क्षमता, आवेदक को प्रतिकूल मात्रा और मूल्य प्रभावों को प्रदर्शित करने के दायित्व से मुक्त नहीं करती।
 - प्राधिकारी ने सीमलेस ट्यूब और पाइप में जांच समाप्त कर दी थी जब प्रमुख उत्पादक, महाराष्ट्र सीमलेस लिमिटेड, सूचना प्रदान करने में विफल रहा।
 - कतर राज्य से आयात 2021-22 की तुलना में गिर गए हैं और लगभग 65% कम हो गए हैं। इतनी नाटकीय गिरावट कतर राज्य से कथित पाटित किए गए आयातों से क्षति के किसी भी दावे को खारिज करती है। वास्तव में, कतर राज्य से आयात एचएमईएल के उत्पादन शुरू होने से पहले ही घटने लगे थे।
 - जबकि कतर राज्य से आयात तेजी से गिरा, घरेलू उत्पादन 100 से 826 सूचकांक अंकों तक भारी रूप से बढ़ा, जबकि मांग 100 से 119 सूचकांक अंकों तक बढ़ी, इस

- प्रकार स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि कतर राज्य से आयातों का घरेलू उद्योग पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा।
- v. जबकि कुवैत से आयात जांच अवधि में 153 सूचकांक अंकों से बढ़ा, घरेलू उद्योग की बिक्री और उत्पादन 826 और 798 सूचकांक अंकों से बढ़े। यह प्रदर्शित करता है कि कुवैत से आयातों ने घरेलू उद्योग के घरेलू उत्पादन और बिक्री पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाला है।
 - vi. जबकि क्षति अवधि के दौरान ओमान से आयातों की मात्रा स्थिर रही, घरेलू उद्योग की बिक्री और उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है। ओमान से आयात पर्याप्त रूप से संकुचित हुए हैं जबकि घरेलू उद्योग का हिस्सा काफी बढ़ा है।
 - vii. यूएई का कुल मांग में हिस्सा जांच अवधि में गिरा है और यूएई से आयातों की मात्रा में कोई प्रभावी वृद्धि नहीं हुई है।
 - viii. याचिका में संबद्ध आयातों की मात्रा में या तो निरपेक्ष रूप में या भारत में उत्पादन या उपभोग के सापेक्ष वृद्धि का कोई साक्ष्य नहीं है।
 - ix. याचिका में ओमान से आयातों की बढ़ी हुई मात्रा दिखाई देती है जबकि निर्यातक द्वारा आपूर्ति किए गए वास्तविक आंकड़े और सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध संगत तृतीय-पक्ष आंकड़े इसके विपरीत हैं। प्राधिकारी से अनुरोध है कि क्षति विश्लेषण करने से पूर्व इसकी जांच करें।
 - x. आवेदक ने मध्यवर्ती रुझानों की जांच किए बिना अंतिम बिंदु तुलनाओं पर भरोसा किया है। जैसा कि रूस - हल्के वाणिज्यिक वाहनों पर पाटन रोधी शुल्क में मान्यता दी गई, अंतिम बिंदु से अंतिम बिंदु की तुलना मध्यवर्ती घटनाक्रमों को छिपा सकती है और रुझानों की विकृत तस्वीर उत्पन्न कर सकती है।
 - xi. इसके अलावा यूरोपीय समुदायों - ब्राजील से तन्य ढलवाँ लोहे की ट्यूब या पाइप फिटिंग पर पाटन रोधी शुल्क के अनुसार, जांच को केवल अंतिम बिंदुओं की तुलना के बजाय प्रत्येक क्षति कारकों और सूचकांकों में वास्तविक मध्यवर्ती रुझानों को ध्यान में रखना चाहिए।
 - xii. संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा ने निरंतर वृद्धि का प्रवृत्ति नहीं दिखाया है बल्कि 2022-23 में 5,28,590 मीट्रिक टन से गिरकर 2023-24 में 4,85,524 मीट्रिक टन और पुनः जांच अवधि में 4,15,013 मीट्रिक टन हो गई, जो 2022-23 से मात्रा में 21 प्रतिशत से अधिक की गिरावट है।
 - xiii. याचिका यह स्पष्ट नहीं करती कि गिरते आयातों ने घरेलू उद्योग को क्षति कैसे पहुँचाई।

- xiv. आवेदक ही बड़ी हुई भारतीय मांग के एकमात्र लाभार्थी रहे हैं। आयातों का गिरता हिस्सा दर्शाता है कि ऐसे आयातों ने आवेदकों और समग्र रूप से भारतीय उद्योग की बिक्री पर प्रभाव नहीं डाला है।
- xv. आयात मात्राओं में गिरावट का आयात मात्रा में वृद्धि के साथ संपाती होना स्पष्ट रूप से स्थापित करता है कि कोई सतत चोटिल आयात दबाव नहीं है।
- xvi. आवेदकों की बिक्री में वृद्धि भारतीय मांग में वृद्धि से अधिक है। यदि एचएमईएल के उत्पादन के कारण आयात गिरे हैं, तो यह दर्शाता है कि एचएमईएल संबद्ध देशों से आयातों को प्रतिस्थापित करने में सक्षम रहा है।
- xvii. आवेदकों की बिक्री जांच अवधि में 698% बढ़ी है। संबद्ध देशों से संबद्ध आयात घरेलू आपूर्ति के अनुसार समायोजित हो गए हैं।
- xviii. कीमत प्रभाव और लाभप्रदता से संबंधित मुद्दे मात्रा प्रभाव से पृथक और असंबंधित हैं। मात्रा क्षति का अभाव आवेदकों की बिक्री और उनकी बाजार हिस्सेदारी में पर्याप्त वृद्धि के साथ-साथ वित्त वर्ष 2022-23 के बाद संबद्ध आयातों की बाजार हिस्सेदारी में गिरावट के तथ्य से स्पष्ट है।
- xix. आयात केवल 2021-22 और 2022-23 के बीच बढ़े और उसके बाद गिर गए हैं। संबद्ध देशों से आयात पिछले वर्ष की तुलना में 32 सूचकांक अंकों से काफी गिर गए हैं।
- xx. जांच अवधि में संबद्ध आयातों का कुल हिस्सा मात्र 15% था, जबकि आवेदक की बाजार हिस्सेदारी आधार वर्ष में 3% से बढ़कर जांच अवधि में 22% हो गई है।
- xxi. आयात मात्राओं में वृद्धि का आरोप लगाने के लिए चुनिंदा आंकड़ों पर भरोसा अनुपयुक्त है और प्रतिकूल मात्रा प्रभावों को स्थापित नहीं करता।
- xxii. आवेदक अन्य भारतीय उत्पादकों की बाजार हिस्सेदारी में सामान्य गिरावट पर भरोसा करके स्वयं को क्षति का दावा नहीं कर सकता क्योंकि अन्य घरेलू उत्पादकों ने आंकड़े प्रदान नहीं किए हैं।
- xxiii. चीन - जीओईएस में अपीलीय निकाय के निर्णय के अनुसार, प्राधिकारी को कीमतों में प्रासंगिक रुझानों की पहचान करने से परे जाना चाहिए और प्रदर्शित करना चाहिए कि संबद्ध आयातों में ऐसे रुझानों की घटना के लिए "व्याख्यात्मक बल" है। वर्तमान जांच पर इस मानक का अनुप्रयोग आयातों की पहुँच कीमत और आवेदक के विक्रय मूल्य के बीच सहसंबंध का अभाव प्रदर्शित करता है।

- xxiv. ईसी - बेड लिनेन और थाईलैंड एच-बीम्स में अपीलिय निकाय के निर्णय के अनुसार, जांच प्राधिकारी को सभी प्रासंगिक कारकों की जांच करना आवश्यक है और प्रमुख मापदंडों में सकारात्मक घटनाक्रमों की अवहेलना नहीं की जा सकती।
- xxv. याचिका में शामिल आंकड़े दर्शाते हैं कि क्षति अवधि में घरेलू उद्योग का निष्पादन स्थिर रहा है या सुधरा है।
- xxvi. मात्रात्मक मापदंडों में सुधारों की अवहेलना करने का यह प्रयास कि पूर्व के आंकड़े केवल एचपीएल से संबंधित हैं, अनुपयुक्त है।
- xxvii. घरेलू उद्योग ने कोई साक्ष्य प्रदान नहीं किया है कि आयातों ने घरेलू उत्पादन को विस्थापित किया है या उपलब्ध क्षमता के उपयोग को रोका है, तदनुसार घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं है।
- xxviii. एचएमईएल आधार वर्ष में अस्तित्व में नहीं था और इसलिए जांच अवधि में घरेलू उद्योग के क्षति मापदंडों की आधार वर्ष से तुलना करना आर्थिक और तार्किक रूप से दोषपूर्ण है।
- xxix. स्थापित क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री क्षति अवधि और जांच अवधि में तेजी से बढ़े हैं।
- xxx. घरेलू उद्योग ने क्षमता का 200% से अधिक विस्तार किया, उत्पादन 726% बढ़ाया, घरेलू बिक्री लगभग 698% बढ़ाई और अपने कार्यबल, मजदूरी और उत्पादकता का व्यापक विस्तार किया।
- xxxi. सुविधानुसार आयात रुझानों की व्याख्या करने के लिए एचएमईएल की नई क्षमता के चालू होने पर भरोसा करने के बाद, आवेदक कंपनियाँ वित्तीय क्षति का दावा करने के प्रयोजन से उसी प्रवृत्ति को चुनिंदा रूप से पाटित किए गए आयातों पर आरोपित नहीं कर सकतीं।
- xxxii. घरेलू उद्योग ने क्षति अवधि में अपनी बिक्री 300% बढ़ाई है। यह वृद्धि इंगित करती है कि विचाराधीन उत्पाद में घरेलू उत्पादकों का वित्तीय स्वास्थ्य अच्छा रहा है, अन्यथा एचएमईएल ने विचाराधीन उत्पाद बाजार में निवेश करने का निर्णय नहीं लिया होता।
- xxxiii. उत्पादकता, मजदूरी और रोजगार में लगातार सुधार हुआ है, जो तेजी से बढ़ती औद्योगिक गतिविधि और बेहतर प्रचालन दक्षता को इंगित करता है।
- xxxiv. मात्रात्मक मापदंडों में सुधारों की अवहेलना करने का यह प्रयास कि पूर्व के आंकड़े केवल एचपीएल से संबंधित हैं, अनुपयुक्त है।

- xxxv. आवेदक ने 2023-24 में आयात मात्राओं में गिरावट को स्वीकार किया है, जो एचएमईएल के उत्पादन शुरू होने के साथ संपाती है, यह प्रदर्शित करता है कि आयात बढ़ी हुई घरेलू आपूर्ति के अनुक्रिया में समायोजित हो गए हैं।
- xxxvi. घरेलू उद्योग ने समग्र देश-वार आंकड़ों पर भरोसा किया है और उत्तरदाताओं के निर्यातक-विशिष्ट मामले का खंडन नहीं करता कि सदारा समूह के भारत को निर्यात आधार वर्ष और पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में गिर गए।
- xxxvii. देश-स्तरीय आंकड़ों के आधार पर सदारा समूह को कोई प्रतिकूल मात्रा प्रभाव आरोपित नहीं किया जा सकता।
- xxxviii. ऐसी स्थिति जहाँ घरेलू उद्योग क्षमता का विस्तार करता है, अपनी बाजार हिस्सेदारी बनाए रखता है या सुधारता है, और घरेलू बाजार में महत्वपूर्ण मात्राएँ बेचना जारी रखता है, मात्रात्मक क्षति गठित करना नहीं कहा जा सकता।
- xxxix. याचिका में घरेलू उद्योग पर कीमतों के प्रभाव पर पर्याप्त और सटीक साक्ष्य नहीं है।
- xl. आवेदक संपूर्ण क्षति अवधि के लिए कीमत कटौती आंकड़े प्रस्तुत करने में विफल रहे हैं। जांच अवधि में मामूली कीमत कटौती था।
- xli. कीमत कटौती ने आवेदक को अपनी बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने से नहीं रोका है।
- xlii. सदारा का निर्यात कीमत याचिका में इंगित कीमतों से 20-30% अधिक है। इसलिए सदारा घरेलू उद्योग की कीमतों को न्यून नहीं कर रहा है और घरेलू उद्योग पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाल रहा है।
- xliii. यूई की पहुँच कीमत संबद्ध देशों में सर्वोच्च है और इसलिए, यूई से आयातों को कोई क्षति आरोप्य नहीं है। यूई से कीमत कटौती अत्यंत कम और नगण्य है।
- xliv. संबद्ध देशों की पहुँच कीमत क्षति अवधि के दौरान कमोबेश स्थिर रही है, केवल जांच अवधि में गिरावट दर्ज की गई, जो घरेलू उद्योग के आक्रामक मूल्य निर्धारण के कारण थी।
- xliv. एचपीएल और एचएमईएल घरेलू उत्पादकों को बिक्री-पश्चात प्रोत्साहन प्रदान करते हैं और कथित कीमत कटौती की गणना करते समय ऐसी बिक्री पश्चात छूटों को हटाया जाना चाहिए।
- xlvi. कीमत कटौती की मात्रा का पता केवल तभी लगाया जा सकता है जब बिक्री पश्चात छूटों सहित पूर्ण सूचना प्राधिकारी को प्रदान की जाए।
- xlvii. डीजीटीआर को विशेष रूप से एचएमईएल द्वारा विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन शुरू करने के बाद मासिक मूल्य भिन्नताओं की जांच करनी चाहिए।

- xlvi. आवेदक अपने विक्रय मूल्य को बिक्री लागत में वृद्धि/कमी के अनुरूप बढ़ाने/घटाने में सक्षम रहे हैं। संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों ने न तो आवेदकों की कीमतों को अवसादित किया है और न ही दबाया है। कीमत हास/न्यूनीकरण, यदि कोई है, आवेदकों द्वारा आक्रामक मूल्य निर्धारण के कारण है।
- xlix. आवेदक ने वित्त वर्ष 2023-24 में घरेलू विक्रय मूल्य घटाए जबकि आयात कीमतें स्थिर रहीं, और जांच अवधि में आयात कीमतों में कमी आवेदक की पूर्व मूल्य कटौती का अनुसरण करती थी।
- i. आवेदक की यह अनुरोध कि वह हानि पर बेच रहा था, कीमत कटौती स्थापित करने के लिए प्रासंगिक नहीं है, क्योंकि ऐसी हानियाँ उसकी अपनी लागत गति और वाणिज्यिक रणनीति के कारण हैं।
 - ii. घरेलू उद्योग ने जांच अवधि में अपनी कीमतें बढ़ाईं, भले ही संबद्ध आयातों की पहुँच कीमतें जांच अवधि में गिरीं।
 - iii. आवेदकों ने वित्त वर्ष 2022-23 से वित्त वर्ष 2023-24 में अपने विक्रय मूल्य 19% घटाए जबकि आयातों की पहुँच कीमत समान स्तर पर रही। इस प्रकार, आवेदकों द्वारा अपमार्जक और आक्रामक मूल्य निर्धारण के कारण निर्यातक अपनी कीमतें घटाने के लिए बाध्य हुए।
 - iiii. मूल्य दमन और अवसाद की गतियाँ अन्य समष्टि आर्थिक, उद्योग-कारकों और एचएमईएल के नव चालू संयंत्र के चालू होने के कारण हैं, न कि आयातों के कारण।
 - lv. आवेदकों के विक्रय मूल्य उनकी अपनी बिक्री लागत के अनुरूप गतिमान हुए हैं न कि आयातों की पहुँच कीमत के अनुरूप।
 - lv. जांच अवधि में आवेदकों के विक्रय मूल्यों में मामूली गिरावट 2021-22 में एक असाधारण मूल्य वृद्धि के पश्चात आती है और कीमत में गिरावट आयातों से गिरावट के दबाव के बजाय बाजार सुधार का परिणाम है।
 - lvi. जबकि 2022-23 में पहुँच कीमत 1% गिरी, घरेलू उद्योग ने अपना विक्रय मूल्य 11% बढ़ाया। वित्त वर्ष 2023-24 में पहुँच कीमत में कोई बदलाव न होने के बावजूद, आवेदकों ने अपना विक्रय मूल्य 19% घटाया। इसके अलावा, भले ही जांच अवधि में पहुँच कीमत गिरी, आवेदक अपनी कीमतें 11% बढ़ाने में सक्षम रहा।
 - lvii. एचपीएल ने वित्त वर्ष 24-25 की अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा है कि उसने एलएलडीपीई में 8% की मजबूत वृद्धि देखी है, इस प्रकार, स्पष्ट रूप से कोई क्षति न होना स्वीकार किया है।

- lviii. कतर से आयात जांच अवधि में 1% बाजार हिस्सेदारी रखते हैं और इसलिए, यह घरेलू विक्रय मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकते और वास्तव में, घरेलू उद्योग द्वारा निर्धारित कीमतों का अनुसरण करते हैं।
- lix. यदि निर्यातक भारत में विचाराधीन उत्पाद को पाटित कीमतों पर बेच रहे होते और कीमतों को न्यून कर रहे होते, तो आयात मात्राएँ गिरने के बजाय बढ़ी होतीं।
- lx. आयातों की बाजार हिस्सेदारी निरंतर 10-20% की सीमा में बनी रही है जबकि घरेलू उद्योग की बाजार हिस्सेदारी 0-10% से बढ़कर 20-30% हो गई है। इसी प्रकार, भारतीय एलएलडीपीई उद्योग का हिस्सा भी जांच अवधि में सुधरा है।
- lxi. संबद्ध देशों से आयात अपेक्षाकृत छोटा और स्थिर हिस्सा बनाए हुए हैं; ऐसी सीमित आयात पैठ को प्रतिकूल मात्रा प्रभाव उत्पन्न करने वाला नहीं माना जा सकता।
- lxii. आवेदक 22% की बाजार हिस्सेदारी का उपभोग करते हैं, जांच अवधि में घरेलू खिलाड़ियों की हिस्सेदारी 83% रही है।
- lxiii. आवेदकों की बाजार हिस्सेदारी आधार वर्ष में 3% से बढ़कर जांच अवधि में 22% हो गई है, जो इंगित करता है कि आवेदकों को कोई क्षति नहीं है।
- lxiv. आवेदक आधार वर्ष में लाभ कमा रहा था, और वित्त वर्ष 2022-23 में हानि बिक्री लागत में 25% वृद्धि के कारण थी। प्राधिकारी को जांच करनी चाहिए कि क्या ऐसी हानियाँ आंतरिक कारकों या आंतरिक अक्षमताओं के कारण थीं।
- lxv. आवेदक द्वारा दावा किया गया कोई भी कीमत प्रभाव आयातों पर आरोपित नहीं किया जा सकता बल्कि आवेदक द्वारा स्वीकृत मूल्य निर्धारण निर्णयों, क्षमता समायोजनों और लागत गतिकी के कारण है।
- lxvi. आवेदकों ने स्वीकार किया है कि मूल्य गिरावट लगभग उस समय शुरू हुई जब एचएमईएल ने उत्पादन शुरू किया। इस प्रकार, नई क्षमता का जुड़ना संपाती रहा और संभावित रूप से आवेदकों की हानियों में योगदान दिया।
- lxvii. प्राधिकारी को एचएमईएल के निष्पादन की तुलना परियोजना रिपोर्ट में इसके अनुमानित निष्पादन से करनी चाहिए और सत्यापित करना चाहिए कि क्या एचएमईएल की हानियाँ वास्तव में अप्रत्याशित थीं।
- lxviii. आवेदक की मूल्यहास और ब्याज लागत में क्रमशः 82% और 41% की पर्याप्त वृद्धि हुई।
- lxix. घरेलू उद्योग आधार वर्ष से ही ऋणात्मक प्रत्याय अर्जित कर रहा है जब आयात आधार वर्ष में अपने न्यूनतम स्तर पर थे, इसलिए, आयातों को कोई क्षति आरोप्य नहीं है।

- lxx. घरेलू उद्योग बाद के वर्षों में उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री में सुधारों की अवहेलना करना चाहता है और इसे एचएमईएल के प्रवेश और विस्तार पर आरोपित करता है। तथापि, नए उत्पादक के प्रवेश के बावजूद वित्तीय मापदंडों में गिरावट पर क्षति का दावा करने के लिए भरोसा किया जाता है।
- lxxi. घरेलू उद्योग अनुकूल रुझानों पर भरोसा कर रहा है और प्रतिकूल रुझानों की बिना संदर्भ के अवहेलना कर रहा है, जिसके परिणामस्वरूप एक विकृत और अविश्वसनीय क्षति विश्लेषण हो रहा है।
- lxxii. वित्तीय मापदंडों में कथित गिरावट प्रारंभिक मूल्य निर्धारण दबावों, उच्चतर नियत लागतों, उच्चतर इनपुट लागतों और प्रारंभिक प्रचालन, स्थिरीकरण चुनौतियों के कारण है।
- lxxiii. वित्त वर्ष 2021-22 और 2022-23 के बीच विक्रय मूल्य में वृद्धि के बावजूद, आवेदकों की लाभप्रदता में तेजी से गिरावट आई।
- lxxiv. बिक्री लागत में गिरावट के बावजूद, आवेदक हानियाँ उठाना जारी रखे हुए हैं। इसलिए, ये कथित हानियाँ आयात कीमतों की गतियों के अनुरूप नहीं हैं और कथित पाटन पर आरोपित नहीं की जा सकतीं।
- lxxv. घरेलू उद्योग की हानियाँ 2023-24 में ठीक उस समय चरम पर थीं जब एचएमईएल का संयंत्र चालू हुआ। यदि मात्रा मापदंडों में सुधार एचएमईएल के प्रवेश के लिए आरोप्य हैं, तो वित्तीय मापदंडों में कथित गिरावट पर भी इसी कारण से विचार किया जाना चाहिए।
- lxxvi. जबकि 2022-23 में कतर की आयात कीमतें स्थिर रहीं, और कुवैत की आयात कीमतें थोड़ी बढ़ीं, उस अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का कर पूर्व ब्याज लाभ काफी गिर गया।
- lxxvii. जांच अवधि के दौरान कतर से आयातों की कीमतों में गिरावट के बावजूद, घरेलू उद्योग के कर पूर्व ब्याज लाभ में सुधार हुआ है। यदि कतर से आयात कीमतें घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचा रही होतीं, तो इसका कर पूर्व ब्याज लाभ गिरना चाहिए था।
- lxxviii. जबकि जांच अवधि में कुवैत की कीमतें मामूली रूप से गिरीं, घरेलू उद्योग के कर पूर्व ब्याज लाभ में गिरावट कहीं अधिक थी। तदनुसार, क्षति कुवैत से आयातों के कारण नहीं है।
- lxxix. 2022-23 से ओमान से निर्यातों की कीमतों में वृद्धि के बावजूद, घरेलू उद्योग का कर पूर्व ब्याज लाभ गिरा है। इस प्रकार, क्षति ओमान की आयात कीमतों के लिए आरोप्य नहीं है।

- lxxx. यदि ओमान से निर्यातक विचाराधीन उत्पाद को भारत में पाटित करने का आशय रखते, तो कीमतें गिरने पर आयात मात्राएँ बढ़नी चाहिए थीं।
- lxxxi. आवेदक की कीमतों की बिक्री लागत में वृद्धि वैश्विक रूप से ऊर्जा और फीडस्टॉक कीमतों में वृद्धि के कारण थी जैसा कि एचपीएल की वार्षिक रिपोर्ट में स्वीकार किया गया है।
- lxxxii. एचएमईएल और एचपीएल के बीच लागत अंतर मामूली नहीं बल्कि महत्वपूर्ण हैं और सामान्य उद्योग व्यवहार से असंगत हैं।
- lxxxiii. घरेलू उद्योग द्वारा दावा की गई वित्तीय हानि स्वतःकृत है और प्रारंभिक पूंजी निवेशों के कारण है, जो ब्याज लागत और मूल्यहास में तेज वृद्धि से स्पष्ट है।
- lxxxiv. जांच अवधि के दौरान प्रति इकाई हानियों में कमी का बढ़ी हुई बिक्री और बाजार हिस्सेदारी के साथ होना संबद्ध आयातों के कारण क्षति के आरोप से असंगत है।
- lxxxv. वित्त वर्ष 2022-23 में आवेदकों की हानियाँ बढ़ीं, भले ही इसका विक्रय मूल्य 11 सूचकांक अंकों से बढ़ा।
- lxxxvi. यह तथ्य कि ब्याज लागत हटाने के बाद भी घरेलू उद्योग हानि में बना रहता है, इसका अर्थ यह नहीं है कि क्षति संबद्ध आयातों के कारण है।
- lxxxvii. हानियाँ कम क्षमता उपयोग, उच्च नियत उपरिव्यय अवशोषण, उत्पाद मिश्रण मुद्दों, उच्चतर परिचालन लागतों, अपनी स्वयं की विपणन रणनीति से उत्पन्न मूल्य निर्धारण दबाव और मौजूदा घरेलू उत्पादकों के साथ आंतरिक प्रतिस्पर्धा के कारण हो सकती हैं।
- lxxxviii. एचएमईएल द्वारा उत्पादन शुरू करने के कारण मालसूचियाँ बढ़ी हैं।
- lxxxix. औसत मालसूची में वृद्धि संबद्ध आयातों के कारण नहीं है जो भारतीय बाजार में केवल 15% हिस्सा रखते हैं और क्षति अवधि के दौरान गिर रहे हैं। आवेदक विचाराधीन उत्पाद की बढ़ती घरेलू और वैश्विक मांग को पूरा करने के लिए अपने पास स्वस्थ मालसूची तैयार रखते हैं।
- xc. याचिका में कथित पाटन और घरेलू उद्योग को क्षति के बीच कारण पर अपर्याप्त साक्ष्य हैं। इस बात का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है कि कथित पाटित किए गए आयातों में किसी कथित रूप से नकारात्मक प्रवृत्ति वाले क्षति कारकों के लिए "व्याख्यात्मक बल" कैसे था।
- xci. भारत में विचाराधीन उत्पाद के उत्पादक नैप्था के कच्चे माल के रूप में उपयोग के कारण अंतर्निहित लागत हानि का सामना करते हैं, जबकि अन्य देशों में उत्पादक ईथेन का उपयोग करते हैं, जिसकी उत्पादन लागत कम होती है।

- xcii. सऊदी अरब में ईथेन को विदारण मार्ग के रूप में उपयोग करके एथिलीन उत्पादन की नकद लागत लगभग 240-250 \$/मी.टन है। कच्चे माल की उपलब्धता और चयनित फीडस्टॉक दक्षताओं के संबंध में प्राकृतिक लाभ भारतीय उत्पादकों की तुलना में सऊदी अरब में विचाराधीन उत्पाद के उत्पादकों के लिए एक अंतर्निहित लाभ है।
- xciii. आवेदक कंपनियों का वित्तीय निष्पादन पाटित किए गए आयातों से संचालित होने के बजाय आंतरिक वाणिज्यिक और संरचनात्मक कारकों से प्रभावित था।
- xciv. एचएमईएल और एचपीएल प्रचालनात्मक परिपक्वता, पैमाने और लागत व्यवहार के संदर्भ में मूलतः भिन्न हैं, और इसलिए विश्लेषण को विकृत किए बिना इन्हें समग्र नहीं किया जा सकता।
- xcv. एचएमईएल 2023-24 के दौरान अपने प्रचालन के पहले वर्ष में था, इसलिए, इसकी लागत का अत्यधिक कुशल होना अपेक्षित नहीं किया जा सकता।
- xcvi. जबकि जांच अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री लागत 16% गिरी, एचपीएल की बिक्री लागत केवल 5% गिरी, जो इंगित करता है कि लागत में कमी मुख्यतः एचएमईएल, एक प्रथम-वर्ष उत्पादक, द्वारा संचालित है, न कि स्थापित उत्पादक की लागत में किसी वास्तविक सुधार से।
- xcvii. एचएमईएल के नव चालू संयंत्र ने लागत दक्षता के संदर्भ में एचपीएल से बेहतर प्रदर्शन किया है, जो आवेदक द्वारा भरोसा किए गए लागत आंकड़ों की विश्वसनीयता और प्रतिनिधित्वशीलता पर प्रश्न उठाता है।
- xcviii. घरेलू उद्योग के बीच भिन्न निष्पादन इंगित करता है कि कथित क्षति आयातों से असंबंधित कंपनी-विशिष्ट कारकों द्वारा संचालित है।
- xcix. हानियों का परिमाण अकेले विक्रय मूल्यों की गति से असंगत है और उस अवधि के दौरान भी बना रहता है जब बिक्री लागत मध्यम स्तरों पर थी।
- c. एचएमईएल ने प्रारंभिक अक्षमताओं के कारण पहले वर्ष के दौरान हानियाँ उठाईं जो प्रारंभिक लागतों से जुड़ी थीं, जो पाटन, कीमत कटौती के आरोपों के बावजूद जांच अवधि में कम हो गई। क्षति अवधि के दौरान एचएमईएल प्रचालनात्मक अवस्था में था, इसलिए, क्षति संबद्ध देशों से आयातों के कारण नहीं है।
- ci. ब्याज लागत और मूल्यहास में चौंका देने वाली वृद्धि घरेलू उद्योग की वित्तीय स्थिति को पूर्णतः स्पष्ट करती है। ये एक बड़े पूंजी विस्तार के स्वाभाविक परिणाम हैं न कि आयातों के प्रभाव।

- cii. सार्वजनिक रूप से उपलब्ध ऋणपात्रता निर्धारण और स्वयं एचएमईएल इस बात की पुष्टि करते हैं कि एचएमईएल के वित्तीय संकट का प्रमुख कारण इसकी 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर की जीजीएसपीएपी पेट्रोकेमिकल परियोजना का चालू होना है।
- ciii. आयात मात्राओं में गिरावट के बावजूद, एचपीएल हानियाँ उठाना जारी रखे हुए है, जो इसकी उच्च उत्पादन लागत के लिए आरोग्य हैं।
- civ. क्षति कतर राज्य से आयातों के कारण नहीं है बल्कि अन्य संबद्ध देशों के कारण है।
- cv. क्षति कुवैत, ओमान से आयातों के कारण नहीं है बल्कि सऊदी अरब और यूएई जैसे अन्य संबद्ध देशों के कारण है, जिनकी मात्राएँ निरपेक्ष और सापेक्ष दोनों रूपों में पर्याप्त रूप से बढ़ी हैं।
- cvi. कुवैत से आयात अन्य संबद्ध देशों से महत्वपूर्ण उछाल की तुलना में केवल मामूली रूप से बढ़े हैं।
- cvii. यूएई को क्षति आरोग्य नहीं है क्योंकि यूएई के अतिरिक्त अन्य संबद्ध देशों से आयात बढ़े हैं, भले ही इन संबद्ध देशों से कोई तुलनीय एफटीए लाभ मौजूद नहीं है।
- cviii. क्षति कमजोर वैश्विक उपभोग के कारण है जैसा कि एचपीएल ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में मान्यता दी है। इसके अलावा, एचपीएल ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट 2023-24 में दावा किया है कि भारत के सबसे बड़े पेट्रोकेमिकल संयंत्रों में से एक के चालू होने और स्थिरीकरण के कारण मालसूची निर्माण के कारण घरेलू बाजार को अत्यधिक हानि का सामना करना पड़ा है।
- cix. एचएमईएल, एक नया प्रवेशी होने के नाते, स्थापित खिलाड़ियों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए आक्रामक मूल्य निर्धारण का सहारा लिया है।
- cx. एचपीएल को कोविड-19 के दौरान किए गए बंदियों के कारण क्षति उठानी पड़ी है।
- cxii. प्राधिकारी केवल एचएमईएल पर अनुबंध III लागू नहीं कर सकता क्योंकि इसने अगस्त 2023 में उत्पादन शुरू किया और यह एक स्थापित उत्पादक नहीं है।
- cxiii. यह प्राधिकारी की सुसंगत प्रथा है कि नव स्थापित घरेलू उद्योग के मामले में, क्षमता का इष्टतमीकरण उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर, परियोजना रिपोर्ट में अनुमानों के साथ पठित, किया जाना चाहिए।
- cxiiii. कच्चे माल और उपयोगिताओं के इष्टतम उपयोग के लिए, केवल स्थापित उत्पादक, एचपीएल, के सर्वोत्तम उपयोग पर विचार किया जाना चाहिए, और एचएमईएल की क्षति रहित कीमत को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं आंका जाना चाहिए।

छ.2 घरेलू उद्योग के विचार

122. क्षति और कारणात्मक संबंध के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं;

- i. भारत में वर्तमान में लगभग 29 लाख मीट्रिक टन की मांग के विरुद्ध एलएलडीपीई की लगभग 31 लाख मीट्रिक टन की समर्पित क्षमता है। इस प्रकार, भारत में कोई मांग आपूर्ति अंतराल नहीं है, और भारतीय निर्माता संपूर्ण भारतीय मांग को पूरा कर सकते हैं।
- ii. चूंकि वित्त वर्ष 2021-22 और 2022-23 के आंकड़े केवल एचपीएल से संबंधित हैं, वित्त वर्ष 2023-24 और सीवाई 2024 के वर्षों में मात्रात्मक आंकड़े स्पष्ट सुधार दिखाते हैं और यह सुझाव देने के लिए गलत अर्थ लगाया जा सकता है कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं है। मात्रात्मक मापदंडों के विपरीत, वित्तीय मापदंड संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान महत्वपूर्ण मूल्य क्षति दर्शाते हैं।
- iii. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने अधिकांशतः यह कथित रूप से प्रदर्शित करने के लिए कि ऐसे निर्यातों के कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है, अन्य देशों और घरेलू उद्योग के क्षति मापदंडों के विरुद्ध व्यक्तिगत संबद्ध देशों की कीमत और मात्रा गति की जांच की है।
- iv. ऐसी जांच एडी नियमावली, 1995 के तहत निर्धारित संचयी आकलन के सिद्धांतों के मद्देनजर पूर्णतः गलत है।
- v. भारतीय उत्पादन क्षमता में लगभग 25% वृद्धि के बावजूद, बाजार हिस्सेदारी गिरी है और संबद्ध आयातों की बाजार हिस्सेदारी बढ़ी है। इस प्रकार, भारतीय उद्योग संपूर्ण भारतीय मांग को पूरा करने की पर्याप्त क्षमता होने के बावजूद मात्रात्मक क्षति का भी सामना कर रहा है।
- vi. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात आधार वर्ष की तुलना में काफी बढ़ गए हैं।
- vii. 2023-24 से आयात मात्राओं में गिरावट एचएमईएल द्वारा उत्पादन शुरू करने के कारण है। आधार वर्ष और जांच अवधि के बीच, जहाँ आयात 48% बढ़े हैं, मांग केवल 19% बढ़ी है।
- viii. संबद्ध वस्तुओं की मांग संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान बढ़ी है। आयातों की वृद्धि दर मांग की वृद्धि दर से अधिक रही है।

- ix. संबद्ध देशों से पाटित किए गए आयातों के कारण, घरेलू उद्योग भारतीय मांग में वृद्धि से पर्याप्त रूप से लाभान्वित होने में सक्षम नहीं रहा है, अपनी बिक्री बढ़ाने के सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, यहाँ तक कि गैर-पारिश्रमिक कीमतों पर भी।
- x. अन्य हितबद्ध पक्षकार यह समझने में विफल रहे हैं कि जब भी कोई नया उत्पादक पर्याप्त निवेश करने के बाद किसी बाजार में प्रवेश करता है, तो उससे अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह अपनी क्षमताओं को निष्क्रिय रखे। एक नया प्रवेशी होने के नाते, वह कम से कम अपनी नियत लागत की आंशिक वसूली का प्रयास करेगा, ताकि व्यवहार्य बना रहे।
- xi. एचएमईएल की एलएलडीपीई उत्पादन सुविधा स्थापित करने की योजना 2017 से प्रभावी रही है। एचएमईएल ने अगस्त 2023 में वाणिज्यिक एलएलडीपीई उत्पादन शुरू किया। वित्त वर्ष 2021-22 और वित्त वर्ष 2022-23 से संबंधित आंकड़े केवल एचपीएल से संबंधित हैं। इस प्रकार, जब एचएमईएल ने उत्पादन शुरू किया, तब उत्पादन, बिक्री आदि जैसे मात्रात्मक मापदंड एक उर्ध्वगामी प्रक्षेप पथ प्रदर्शित करने के लिए बाध्य हैं।
- xii. आयात कीमतें बहुत महत्वपूर्ण अंतर से घरेलू कीमतों को न्यून कर रही हैं।
- xiii. घरेलू उद्योग तब भी न्यूनीकरण का सामना कर रहा है जब वह हानियों पर बिक्री कर रहा है।
- xiv. घरेलू उद्योग वास्तव में संबद्ध देशों द्वारा निर्यात किए गए कम कीमत वाले पाटित किए गए आयातों के समक्ष बिक्री-पश्चात छूट प्रदान करने के लिए बाध्य हुआ था।
- xv. भारतीय उपयोगकर्ता घरेलू उद्योग के साथ बातचीत करते समय संबद्ध देशों द्वारा प्रस्तावित कीमतों को उद्धृत करते हैं जिसके विरुद्ध घरेलू उद्योग के पास घरेलू बाजार में बिक्री करने के लिए छूट देने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।
- xvi. संघ द्वारा प्रदान किए गए प्रपत्र-पश्चात छूटों का साक्ष्य किसी भी प्रकार से घरेलू उद्योग के मामले को कमजोर नहीं करता, बल्कि इसे मजबूत करता है, आर्थिक वास्तविकता और संबद्ध देशों से आयातों द्वारा डाले गए मूल्य दबाव को दर्शाता है, जो घरेलू उद्योग को अपनी कीमतें और कम करने के लिए बाध्य करता है।
- xvii. संबद्ध आयातों की पहुँच कीमत में गिरावट के कारण, घरेलू उद्योग अपनी लागत से नीचे बेचने के लिए बाध्य हुआ है, जो स्पष्ट रूप से मूल्य अवसाद को प्रमाणित करता है।
- xviii. कीमतों में गिरावट उस अवधि से शुरू हुई जैसे ही एचएमईएल ने उत्पादन शुरू किया।

- xix. जबकि जांच अवधि में घरेलू उद्योग की बाजार हिस्सेदारी पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ी है, यह वृद्धि भारत में गैर-पारिश्रमिक कीमतों पर संबद्ध वस्तुओं को बेचकर प्राप्त की गई है।
- xx. आधार वर्ष की तुलना में, जहाँ भारतीय उद्योग की बाजार हिस्सेदारी गिरी है, संबद्ध देशों की बाजार हिस्सेदारी बढ़ी है।
- xxi. घरेलू उद्योग को क्षति इस तथ्य से स्पष्ट है कि घरेलू उत्पादन क्षमता में महत्वपूर्ण वृद्धि के बावजूद, जांच अवधि के दौरान संबद्ध आयातों की बाजार हिस्सेदारी बढ़ी है, जबकि भारतीय उद्योगों की बाजार हिस्सेदारी गिर गई है।
- xxii. घरेलू उद्योग केवल अपनी लागत से काफी नीचे गैर-पारिश्रमिक हानिकारक बिक्री करके ही अपनी बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने में सक्षम रहा है। तथापि, अपनी हानिकारक बिक्री के बावजूद, भारतीय उद्योग भारतीय मांग में अपना हिस्सा नहीं बढ़ा सका।
- xxiii. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता घाटे में है और जांच अवधि के दौरान नकद हानियाँ, ऋणात्मक पीबीडीआईटी और नियोजित पूंजी पर ऋणात्मक प्रत्याय अर्जित कर रहा है।
- xxiv. घरेलू उद्योग न केवल हानियाँ अर्जित कर रहा है बल्कि ऋणात्मक पीबीडीआईटी और नकद हानियाँ भी हैं जिनकी जांच ब्याज तत्वों को हटाने के बाद की गई है। इस प्रकार, एचएमईएल के हाल ही में उत्पादन शुरू करने पर कोई क्षति आरोपित नहीं की जा सकती।
- xxv. 2023-24 के दौरान एनएफए में वृद्धि पूर्णतः एचएमईएल के एलएलडीपीई संयंत्र के वाणिज्यिक उत्पादन शुरू होने पर पूंजीकरण के कारण हुई, जो निवेश निर्णयों और पूंजीगत व्यय के अनुसरण में था जिसकी योजना बहुत पहले, 2017 में बनाई गई थी और किया गया था।
- xxvi. ऐसे ऐतिहासिक पूंजीकरण को घरेलू उद्योग की नए निवेश करने की वर्तमान वित्तीय क्षमता के साक्ष्य के रूप में नहीं लगाया जा सकता।
- xxvii. एचएमईएल की हानियाँ जांच अवधि में अपनी बिक्री लागत को कम करने के संदर्भ में अधिक कुशल बनने के कारण कम हुई हैं। तथापि, बिक्री लागत में गिरावट के बावजूद, एचएमईएल ने अपनी लागत से नीचे बिक्री करना जारी रखा, जिससे महत्वपूर्ण हानियाँ हुईं।
- xxviii. भले ही मूल्यहास और ब्याज लागत का प्रभाव हटा दिया जाए, क्षति अवधि के दौरान उत्पादन शुरू करने के कारण, एचएमईएल जांच अवधि के दौरान अभी भी नकद हानियाँ उठा रहा था।

- xxix. जहाँ घरेलू उद्योग लगभग पंद्रह महीनों के उत्पादन के दौरान युक्तियुक्त प्रत्याय अर्जित करने या अपनी लागतों की वसूली करने में भी असमर्थ रहा है, वहाँ उसकी निधियाँ जुटाने और भविष्य के पूंजी निवेश करने की क्षमता भौतिक रूप से क्षतिग्रस्त है।
- xxx. घरेलू उद्योग के पास विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी कीमतों पर पहुँच है।
- xxxi. यह ध्यान दिया जा सकता है कि अधिकांश प्राकृतिक गैस और अन्य फीडस्टॉक कीमतें संबद्ध देशों की संबंधित सरकारों द्वारा नियंत्रित होती हैं।
- xxxii. सऊदी अरब साम्राज्य अरामको, पेट्रो राबिघ और अन्य सैबिक समूह उत्पादकों को फीडस्टॉक आपूर्तिकर्ता, को सरकार द्वारा विनियमित कीमतों पर फीडस्टॉक बेचने में अरामको द्वारा उठाई गई हानियों की क्षतिपूर्ति करता है।
- xxxiii. इसी प्रकार का मूल्य निर्धारण अंतर प्राधिकारी द्वारा कुवैत के मामले में कुवैत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन द्वारा इक्वेट और द कुवैत ओलेफिंस कंपनी को ईथेन की आपूर्ति के संबंध में पाया गया था।
- xxxiv. भारतीय उत्पादक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी कीमतों पर कच्चे माल तक पहुँचते हैं, जबकि सऊदी अरब और अन्य संबद्ध देशों में उत्पादक अपनी सरकारों द्वारा विकृत इनपुट कीमतों पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार, अंतर्निहित लाभ भौगोलिक स्थान का नहीं है, बल्कि विकृत इनपुट मूल्य व्यवस्था का है।
- xxxv. नैप्था-आधारित उत्पादन प्रक्रिया घरेलू उद्योग की एक अंतर्निहित विशेषता है और गैर-आरोपण विश्लेषण उन कारकों के लिए किए जाने की आवश्यकता नहीं है जो घरेलू उद्योग की अंतर्निहित विशेषताएँ हैं।
- xxxvi. अन्य हितबद्ध पक्षकार, बिना साक्ष्य के, यह मान रहे हैं कि प्रथम-वर्ष के संयंत्र को आवश्यक रूप से अक्षमताएँ प्रदर्शित करनी चाहिए।
- xxxvii. अन्य हितबद्ध पक्षकार यह समझने में विफल रहे हैं कि जबकि एचएमईएल एलएलडीपीई के लिए एक नया उत्पादक हो सकता है, यह एक दशक से अधिक समय से पॉलिमर व्यवसाय में एक स्थापित संस्था है और किसी भी प्रारंभिक और स्थिरीकरण मुद्दों को संबोधित करने के लिए पर्याप्त तकनीकी जानकारी रखता है।
- xxxviii. क्षति अवधि के दौरान, एचएमईएल 8 महीनों की अवधि के भीतर शीघ्रता से लगभग 65%-75% का क्षमता उपयोग प्राप्त करने में सक्षम रहा और इस प्रकार अपने उत्पादन को स्थिर करने में सक्षम रहा।

- xxxix. जांच अवधि के दौरान एचएमईएल ने लगभग 80-90% का क्षमता उपयोग प्राप्त किया, जो स्वयं में इसकी तकनीकी सक्षमता, प्रचालन दक्षता और उत्पादन के सफल स्थिरीकरण का स्पष्ट साक्ष्य है।
- xi. प्राधिकारी ने मेलामाइन में निर्णय दिया था जिसमें घरेलू उद्योग पर्याप्त समयावधि से उत्पादन में रहा है और जिसमें उसने जांच अवधि के दौरान उच्च क्षमता उपयोग प्राप्त किया है, प्रारंभिक प्रभावों का प्रभाव पर्याप्त रूप से शामिल हो जाता है।
- xli. एलएलडीपीई जैसे उत्पाद के लिए, जहाँ लागत का प्रमुख घटक कच्चा माल है, प्रचालन दक्षता का अधिक उपयुक्त रूप से कच्चे माल के उपभोग मानदंडों के माध्यम से आकलन किया जाता है, जो दोनों उत्पादकों के लिए तुलनीय स्तरों पर हैं।
- xlii. एचएमईएल की निम्नतर बिक्री लागत मुख्यतः उच्चतर उत्पादन मात्राओं और उच्चतर क्षमता उपयोग से उत्पन्न प्रति इकाई निम्नतर नियत लागत के कारण है। इसके विपरीत, एचपीएल 2022-23 से निरंतर पाटित किए गए आयातों के कारण हानियाँ उठा रहा है, जिन्होंने इसके उत्पादन स्तरों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है और क्षमता के इष्टतम उपयोग को रोका है।
- xliii. संबद्ध देशों से पाटित किए गए आयातों के मूल्य-दमनकारी प्रभाव ने एचपीएल के एलएलडीपीई उत्पादन को कम किया है, जिससे प्रति इकाई नियत लागत अवशोषण और, परिणामस्वरूप, इसकी समग्र बिक्री लागत बढ़ गई है।
- xliv. पर्याप्त पूंजी निवेश करने के बाद, एचएमईएल के लिए प्रचालनों को स्थिर करने, क्षमता उपयोग को इष्टतम करने और नियत लागतों का कुशल अवशोषण प्राप्त करने के लिए उत्पादन बढ़ाना वाणिज्यिक रूप से अनिवार्य था। पूंजी-गहन पेट्रोकेमिकल प्रचालनों में, चालू होने के बाद तीव्र गति से उत्पादन बढ़ाना प्रचालन संतुलन प्राप्त करने के लिए सामान्य और आवश्यक दोनों है।
- xlv. वर्तमान जांच संबद्ध देशों से निर्यातकों की अनुचित व्यापार प्रथाओं से संबंधित है। पिछले कई वर्षों से, भारतीय घरेलू एलएलडीपीई बाजार अनेक घरेलू उत्पादकों से युक्त रहा है और घरेलू उत्पादकों के बीच आंतरिक प्रतिस्पर्धा घरेलू बाजार की एक अंतर्निहित विशेषता है।

छ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

123. एडी नियमावली, 1995 के अनुबंध II के साथ पठित नियम 11 प्रावधान करता है कि क्षति निर्धारण में उन कारकों की जांच शामिल होगी जो घरेलू उद्योग को क्षति का संकेत दे सकते हैं, सभी प्रासंगिक तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, जिनमें पाटित किए गए आयातों की मात्रा,

समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनका प्रभाव और ऐसे वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों का परिणामी प्रभाव शामिल है। पाटित किए गए आयातों के कीमतों पर प्रभाव पर विचार करते हुए, यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित किए गए आयातों द्वारा महत्वपूर्ण कीमत कटौती हुआ है, या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों को महत्वपूर्ण स्तर तक अवसादित करना या मूल्य वृद्धियों को, जो अन्यथा घटित होतीं, महत्वपूर्ण स्तर तक रोकना है। भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित किए गए आयातों के प्रभाव की जांच के लिए, एडी नियमावली, 1995 के अनुबंध II के अनुसार उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सूचकांक जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, मालसूची, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन का परिमाण और अंतर आदि पर विचार किया गया है।

छ.3.1 क्षति का संचयी आकलन

124. विश्व व्यापार संगठन समझौते का अनुच्छेद 3.3 और एडी नियमावली, 1995 के अनुबंध II का पैरा (iii) प्रावधान करता है कि ऐसे मामले में जहाँ एक से अधिक देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात एक साथ पाटन रोधी जांच के अधीन किए जा रहे हैं, प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करेगा, यदि वह यह निर्धारित करता है कि:

क. प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में स्थापित पाटन का अंतर निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में दो प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयात का तीन प्रतिशत (या अधिक) है या जहाँ व्यक्तिगत देशों का निर्यात तीन प्रतिशत से कम है, आयात सामूहिक रूप से समान वस्तु के आयात के सात प्रतिशत से अधिक हैं, और

ख. आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के प्रकाश में आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन उपयुक्त है।

125. तदनुसार, प्राधिकारी ने कतर के विरुद्ध जाँच समाप्त कर दी है और क्षति की जाँच के प्रयोजन से कतर को विचाराधीन देशों में शामिल नहीं किया गया है। प्रकटीकरण विवरण जारी होने के बाद इच्छुक पक्षों ने बताया कि कुवैत और ओमान से आयातों का व्यक्तिगत हिस्सा कुल भारतीय आयात के 3% से कम तथा उनका सामूहिक हिस्सा 7% से कम था। अतः उन्होंने पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 14 के अंतर्गत, नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iii)(क) में निर्धारित मानदंड पूरे न होने के आधार पर कुवैत और ओमान के विरुद्ध जाँच समाप्त करने का अनुरोध किया।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि जाँच प्रारंभ किए जाने के समय कुवैत, ओमान और कतर से आयात पाटित पाए गए थे और उनका संयुक्त हिस्सा भारत के कुल आयात की मात्रा के 7% से अधिक था। तथापि, कतर के लिए ऋणात्मक पाटन मार्जिन निर्धारित होने के बाद, 3% से कम पाटित आयात हिस्सेदारी वाले देशों का सामूहिक हिस्सा 7% से कम हो गया। तदनुसार, प्राधिकारी कुवैत, ओमान और कतर के विरुद्ध जाँच समाप्त करते हैं।

126. कतर, कुवैत और ओमान से विचाराधीन वस्तुओं के आयातों को अन्य देशों से हुए आयातों के अंतर्गत माना गया है।

127. प्राधिकारी नोट करते हैं कि:

क. संबद्ध वस्तुओं को संबद्ध देशों से भारत में पाटित किया जा रहा है। प्रत्येक अन्य संबद्ध देश से पाटन का अंतर, एडी नियमावली, 1995 के तहत निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है।

ख. आगे यह नोट किया जाता है कि कुछ संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा भारत में कुल संबद्ध आयातों की मात्रा के 3% से कम है। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसे संबद्ध देशों से आयातों की कुल मात्रा 7% से अधिक है।

ग. आयातों के प्रभावों का संचयी आकलन उपयुक्त है क्योंकि संबद्ध देशों से आयात न केवल उनमें से प्रत्येक द्वारा प्रस्तावित समान वस्तुओं से सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं बल्कि भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित समान वस्तुओं से भी सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं।

128. उपरोक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी का मानना है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के पाटित किए गए आयातों के संचयी प्रभाव का आकलन करना उपयुक्त है।

129. प्राधिकारी नोट करते हैं कि ओक्यू पॉलिमर्स ने दावा किया है कि ओमान से आयात क्षति अवधि के दौरान स्थिर बने रहे हैं और तदनुसार, घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं हो सकते। प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने किसी भी संबद्ध देश से आयातों के गैर-संचयन के लिए कोई दावा प्रस्तुत नहीं किया है। इसके अलावा, जैसा कि ऊपर कहा गया है, आयातों के संचयी आकलन की शर्तें पूरी हो गई हैं। तदनुसार, प्राधिकारी का मानना है कि व्यक्तिगत संबद्ध देशों से व्यक्तिगत आयात मात्रा और मूल्य निर्धारण रुझानों की जांच किए जाने की आवश्यकता नहीं है।

130. इसके अलावा, वर्तमान मामले के विशिष्ट तथ्यों को देखते हुए, जहाँ क्षति अवधि के दौरान भारतीय घरेलू उत्पादकों के गठन में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है, प्राधिकारी ने, क्षति विश्लेषण के प्रयोजन के लिए, घरेलू उद्योग, जांच के समर्थक और समग्र रूप से भारतीय उद्योग से संबंधित सत्यापित सूचना पर विचार किया है, जहाँ भी ऐसी सूचना उपलब्ध थी और विधिवत सत्यापित की जा सकती थी।

छ.3.2 पाटित किए गए आयातों का मात्रा प्रभाव

क) मांग/प्रत्यक्ष उपभोग का आकलन

131. प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के प्रयोजन के लिए वित्त वर्ष 2024-25³ और वित्त वर्ष 2023-24⁴ के लिए रसायन और उर्वरक मंत्रालय की रिपोर्ट के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तुओं की मांग का अनुमान लगाया है। रिपोर्ट में प्रदान की गई मांग का अवलोकन करने पर, प्राधिकारी ने ध्यान दिया कि रिपोर्ट में मांग की गणना में विचार किए गए आयात आंकड़े क्षति अवधि के दौरान किए गए आयातों की वास्तविक मात्रा से मेल नहीं खाते थे। तदनुसार, प्राधिकारी ने भारतीय मांग की गणना के लिए रिपोर्ट में विचार किए गए आयात आंकड़ों को डीजी सिस्टम आयात आंकड़ों से समायोजित किया। इसके अलावा, यह देखते हुए कि जांच अवधि एक कैलेंडर वर्ष है, प्राधिकारी ने जांच अवधि की मांग पर पहुँचने के लिए वित्त वर्ष 2023-24 और वित्त वर्ष 2024-25 की रिपोर्ट के आधार पर समायोजित मांग का आनुपातिक विभाजन किया।

132. इस प्रकार निर्धारित मांग नीचे दी गई तालिका में प्रदान की गई है।

विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
संबद्ध देश	मी.टन	1,60,803	2,73,231	2,83,797	2,36,986

³ https://chemicals.gov.in/sites/default/files/inline-files/Glance-2025_1.pdf

⁴ <https://chemindia.chemicals.gov.in/Publicationspdf/Statistics-at-a-Glance-2024.pdf>

विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
सूचकांक	मी.टन	100	170	176	147
मलेशिया	मी.टन	6,017	19,092	48,600	26,739
सऊदी अरब	मी.टन	76,614	1,60,171	1,47,038	1,16,418
संयुक्त अरब अमीरात	मी.टन	78,172	93,968	88,160	93,829
अन्य देश	मी.टन	3,70,200	6,07,483	5,88,368	4,79,863
कुल आयात	मी.टन	5,31,004	8,80,714	8,72,165	7,16,849
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.टन	***	***	***	***
सूचकांक	मी.टन	100	152	511	798
समर्थक की बिक्री	मी.टन	***	***	***	***
सूचकांक	मी.टन	100	104	99	106
घरेलू उद्योग + समर्थक की बिक्री	मी.टन	***	***	***	***
सूचकांक	मी.टन	100	108	133	164
अन्य घरेलू उत्पादकों की बिक्री	मी.टन	***	***	***	***
सूचकांक	मी.टन	100	72	76	72
भारतीय उद्योग	मी.टन	***	***	***	***

विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
की कुल बिक्री					
सूचकांक	मी.टन	100	84	95	102
कुल मांग/उपभोग	मी.टन	33,78,651	32,65,325	35,74,741	36,31,353
सूचकांक	मी.टन	100	97	106	107

133. यह देखा गया है कि भारत में संबद्ध वस्तुओं की मांग वित्त वर्ष 2022-23 में प्रारंभिक गिरावट के बाद, जांच अवधि सहित शेष क्षति अवधि में निरंतर बढ़ी है। आधार वर्ष की तुलना में, संबद्ध देशों से संबद्ध आयात जांच अवधि में 42% बढ़ गए। इसी अवधि के दौरान, भारत में संबद्ध वस्तुओं की मांग 7% बढ़ी। यह भी ध्यान दिया गया है कि वित्त वर्ष 2023-24 में एचएमईएल के प्रचालन शुरू करने के बाद, वित्त वर्ष 2022-23 और आधार वर्ष की तुलना में वित्त वर्ष 2023-24 और जांच अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री में काफी वृद्धि हुई। तथापि, भारतीय क्षमताओं में लगभग 25% वृद्धि के बावजूद, भारतीय उद्योग की बिक्री में कोई आनुपातिक वृद्धि नहीं हुई है जो आधार वर्ष के लगभग समान स्तर पर बनी रही है।

ख) संबद्ध देशों से आयात मात्राएँ

134. पाटित किए गए आयातों की मात्रा के संबंध में, प्राधिकारी को इस पर विचार करना आवश्यक है कि क्या पाटित किए गए आयातों की मात्रा में, या तो निरपेक्ष रूप में या भारत में उत्पादन या उपभोग के सापेक्ष, महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं की आयात मात्रा और क्षति जांच अवधि के दौरान पाटित किए गए आयातों का हिस्सा निम्नानुसार है:

विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि

विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
मलेशिया	मी.टन	6,017	19,092	48,600	26,739
सऊदी अरब	मी.टन	76,614	1,60,171	1,47,038	1,16,418
संयुक्त अरब अमीरात	मी.टन	78,172	93,968	88,160	93,829
संबद्ध देश	मी.टन	1,60,803	2,73,231	2,83,797	2,36,986
गैर-संबद्ध देश	मी.टन	3,70,200	6,07,483	5,88,368	4,79,863
कुल आयात	मी.टन	5,31,004	8,80,714	8,72,165	7,16,849
कुल मांग	मी.टन	33,78,651	32,65,325	35,74,741	36,31,353
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	97	106	107
आयातों का संबंध:					
घरेलू उद्योग उत्पादन	%	***	***	***	***
सीमा	%	50-60%	80-90%	40-50%	20-30%
घरेलू उद्योग + समर्थक का उत्पादन	%	***	***	***	***
सीमा	%	10-20%	20-30%	20-30%	10-20%
कुल भारतीय उत्पादन	%	7%	15%	13%	11%

विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
सीमा	%	0-10%	10-20%	10-20%	10-20%
मांग	%	5%	8%	8%	7%
सीमा		0-10%	0-10%	0-10%	0-10%
कुल आयात	%	32%	36%	36%	35%

135. उपरोक्त से, प्राधिकारी नोट करते हैं कि:

- क. संबद्ध वस्तुओं के आयात आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बढ़ गए हैं।
- ख. जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयात भारत में कुल आयातों का 38% थे।
- ग. वित्त वर्ष 2022-23 की तुलना में, वित्त वर्ष 2023-24 और जांच अवधि में, निरपेक्ष रूप में और साथ ही घरेलू उत्पादन के सापेक्ष संबद्ध आयातों की मात्रा में गिरावट आई है। यह ध्यान दिया जाता है कि आयातों की मात्रा में गिरावट वित्त वर्ष 2023-24 में एचएमईएल द्वारा उत्पादन शुरू करने के साथ संपाती है। संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों की कुल मात्रा आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बढ़ गई है।
- घ. प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि वित्त वर्ष 2023-24 में एचएमईएल की क्षमता वृद्धि के साथ, कुल भारतीय उत्पादन जांच अवधि में बढ़ना चाहिए था और बढ़ती मांग को देखते हुए, आधार वर्ष के उत्पादन स्तरों को पार कर जाना चाहिए था। तथापि, स्थापित क्षमता में लगभग 25% वृद्धि के बावजूद, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि में कुल भारतीय उत्पादन आधार वर्ष के उत्पादन स्तरों से नीचे है।



- ड. इसके अलावा, उक्त क्षमता वृद्धि के बावजूद, भारतीय उत्पादन के सापेक्ष पाटित किए गए आयात जांच अवधि में 50% बढ़ गए।
- च. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से आयात वित्त वर्ष 2023-24 और वित्त वर्ष 2022-23 की तुलना में जांच अवधि में गिर गए हैं। जैसा कि नीचे चार्ट से देखा जा सकता है, यह गिरावट पहली बार वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी तिमाही में एचएमईएल द्वारा उत्पादन शुरू करने के बाद हुई। तथापि, इसके बाद, आयात बढ़ गए और काफी उच्च स्तरों पर बने रहे।

136. कतौफिन और आरआरपीसी ने तर्क दिया है कि याचिका में सापेक्ष या निरपेक्ष रूप में बढ़ी हुई मात्राओं का कोई साक्ष्य नहीं है। जैसा कि ऊपर तालिका से देखा जा सकता है, संबद्ध देशों से आयात वित्त वर्ष 22-23 की तुलना में जांच अवधि में वास्तव में गिर गए हैं। आयातों में यह गिरावट एचएमईएल द्वारा उत्पादन और बिक्री शुरू करने की अवधि के साथ संपाती है। तथापि, जांच अवधि में ऐसे आयातों की निरपेक्ष मात्रा आधार वर्ष की तुलना में 42% बढ़ गई है।
137. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान, भारतीय एलएलडीपीई उत्पादकों की उत्पादन क्षमता में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। आधार वर्ष और जांच अवधि के बीच, भारतीय क्षमताओं में 30% की वृद्धि हुई, तथापि, इस वृद्धि के बावजूद, संबद्ध वस्तुओं के कुल आयात 33% बढ़े और संबद्ध देशों से आयात 42% बढ़ गए। इसके अलावा, वित्त वर्ष 2023-24 में भारतीय उत्पादन क्षमता में वृद्धि के परिणामस्वरूप, यह ध्यान दिया जाता है

कि यद्यपि घरेलू उद्योग अपनी घरेलू बिक्री बढ़ाने में सक्षम रहा, ऐसी बिक्री लागत से नीचे कीमतों पर की गई।

138. प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि यद्यपि वित्त वर्ष 2022-23 और वित्त वर्ष 2023-24 की तुलना में जांच अवधि में भारतीय उत्पादन और मांग के प्रतिशत के रूप में संबद्ध आयातों की मात्रा गिर गई, ऐसी गिरावट को भारतीय क्षमता और मांग में पर्याप्त वृद्धि के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। यह ध्यान दिया जाता है कि संबद्ध आयातों ने आधार वर्ष से अधिक बाजार हिस्सेदारी बनाए रखी।
139. अधिक महत्वपूर्ण रूप से, संबद्ध आयात घरेलू उद्योग की बिक्री लागत से नीचे कीमतों पर भारतीय बाजार में प्रवेश करते रहे। ऐसे कम कीमत वाले पाटित किए गए आयातों की निरंतर उपस्थिति ने घरेलू उद्योग को पारिश्रमिक कीमतें प्राप्त करने से रोका है और उसे लागत से नीचे के स्तरों पर बेचने के लिए बाध्य किया है। तदनुसार, प्राधिकारी का मानना है कि संबद्ध आयात महत्वपूर्ण बने रहे, जिससे घरेलू उद्योग को क्षति पहुँच रही है।
140. याचिका में शामिल ओमान के लिए मिश्रित आंकड़ों के संबंध में ओक्यू पॉलिमर्स की अनुरोधों के संबंध में, प्राधिकारी स्पष्ट करते हैं कि इस अंतिम जाँच परिणाम में शामिल आयात आंकड़े डीजी सिस्टम्स के आंकड़ों पर आधारित हैं। इसके अतिरिक्त, इसकी तुलना ओक्यू पॉलिमर्स द्वारा रिपोर्ट की गई आयात मात्रा से की गई और वह समान सीमा में पाई गई।
141. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने दावा किया है कि आयातों ने क्षति अवधि के दौरान निरंतर बढ़ता प्रवृत्ति प्रदर्शित नहीं किया है, और इसलिए, कोई सतत चोटिल आयात दबाव नहीं है। प्राधिकारी अन्य हितबद्ध पक्षकारों के दावों से असहमत हैं और ध्यान देते हैं कि न तो पाटन रोधी समझौता और न ही एडी नियमावली, 1995 संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान आयातों में निरंतर वृद्धि के निष्कर्ष की आवश्यकता रखता है।
142. आरआरपीसी ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग बढ़ी हुई भारतीय मांग का एकमात्र लाभार्थी रहा है। प्राधिकारी इस दावे से असहमत हैं क्योंकि संबद्ध देशों से संबद्ध आयात भी आधार वर्ष और जांच अवधि के बीच भारतीय मांग में वृद्धि के साथ बढ़े हैं। संबद्ध आयातों की मात्रा में वृद्धि नीचे से स्पष्ट है:

	2022- 23	2023- 24	जांच अवधि	जांच अवधि आधार वर्ष की तुलना में
संबद्ध देश आयात	104%	-6%	-26%	42%

143. जहाँ तक इस अनुरोध का प्रश्न है कि संबद्ध देशों से आयातों का कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं है क्योंकि घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान अपनी बिक्री बढ़ाने में सक्षम रहा है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पूंजी-गहन उद्योग में, नव प्रचालित क्षमता को निष्क्रिय रखने की लागत काफी अधिक होती है। इसलिए उत्पादन और बिक्री में वृद्धि, अपने आप में, क्षति की अनुपस्थिति का संकेत नहीं देती। प्रासंगिक प्रश्न यह है कि क्या ऐसी बिक्री पारिश्रमिक कीमतों पर की गई थी। जैसा कि नीचे के अनुभागों में देखा जा सकता है, घरेलू उद्योग पाटित किए गए आयातों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए लागत से नीचे बेचने के लिए बाध्य हुआ था। इस प्रकार, मूल्य और वित्तीय मापदंडों में गिरावट के माध्यम से प्राप्त मात्रा मापदंडों में सुधार क्षति की अनुपस्थिति का संकेत नहीं देता।
144. इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि आरआरपीसी ने तर्क दिया है कि मूल्य और मात्रा प्रभाव से संबंधित मुद्दे पृथक हैं और प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि केवल घरेलू उद्योग की बढ़ी हुई बिक्री और उसके परिणामस्वरूप बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि के तथ्य पर विचार करें। प्राधिकारी घरेलू उद्योग को क्षति के आकलन के लिए ऐसे पृथक दृष्टिकोण से असहमत हैं। बिक्री/बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि की जांच कीमतों में गति का हिसाब रखे बिना स्वतंत्र रूप से नहीं की जा सकती क्योंकि ऐसी गतियाँ विशेष रूप से जिस उत्पादों के संबंध में हमेशा परस्पर जुड़ी होती हैं।

छ.3.3 पाटित किए गए आयातों का कीमत प्रभाव

145. एडी नियमावली, 1995 के अनुबंध II (ii) के अनुसार पाटित किए गए आयातों के कीमतों पर प्रभाव के संबंध में, प्राधिकारी को इस पर विचार करना आवश्यक है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित किए गए आयातों द्वारा महत्वपूर्ण कीमत कटौती हुआ है, या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों को महत्वपूर्ण स्तर तक अवसादित करना या मूल्य वृद्धियों को, जो अन्यथा घटित होतीं, महत्वपूर्ण स्तर तक रोकना है।

क) कीमत कटौती

146. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को न्यून कर रहे हैं, जांच अवधि के दौरान संबद्ध आयातों की पहुँच कीमत की तुलना घरेलू उद्योग के तुलनीय पीसीएन के विक्रय मूल्य से करके कीमत कटौती पीसीएन-वार निकाला गया है। इस प्रकार निर्धारित कीमत कटौती नीचे प्रदान किया गया है:

पीसीएन	पहुँच कीमत (₹/मी.टन)	निवल बिक्री वसूली (₹/मी.टन)	कीमत कटौती (₹/मी.टन)	कीमत कटौती (%)	कीमत कटौती सीमा
विचाराधीन उत्पाद (भारित औसत)	93,123	***	***	***	0-5

* आयात मात्राओं पर आधारित भारित औसत कीमत

147. देश-वार कीमत कटौती नीचे दिया गया है:

देश	पहुँच कीमत (भारित औसत) (₹/मी.टन)	निवल बिक्री वसूली (भारित औसत) (₹/मी.टन)	कीमत कटौती (₹/मी.टन)	कीमत कटौती (%)	कीमत कटौती सीमा
मलेशिया	78,860	***	***	***	20-30
सऊदी अरब	97,871	***	***	***	(10)-0
संयुक्त अरब अमीरात	93,659	***	***	***	0-10

देश	पहुँच कीमत (भारित औसत) (₹/मी.टन)	निवल बिक्री वसूली (भारित औसत) (₹/मी.टन)	कीमत कटौती (₹/मी.टन)	कीमत कटौती (%)	कीमत कटौती सीमा
संबद्ध देश	94,075	***	***	***	0-10

148. उपरोक्त से यह ध्यान दिया जाता है कि समग्र रूप से संबद्ध देशों से भारत औसत कीमत कटौती जांच अवधि के दौरान सकारात्मक है। आगे यह नोट किया जाता है कि सभी संबद्ध देशों में से केवल एक देश, अर्थात् सऊदी अरब के संबंध में कीमत कटौती ऋणात्मक है।
149. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी तर्क दिया है कि आवेदक ने संपूर्ण क्षति अवधि के लिए कीमत कटौती प्रदान नहीं किया है। इस संबंध में, प्राधिकारी एडी नियमावली, 1995 के अनुबंध II के पैरा (ii) को स्मरण करते हैं, जिसमें "पाटित किए गए आयातों द्वारा कीमत कटौती" के निर्धारण की आवश्यकता है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि चूंकि पाटन का आकलन जांच अवधि के संबंध में किया जाता है, तदनुसार, कीमत कटौती भी केवल जांच अवधि के लिए निर्धारित किया जा सकता है न कि संपूर्ण क्षति अवधि के लिए।
150. एडीपीसीएल ने तर्क दिया है कि जांच अवधि में यूएई की पहुँच कीमत सर्वोच्च है और इसलिए, यूएई से आयातों को कोई क्षति आरोप्य नहीं है। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि एक बार जब वे संबद्ध देशों से पाटित किए गए आयातों की मात्रा को संचयित करने का निर्णय लेते हैं, तब व्यक्तिगत कीमत कटौती के रुझानों की जांच महत्वहीन हो जाती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि न तो एडीपीसीएल और न ही यूएई दूतावास ने यूएई से संबद्ध आयातों के गैर-संचयन के लिए कोई तर्क प्रस्तुत किए हैं।
151. इसी प्रकार, सदारा ने दावा किया है कि भारत को उसके निर्यात उच्चतर कीमतों पर हैं और उसने घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं पहुँचाई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्हें निर्यातक विशिष्ट कीमत कटौती की जांच करने की आवश्यकता नहीं है।

ख) कीमत हास/न्यूनीकरण

152. घरेलू बाजार में मूल्य दमन और अवसाद का विश्लेषण करने के प्रयोजन के लिए, आवेदकों ने (क) बिक्री लागत, (ख) घरेलू विक्रय मूल्य के बारे में सूचना प्रदान की है जैसा कि नीचे तालिका में दिया गया है।

कीमत हास/कीमत न्यूनीकरण

विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
बिक्री लागत	₹/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	125	106	105
पहुँच कीमत	₹/मी.टन	1,02,938	1,03,508	89,898	90,394
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	101	87	88
विक्रय मूल्य	₹/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	111	90	91

153. यह ध्यान दिया जाता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री लागत 2022-23 तक बढ़ी, और इसके बाद गिरी, तथापि, जांच अवधि में यह आधार वर्ष से ऊपर बनी रही है। इसके अलावा, आधार वर्ष और जांच अवधि के बीच, विक्रय मूल्य 12 सूचकांक अंकों से गिरा है, और इसने लगभग वही प्रवृत्ति अपनाया है जो आयातों की पहुँच कीमत का रहा है। इस प्रकार, जहाँ बिक्री लागत बढ़ी है, संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों की कीमतों में गिरावट के कारण, घरेलू उद्योग अपनी बिक्री लागत में वृद्धि के अनुरूप अपने विक्रय मूल्य बढ़ाने में सक्षम नहीं था।

154. याचिका में उपलब्ध सूचना के आधार पर, प्राधिकारी नोट करते हैं कि 2022-23 में बिक्री लागत में वृद्धि मुख्य रूप से घरेलू उद्योग की कच्चे माल की लागतों में वृद्धि से संचालित थी। इसके बाद, कच्चे माल की कीमतों में गिरावट के साथ, घरेलू उद्योग की बिक्री लागत गिर गई है। साथ ही, यह ध्यान दिया जाता है कि जहाँ संबद्ध देशों से आयातों की पहुँच कीमत आधार वर्ष में घरेलू उद्योग की बिक्री लागत से ऊपर थी, 2022-23 से वे घरेलू

उद्योग की बिक्री लागत से नीचे रही हैं। इस प्रकार, संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों ने घरेलू उद्योग पर निरंतर मूल्य दबाव डाला है।

155. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग अपने विक्रय मूल्य को अपनी बिक्री लागत के अनुरूप बढ़ाने और घटाने में सक्षम रहा है और इसलिए, पाटित किए गए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं है। यह भी तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग पहुँच कीमत में गिरावट के बावजूद अपनी कीमत बढ़ाने में सक्षम रहा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों की पहुँच कीमत, वित्त वर्ष 2022-23 से, घरेलू उद्योग की बिक्री लागत से नीचे बनी हुई है। इसके अलावा, 2023-24 की तुलना में जांच अवधि के दौरान पाटित किए गए आयातों की पहुँच कीमत में वृद्धि के साथ, घरेलू उद्योग अपनी कीमतें बढ़ाने में सक्षम रहा है।
156. प्राधिकारी अखिल भारतीय एचडीपीई/पीपी बुने कपड़े निर्माता संघ की अनुरोधों पर भी ध्यान देते हैं जिसमें यह कहा गया है कि घरेलू उद्योग अपनी कीमतें आयात मूल्य समता पर निर्धारित करता है, इस प्रकार यह इंगित करता है कि घरेलू उद्योग संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों की पहुँच कीमतों का मिलान करने के लिए बाध्य है, और इस प्रकार घरेलू उद्योग की कीमत गतियाँ आवश्यक रूप से संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं की पहुँच कीमत की गति से जुड़ी हुई हैं।

छ.3.4 घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंड

157. एडी नियमावली, 1995 का अनुबंध II प्रावधान करता है कि घरेलू उद्योग पर पाटित किए गए आयातों के प्रभाव की जांच में उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी प्रासंगिक आर्थिक कारकों और सूचकांकों का वस्तुनिष्ठ और निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होना चाहिए, जिनमें बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सेदारी, उत्पादकता, निवेश पर प्रत्याय या क्षमता के उपयोग में वास्तविक और संभावित गिरावट; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन का परिमाण; नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि और पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं। तदनुसार, घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति मापदंडों की चर्चा नीचे की गई है।

क) उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और बिक्री मात्राएँ

158. प्राधिकारी ने क्षति अवधि में घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री मात्रा पर विचार किया है।

विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच की अवधि
क्षमता	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	100	238	307
उत्पादन (विचाराधीन उत्पाद + गैर-विचाराधीन उत्पाद)	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	108	219	321
क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	108	92	105
उत्पादन (पीयूसी)	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	155	503	826
घरेलू बिक्री	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	152	511	798

159. उपरोक्त से, प्राधिकारी नोट करते हैं कि:

- घरेलू उद्योग की स्थापित क्षमता और उत्पादन क्षति अवधि में बढ़े हैं। परिणामस्वरूप, घरेलू बिक्री भी क्षति अवधि में बढ़ी है।
- घरेलू उद्योग ने समझाया है कि वित्त वर्ष 2023-24 और जांच अवधि के बीच सुधार एचएमईएल द्वारा विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन और बिक्री शुरू करने के कारण था।

160. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने प्रस्तुत किया है कि एचएमईएल आधार वर्ष में अस्तित्व में नहीं था, इसलिए, प्राधिकारी जांच अवधि के क्षति मापदंडों की आधार वर्ष से तुलना नहीं कर सकता। प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष में किसी उत्पादक का अस्तित्व न होना

प्राधिकारी को क्षति अवधि में घरेलू उद्योग की स्थिति की जांच करने से रोकता नहीं है। यह ध्यान दिया जाता है कि एडी नियमावली, 1995 और पाटन रोधी पर विश्व व्यापार संगठन समझौता दोनों प्राधिकारी को घरेलू उद्योग की स्थिति की जांच करने की अपेक्षा करते हैं न कि व्यक्तिगत घरेलू उत्पादकों की स्थिति की। तथापि, नीचे क्षति जांच के लिए, घरेलू उद्योग की स्थिति को, जैसा कि वह क्षति जांच अवधि के दौरान अस्तित्व में थी, उचित महत्व दिया गया है। इस प्रकार, प्राधिकारी को उन सभी तथ्यों की जांच करना आवश्यक है जो घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डाल सकते हैं जिसमें क्षति अवधि के दौरान किसी घरेलू उत्पादक द्वारा उत्पादन शुरू करने से संबंधित तथ्य शामिल हैं।

ख) बाजार हिस्सेदारी

161. घरेलू उद्योग और आयातों की बाजार हिस्सेदारी नीचे तालिका में दर्शाई गई है:

बाजार हिस्सेदारी	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	152	511	798
समर्थकों की बिक्री	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	104	99	106
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	72	76	72
कुल भारतीय बिक्री	मी.टन	***	***	***	***

बाजार हिस्सेदारी	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	101	103	116
संबद्ध देशों से आयात	मी.टन	1,60,803	2,73,231	2,83,797	2,36,986
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	170	176	147
अन्य देशों से आयात	मी.टन	3,70,200	6,07,483	5,88,368	4,79,863
कुल आयात	मी.टन	5,31,004	8,80,714	8,72,165	7,16,849
भारत में मांग	मी.टन	33,78,651	32,65,325	35,74,741	36,31,353
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	97	106	107
बाजार हिस्सेदारी %					
घरेलू उद्योग	%	***	***	***	***
सीमा		0-10%	0-10%	10-20%	10-20%
घरेलू उद्योग + समर्थक	%	***	***	***	***
सीमा		70-80%	60-70%	50-60%	50-60%
अन्य भारतीय उत्पादक	%	***	***	***	***
सीमा		50-60%	40-50%	30-40%	30-40%
भारतीय		***	***	***	***

बाजार हिस्सेदारी	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
एलएलडीपीई उद्योग					
सीमा		80-90%	70-80%	70-80%	70-80%
संबद्ध देश	%	5%	8%	8%	7%
सीमा		0-10%	10-20%	10-20%	0-10%
अन्य देश आयात	%	11%	19%	16%	13%
सीमा		10-20%	10-20%	10-20%	10-20%

162. उपरोक्त से, यह ध्यान दिया जाता है:

- i. घरेलू उद्योग की बाजार हिस्सेदारी जांच अवधि सहित क्षति अवधि में बढ़ी है, जबकि भारतीय उद्योग की बाजार हिस्सेदारी आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में गिर गई है।
- ii. घरेलू उद्योग की बाजार हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2022-23 तक लगभग स्थिर रही लेकिन इसके बाद बढ़ गई। इसके बाद, वित्त वर्ष 2023-24 में एचएमईएल द्वारा उत्पादन और बिक्री शुरू करने के साथ, पहले वित्त वर्ष 2022-23 में गिरने के बाद, वित्त वर्ष 2023-24 में घरेलू उद्योग और भारतीय एलएलडीपीई उद्योग की बाजार हिस्सेदारी बढ़ी।
- iii. घरेलू उद्योग और भारतीय एलएलडीपीई उद्योग की बाजार हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2023-24 की तुलना में जांच अवधि में बढ़ी। बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि मुख्यतः एचएमईएल के कारण है। तथापि, आधार वर्ष और जांच अवधि के बीच भारतीय एलएलडीपीई उद्योग की बाजार हिस्सेदारी में गिरावट दर्ज की गई है।

163. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने टिप्पणी की है कि आधार वर्ष और जांच अवधि के बीच घरेलू उद्योग की बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि घरेलू उद्योग को कोई क्षति न होने का संकेत है।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि वित्त वर्ष 2023-24 में एचएमईएल द्वारा उत्पादन शुरू करने के बाद, जांच अवधि में घरेलू उद्योग की बाजार हिस्सेदारी वास्तव में बढ़ी है। तथापि, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि मुख्यतः एचएमईएल के कारण थी और ऐसी बढ़ी हुई बिक्री लागत से नीचे बिक्री करके प्राप्त की गई थी। इसी प्रकार, समग्र रूप से भारतीय उद्योग की बाजार हिस्सेदारी भी 2023-24 और जांच अवधि में बढ़ी है। तथापि, आधार वर्ष की तुलना में, अन्य भारतीय उत्पादकों और भारतीय एलएलडीपीई उद्योग की बाजार हिस्सेदारी गिर गई है।

164. आगे यह नोट किया जाता है कि यद्यपि वित्त वर्ष 2023-24 और जांच अवधि के बीच संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में गिरावट आई है, आधार वर्ष की तुलना में, जांच अवधि में संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों की बाजार हिस्सेदारी आधार वर्ष के स्तरों से ऊपर बनी हुई है।
165. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने प्रस्तुत किया है कि संबद्ध देशों से आयात अपेक्षाकृत स्थिर हिस्सा रखते हैं, और ऐसे सीमित हिस्से को घरेलू उद्योग को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने वाला नहीं माना जा सकता। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पहले, भारतीय मांग में संबद्ध आयातों का हिस्सा महत्वपूर्ण है और आधार वर्ष की तुलना में बढ़ा है। इसके अलावा, जबकि संबद्ध देशों से आयात 2023-24 से गिरे हैं, जिस पहुँच कीमत पर ऐसे आयात भारत में प्रवेश किए हैं वह भी गिरी है। घरेलू उद्योग ने समझाया है कि उसे ऐसे आयातों से प्रतिस्पर्धा करने और अपनी बाजार हिस्सेदारी के लिए अपनी कीमतें कम करनी पड़ीं और लागत से नीचे बिक्री करनी पड़ी।

ग) मालसूची

166. क्षति अवधि में घरेलू उद्योग की मालसूची स्थिति नीचे तालिका में दी गई है:

विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
औसत मालसूची	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांकित	100	113	1,115	1,040

167. यह ध्यान दिया जाता है कि घरेलू उद्योग की मालसूची वित्त वर्ष 2023-24 की तुलना में जांच अवधि में गिरी है और आधार वर्ष तथा 2022-23 की तुलना में बढ़ी है।

घ) लाभप्रदता, नकद लाभ और नियोजित पूंजी पर प्रत्याय

168. क्षति अवधि में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता, निवेश पर प्रत्याय और नकद लाभ नीचे तालिका में दिए गए हैं:

विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
कर पूर्व लाभ	₹/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	(100)	(2509)	(5728)	(4950)
कर पूर्व ब्याज लाभ	₹/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	(431)	(921)	(864)
कर पूर्व लाभ	₹/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	(141)	(433)	(394)
नकद लाभ	₹/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	(674)	(1957)	(1645)
नियोजित पूंजी पर आय	%	***	***	***	***
सीमा	%	0-10	(10)-0	(20)-(10)	(20)-(10)

169. उपरोक्त से, प्राधिकारी नोट करते हैं कि:

- यह ध्यान दिया जाता है कि घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान महत्वपूर्ण हानियाँ दर्ज की हैं। इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान

नकद हानियाँ उठाई और जांच अवधि के दौरान ऋणात्मक प्रत्याय संचित किया है।

- ii. प्राधिकारी आगे इस तथ्य पर ध्यान देते हैं कि एक नए उत्पादक, एचएमईएल, ने क्षति अवधि के दौरान उत्पादन शुरू किया है। यह जांच करने के लिए कि क्या घरेलू उद्योग के लाभप्रदता मापदंडों में गिरावट मूल्यहास और ब्याज लागत के कारण थी, प्राधिकारी ने एचएमईएल और एचपीएल की लागतों की तुलना की और मूल्यहास और ब्याज लागत को समान सीमा में पाया।
- iii. आगे यह नोट किया जाता है कि बिक्री मात्रा में वृद्धि के बावजूद, घरेलू उद्योग का नियोजित पूंजी पर प्रत्याय ऋणात्मक बना हुआ है।

170. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग ने वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान बिक्री लागत में वृद्धि के कारण हानियाँ अर्जित कीं और इसलिए घरेलू उद्योग को क्षति आंतरिक अक्षमताओं के कारण है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि बिक्री लागत में वृद्धि वित्त वर्ष 2022-23 में कच्चे माल की लागत में वृद्धि के कारण थी। आगे यह नोट किया जाता है कि जबकि घरेलू उद्योग स्वउपभोग के लिए एथिलीन और प्रोपिलीन का निर्माण करता है, यह एथिलीन और प्रोपिलीन के लिए फीडस्टॉक बाजार कीमतों पर खरीदता है। इस प्रकार, लागत में वृद्धि कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि के कारण थी और आंतरिक अक्षमताओं के कारण नहीं थी।

171. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी तर्क दिया है कि जांच अवधि के दौरान बिक्री लागत में गिरावट के बावजूद, घरेलू उद्योग हानियाँ उठाना जारी रखे हुए है और इसलिए, घरेलू उद्योग को हानियाँ संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों की पहुँच कीमत की गति के कारण नहीं हैं। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जबकि जांच अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री लागत गिरी, संबद्ध देशों से संबद्ध आयात जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री लागत से नीचे कीमतों पर भारतीय बाजार में प्रवेश करते रहे। अपनी बाजार हिस्सेदारी बनाए रखने के लिए, घरेलू उद्योग ने संबद्ध देशों से आयातों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए अपनी लागत से नीचे बिक्री करना जारी रखा।

172. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि एचपीएल और एचएमईएल के बीच महत्वपूर्ण लागत और मूल्य अंतर मौजूद है। यह दावा किया गया है कि जबकि जांच अवधि में घरेलू

उद्योग की बिक्री लागत 16% गिरी, एचपीएल की बिक्री लागत मात्र 5% गिरी, जो इंगित करता है कि लागत में कमी मुख्यतः एचएमईएल द्वारा संचालित थी, जो एक नया उत्पादक है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कच्चा माल और उपयोगिताएँ घरेलू उद्योग की बिक्री की कुल लागत का 80-90% होती हैं और इस प्रकार, कच्चे माल की कीमतें और उपभोग लागत के प्रमुख चालक थे। प्राधिकारी ने आगे दोनों संस्थाओं के कच्चे माल के उपभोग मानदंडों की तुलना की और उन्हें समान पाया। दोनों संस्थाओं की लागत में अंतर मुख्यतः नियत लागत अवशोषण के स्तरों में अंतर के कारण है जो एचपीएल के मामले में अधिक था, जो कम कीमत वाले पाटित किए गए आयातों के निरंतर दबाव के कारण इसके निम्न उत्पादन और क्षमता उपयोग के कारण था।

173. एचपीएल के विपरीत, एचएमईएल ने 2017 में अपना संयंत्र चालू किया और वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान उत्पादन शुरू किया। एचएमईएल ने समझाया है कि एक बार जब उसने वित्त वर्ष 2023-24 में उत्पादन शुरू किया, तो स्थिरीकरण प्राप्त करने के लिए अपना उत्पादन और क्षमता उपयोग बढ़ाना आवश्यक था। इसके अलावा, उत्पादन में ऐसी वृद्धि भारत में संबद्ध वस्तुओं की बढ़ती मांग के अनुरूप थी।
174. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग जांच अवधि में बढ़ी हुई मूल्यहास और ब्याज लागत के कारण क्षति का सामना कर रहा है। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि स्थापित क्षमता में वृद्धि के परिणामस्वरूप, क्षति अवधि में घरेलू उद्योग की ब्याज लागत और मूल्यहास वास्तव में बढ़े हैं। आगे यह नोट किया जाता है कि एचएमईएल और एचपीएल दोनों मूल्यहास के आवंटन के लिए सीधी रेखा पद्धति का पालन करते हैं और इस प्रकार इसे परिसंपत्तियों के उपयोगी जीवन पर आवंटित किया जाता है। जहाँ तक इस अनुरोध का प्रश्न है कि घरेलू उद्योग को हानियाँ पूर्णतः मूल्यहास और ब्याज लागत के कारण हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग न केवल नकद हानियों में है, बल्कि इसका मूल्यहास ब्याज कर पूर्व लाभ भी काफी ऋणात्मक है, जैसा कि नीचे तालिका से स्पष्ट है:

विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
नकद लाभ	₹/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	(674)	(1,957)	(1,645)

विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
ब्याज लागत	₹/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	141	373	268
कर पूर्व लाभ (ब्याज लागत से पहले नकद लाभ)	₹/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	(141)	(433)	(394)

175. उपरोक्त के मद्देनजर प्राधिकारी यह नहीं मानते कि घरेलू उद्योग को क्षति बढ़े हुए मूल्यहास या ब्याज लागतों के कारण है।

ड) रोजगार, उत्पादकता और मजदूरी

176. घरेलू उद्योग के रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता के संबंध में स्थिति निम्नानुसार है:

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
1	कर्मचारियों की संख्या	संख्या	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचकांक	100	100	363	363
2	वेतन और मजदूरी	₹ लाख	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचकांक	100	103	765	739
3	प्रति दिन उत्पादकता	मी.टन/दिन	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचकांक	100	155	503	552

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
4	प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.टन/संख्या	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचकांक	100	155	139	152

177. यह ध्यान दिया जाता है कि कर्मचारियों की संख्या और उनकी मजदूरी आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बढ़ी है।

178. प्रति दिन उत्पादकता और प्रति कर्मचारी उत्पादकता भी घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि के परिणामस्वरूप संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान निरंतर बढ़ी है।

च) वृद्धि

विवरण	2022-23	2023-24	जांच अवधि	जांच अवधि आधार वर्ष के संबंध में
उत्पादन	***	***	***	***
घरेलू बिक्री	***	***	***	***
कर पूर्व लाभ	(***)	(***)	(***)	(***)
नकद हानियाँ	***	(***)	(***)	(***)
नियोजित पूंजी पर आय	(***)	(***)	(***)	(***)

179. घरेलू उद्योग का उत्पादन और बिक्री स्थापित क्षमता और संबद्ध वस्तुओं की मांग में वृद्धि के अनुरूप बढ़ी है। यह ध्यान दिया जाता है कि संबद्ध देशों से आयातों द्वारा डाले गए मूल्य दबाव के कारण, लाभप्रदता मापदंडों में काफी गिरावट आई है। इसके अलावा, जबकि उत्पादन और बिक्री बढ़ी है, बिक्री में वृद्धि उत्पादन में वृद्धि से कम थी।

छ) पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर प्रभाव

180. घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया है कि वह लाभ पर पर्याप्त प्रत्याय अर्जित करने में सक्षम नहीं रहा है और इसलिए, उसकी पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता काफी क्षतिग्रस्त हुई है। यह ध्यान दिया जाता है कि एचएमईएल ने 2017 में अपना संयंत्र चालू किया और अंततः वित्त वर्ष 2023-24 में उत्पादन शुरू किया। तथापि, लगभग 80-90% क्षमता उपयोग प्राप्त करने के बावजूद, एचएमईएल ऋणात्मक प्रत्याय अर्जित कर रहा है और नकद हानियों में है। घरेलू उद्योग ने यह भी दावा किया है कि पाटित किए गए आयातों के कारण बढ़ती मांग के बावजूद कोई नया निवेश नहीं किया जा रहा है क्योंकि घरेलू उत्पादक पहले से किए गए निवेशों पर प्रत्याय अर्जित करने में सक्षम नहीं रहे हैं।

ज) पाटन का परिमाण

181. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं की महत्वपूर्ण पाटन है, जिसने बाजार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को प्रभावित किया है।
182. पूर्वोक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी यह निष्कर्ष करते हैं कि घरेलू उद्योग को भौतिक क्षति पहुँची है।

छ.3.5 क्षति का समग्र आकलन

183. संबद्ध उत्पाद के आयातों और घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच निम्नलिखित दर्शाती है:
- संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान निरंतर उच्च स्तरों पर बने रहे हैं। जबकि संबद्ध देशों से संबद्ध आयात वित्त वर्ष 2022-23 में

बढ़ने के बाद गिर गए हैं, जांच अवधि में ऐसे आयातों की मात्रा आधार वर्ष के स्तर से ऊपर बनी हुई है।

- ii. संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों की पहुँच कीमत वित्त वर्ष 2023-24 में गिरी। यद्यपि, जांच अवधि के दौरान पहुँच कीमत में सुधार हुआ, संबद्ध देशों से आयात घरेलू उद्योग की बिक्री लागत से नीचे कीमतों पर भारतीय बाजार में प्रवेश करते रहे।
- iii. जांच अवधि में घरेलू उद्योग का उत्पादन और घरेलू बिक्री शेष क्षति अवधि की तुलना में बढ़े हैं। तथापि, बिक्री में वृद्धि लागत से नीचे बिक्री करके प्राप्त की गई।
- iv. घरेलू उद्योग की मालसूची आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बढ़ी है।
- v. घरेलू उद्योग का वित्तीय निष्पादन काफी खराब हुआ है। घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान ऋणात्मक प्रत्याय अर्जित कर रहा है और नकद हानियाँ उठा रहा है।

ज. गैर-आरोपण विश्लेषण और कारणात्मक संबंध

184. प्राधिकारी ने जांच की कि क्या एडी नियमावली, 1995 के तहत सूचीबद्ध अन्य कारक घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचा सकते थे। प्राधिकारी ने पाटित किए गए आयातों के अतिरिक्त अन्य ज्ञात कारकों की जांच की है और पता लगाया है कि क्या ऐसे कारक घरेलू उद्योग को क्षति का कारण हो सकते थे, ताकि अन्य कारकों से हुई क्षति, यदि कोई हो, पाटित किए गए आयातों पर आरोपित न की जाए। इस संबंध में प्रासंगिक कारकों में, अन्य बातों के साथ, पाटित कीमतों पर न बेची गई संबद्ध वस्तुओं की मात्रा, मांग में संकुचन या उपभोग के प्रतिरूप में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएँ, प्रौद्योगिकी में परिवर्तन, घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन और घरेलू उद्योग की उत्पादकता शामिल हैं।

क) तीसरे देशों से आयातों की मात्रा और मूल्य

185. यह नोट किया गया है कि गैर-विचाराधीन देशों से आयात भारत के कुल आयात का लगभग 65% हैं। ओमान, कतर और कुवैत से आयातों को छोड़कर, इन देशों से आयात घरेलू उद्योग की बिक्री लागत और क्षतिरहित कीमत से 10% से 20% अधिक पहुँच मूल्य पर भारत में आ रहे हैं। इसके अतिरिक्त, ऐसा कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है कि इन वस्तुओं का भारत में पाटन किया जा रहा है। अतः घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण अन्य देशों से हुए आयातों को नहीं माना जा सकता।
186. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि जाँच अवधि के दौरान कतर से आयातों की कीमतें पाटित आयातों की कीमतों के तुलनीय थीं। तथापि, कतर से आयात भारत में पाटित नहीं पाए गए।

इसके अतिरिक्त, ये आयात भारत के कुल आयात के 3% से कम तथा भारतीय माँग के लगभग 0.5% हैं।

187. कुवैत और ओमान से विचाराधीन आयात पाटित पाए गए हैं। तथापि, प्रत्येक देश से ऐसे आयात भारत के कुल आयात के 3% से कम हैं।

ख) मांग में संकुचन

188. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं की मांग, वित्त वर्ष 2022-23 में मामूली गिरावट के बाद, शेष क्षति जांच अवधि में निरंतर बढ़ी है। इसलिए, घरेलू उद्योग को मांग में संकुचन के कारण क्षति नहीं पहुँची है।

ग) उपभोग का प्रतिरूप

189. यह ध्यान दिया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के उपभोग के प्रतिरूप में कोई भौतिक परिवर्तन नहीं हुआ है, जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचा सकता था।

घ) प्रतिस्पर्धा की स्थितियाँ और व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएँ

190. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रतिस्पर्धा की स्थितियों या व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाओं का कोई साक्ष्य नहीं है जो घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति के लिए उत्तरदायी हो सकता था।

ङ) प्रौद्योगिकी में विकास

191. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचा सकता था।

च) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन

192. ऊपर जांची गई क्षति सूचना केवल घरेलू उद्योग के उसके घरेलू बाजार के संदर्भ में निष्पादन से संबंधित है। इस प्रकार, पहुँचाई गई क्षति घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन पर आरोपित नहीं की जा सकती।

छ) अन्य उत्पादों का निष्पादन

193. प्राधिकारी ने केवल संबद्ध वस्तुओं के निष्पादन से संबंधित आंकड़ों पर विचार किया है। इसलिए, उत्पादित और बेचे गए अन्य उत्पादों का निष्पादन घरेलू उद्योग को क्षति का संभावित कारण नहीं है।
194. उपर्युक्त कारकों के अलावा अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित ज्ञात कारकों की जांच का अनुरोध किया है जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचा सकते थे:

क. घरेलू उद्योग को क्षति एथिलीन के लिए कच्चे माल के रूप में नैप्था के उपयोग के कारण अंतर्निहित लागत हानि के कारण है

195. आरआरपीसी ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग एथिलीन के निर्माण के लिए नैप्था का उपयोग करने के कारण क्षति का सामना कर रहा है, जबकि सऊदी उत्पादक कच्चे माल के निर्माण के लिए ईथेन का उपयोग करते हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कारणात्मक संबंध विश्लेषण के तहत, प्राधिकारी को घरेलू उद्योग और संबद्ध देशों से निर्यातकों की संरचना में अंतर को संबोधित करने की आवश्यकता नहीं है। इस संबंध में, प्राधिकारी ईयू - बायोडीजल (अर्जेटीना) में पैनल की टिप्पणियों को स्मरण करते हैं:

"7.522. अर्जेटीना मुख्य रूप से ईयू प्राधिकारियों के इस निष्कर्ष पर आपत्ति उठाता है कि ईयू उद्योग की संरचना क्षति का कारण नहीं थी। अर्जेटीना द्वारा पहचाने गए दो कारक, अर्थात् ऊर्ध्वाधर एकीकरण की कमी और कच्चे माल तक पहुँच की कमी, अनिवार्य रूप से ईयू घरेलू उद्योग की अंतर्निहित विशेषताएँ हैं जो, अर्जेटीना के अनुसार, इसे अर्जेटीनी उत्पादकों की तुलना में कम प्रतिस्पर्धी बनाती हैं। तथापि, हमारे विचार में, तर्क की यह पंक्ति पाटन रोधी समझौते के अनुच्छेद 3 और इसके विभिन्न पैराग्राफों, जिसमें अनुच्छेद 3.5 शामिल है, के गलत पठन पर आधारित है। अनुच्छेद 3 द्वारा परिकल्पित क्षति की अवधारणा घरेलू उद्योग की स्थिति में नकारात्मक घटनाक्रमों से संबंधित है। अनुच्छेद 3 का आशय निर्यातक सदस्य की तुलना में घरेलू उद्योग की संरचना में अंतर को संबोधित करना नहीं है। बल्कि, अनुच्छेद 3.5 के पाठ से और ऐसे 'अन्य कारकों' की इसकी संकेतात्मक सूची से - जो सभी घरेलू उद्योग की स्थिति के घटनाक्रमों से संबंधित हैं - यह स्पष्ट है कि प्राधिकारी को उन विशेषताओं के संबंध में गैर-आरोपण विश्लेषण करने की आवश्यकता नहीं है जो घरेलू उद्योग में अंतर्निहित हैं और जांच प्राधिकारी द्वारा अपने क्षति विश्लेषण के प्रयोजनों के लिए विचार की गई अवधि के दौरान अपरिवर्तित रही हैं।"

196. प्राधिकारी नोट करते हैं कि तथ्य यह है कि घरेलू उद्योग के दोनों घटक आधार वर्ष की शुरुआत से (एचएमईएल के मामले में उत्पादन शुरू होने से) एक ही फीडस्टॉक से एथिलीन का निर्माण करते हैं। क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की फीडस्टॉक संरचना स्थिर थी। एक कारक जो प्रकृति में स्थैतिक है, जांच अवधि के दौरान लाभप्रदता में गिरावट की व्याख्या नहीं कर सकता। तदनुसार, इस कारक के लिए कोई गैर-आरोपण विश्लेषण किए जाने की आवश्यकता नहीं है।

ख. क्षति कमजोर वैश्विक मांग के कारण है

197. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को क्षति कमजोर वैश्विक मांग के कारण है और यह तथ्य स्वयं एचपीएल की वार्षिक रिपोर्ट में उल्लिखित किया गया है। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत में मांग क्षति अवधि में निरंतर बढ़ी है। आधार वर्ष और जांच अवधि के बीच, मांग 7% बढ़ी है। इसके अलावा, भारतीय मांग ने सकारात्मक वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि दर्ज की है। जबकि किसी भी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने वैश्विक उपभोग के संबंध में कोई आंकड़ा प्रदान नहीं किया है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वे भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच कर रहे हैं, जिसने मांग में स्थिर वृद्धि देखी है। तदनुसार, यह नहीं माना जा सकता कि क्षति कमजोर वैश्विक मांग के कारण है।

ग. क्षति अन्य घरेलू उत्पादकों के कारण और एचएमईएल के भारतीय बाजार में प्रवेश के कारण है

198. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को क्षति घरेलू उत्पादकों के बीच अंतर-प्रतिस्पर्धा के कारण है। यह आरोप लगाया गया है कि एचएमईएल, एक नया बाजार प्रवेशी होने के नाते, स्थापित खिलाड़ियों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए आक्रामक मूल्य निर्धारण का सहारा लिया है। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि बाजार में विभिन्न खिलाड़ियों के बीच प्रतिस्पर्धा बाजार शक्तियों का स्वाभाविक परिणाम है और इसलिए, सामान्य बाजार स्थिति है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि उपयोगकर्ता उद्योग की अनुरोधों से कि घरेलू उत्पादक आयात मूल्य समता का अनुसरण करते हैं। तथापि, यह जांच करने के लिए कि क्या एचएमईएल ने अन्य भारतीय उत्पादकों के हिस्से पर प्रतिकूल प्रभाव डाला था, प्राधिकारी ने तीन घरेलू उत्पादकों की बिक्री की तुलना की है:

बिक्री (मी.टन)	2021-22	2022-23	2023-24	जांच अवधि
रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड	***	***	***	***
सूचकांक	100	104	99	106
एचपीएल	***	***	***	***
सूचकांक	100	152	90	97
एचएमईएल	-	-	***	***
सूचकांक	-	-	100	167

199. उपरोक्त के आधार पर, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यदि एचएमईएल आक्रामक मूल्य निर्धारण रणनीति अपना रहा होता, तो अन्य घरेलू उत्पादकों की बिक्री नहीं बढ़ी होती। तथापि, जैसा कि ऊपर आंकड़ों से देखा जा सकता है, रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड और एचपीएल दोनों जांच अवधि के दौरान अपनी घरेलू बिक्री बढ़ाने में सक्षम थे। तदनुसार, यह नहीं कहा जा सकता कि क्षति एचएमईएल की मूल्य निर्धारण रणनीति के कारण है।

घ. एचएमईएल एक नया प्रवेशी है और क्षति अवधि के दौरान प्रचालनात्मक अवस्था में था

200. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने दावा किया है कि एचएमईएल क्षति अवधि के दौरान प्रचालनात्मक अवस्था में था और इसलिए, क्षति यदि कोई है, पाटित किए गए आयातों के कारण नहीं है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि एचएमईएल ने जांच अवधि के दौरान 80-90% का क्षमता उपयोग प्राप्त किया। इसके अलावा, प्राधिकारी ने एचएमईएल और एचपीएल के उपभोग मानदंडों की तुलना की है और उन्हें तुलनीय पाया है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, यदि घरेलू उद्योग को क्षति नए निवेश के कारण होती, तो ऐसी क्षति, वर्तमान तथ्यों के विपरीत, नकद हानियों और ऋणात्मक मूल्यहास ब्याज कर पूर्व लाभ में परिणत

नहीं होती। तदनुसार, यह नहीं माना जा सकता कि एचएमईएल को क्षति उसके हाल ही में उत्पादन शुरू करने के कारण है।

201. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी तर्क दिया है कि एचएमईएल को उसके उत्पादन के पहले वर्ष में हानियाँ प्रारंभिक अक्षमताओं के कारण थीं जो पाटन के बावजूद जांच अवधि में कम हो गई हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि एचएमईएल ने वित्त वर्ष 2023-24 में विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन शुरू किया। कच्चे माल और उपयोगिता मानदंड, उत्पादन के प्रारंभिक वर्ष के लिए भी, अन्य घरेलू उत्पादक के साथ तुलना किए गए और तुलनीय पाए गए। इसके अलावा, एचएमईएल की रूपांतरण लागत भी भाग लेने वाले विदेशी उत्पादकों से तुलनीय पाई गई।

ड. क्षति अन्य संबद्ध देशों के कारण है

202. कुवैत, ओमान, कतर और यूएई के भाग लेने वाले निर्यातकों ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को क्षति अन्य संबद्ध देशों के कारण है न कि उनके संबंधित संबद्ध देशों के कारण। प्राधिकारी नोट करते हैं कि एडी नियमावली, 1995 के अनुबंध II के पैरा (ii) के अनुसरण में उन्होंने संबद्ध देशों से आयातों को संचयित किया है। अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने व्यक्तिगत संबद्ध देशों के आयातों के गैर-संचयन के संबंध में कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किया है। तदनुसार, प्राधिकारी ने ऐसे तर्कों पर विचार नहीं किया है।

ज.1 कारणात्मक संबंध स्थापित करने वाले कारक

203. जबकि एडी नियमावली, 1995 के तहत सूचीबद्ध अन्य ज्ञात कारकों ने घरेलू उद्योग को क्षति नहीं पहुँचाई है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि निम्नलिखित मापदंड दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटित किए गए आयातों के कारण पहुँची है।
- संबद्ध देशों से संबद्ध आयात निरपेक्ष रूप में बढ़े हैं और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में सापेक्ष रूप में महत्वपूर्ण बने रहे हैं। विशेष रूप से, भारतीय उत्पादन क्षमता में महत्वपूर्ण वृद्धि के बावजूद आयात बढ़े हुए स्तरों पर बने रहे हैं।
 - संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं का पाटन हो रहा है।
 - समग्र रूप से संबद्ध देशों से कीमत कटौती सकारात्मक है।

- iv. संबद्ध वस्तुओं की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री लागत से काफी नीचे है और इस प्रकार, घरेलू उद्योग को लागतों की वसूली और युक्तियुक्त प्रत्याय अर्जित करने के लिए अपनी कीमतें बढ़ाने से रोक रही है।
- v. भारतीय एलएलडीपीई उद्योग की बाजार हिस्सेदारी आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में गिर गई है, जबकि संबद्ध देशों की बाजार हिस्सेदारी बढ़ गई है।
- vi. लागतों में कमी और विक्रय मूल्यों में वृद्धि के बावजूद, घरेलू उद्योग ऋणात्मक प्रत्याय अर्जित करता रहा है और जांच अवधि के दौरान नकद हानियाँ उठाई हैं।

204. प्राधिकारी, पूर्वोक्त के मद्देनजर, यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं की पाटन और घरेलू उद्योग को क्षति के बीच कारणात्मक संबंध विद्यमान है।

झ. क्षति अंतर का परिमाण

205. प्राधिकारी ने एडी नियमावली, 1995 के साथ पठित अनुबंध III, यथासंशोधित, में निर्धारित सिद्धांतों के आधार पर घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत निर्धारित की है। विचाराधीन उत्पाद की क्षति रहित कीमत घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान की गई उत्पादन लागत से संबंधित सूचना/आंकड़ों को अपनाकर निर्धारित की गई है। क्षति अंतर की गणना के लिए व्यक्तिगत संबद्ध देशों से पहुँच कीमत की तुलना करने हेतु क्षति रहित कीमत पर विचार किया गया है। क्षति रहित कीमत निर्धारित करने के लिए, क्षति अवधि में कच्चे माल और उपयोगिताओं के सर्वोत्तम उपयोग पर विचार किया गया है। क्षति अवधि में उत्पादन क्षमता के सर्वोत्तम उपयोग पर विचार किया गया है। असाधारण या अनावर्ती व्ययों को उत्पादन लागत से बाहर रखा गया है। एडी नियमावली, 1995 के अनुबंध III में निर्धारित अनुसार क्षति रहित कीमत पर पहुँचने के लिए विचाराधीन उत्पाद के लिए औसत नियोजित पूंजी (अर्थात्, औसत निवल स्थिर परिसंपत्तियाँ जमा औसत कार्यशील पूंजी) पर युक्तियुक्त प्रत्याय (कर-पूर्व @ 22%) को कर-पूर्व लाभ के रूप में अनुमत किया गया था।

206. एडीपीसीएल और सदारा ने तर्क दिया है कि अगस्त 2023 में एचएमईएल का उत्पादन शुरू होने को देखते हुए, इसके क्षति अंतर की गणना के लिए अनुबंध III को सीधे तौर पर लागू नहीं किया जा सकता और उन्होंने एचएमईएल के आंकड़ों को इसकी परियोजना रिपोर्ट में अनुमानों के साथ इष्टतम करने का अनुरोध किया है। उन्होंने आगे अनुरोध किया है कि केवल स्थापित उत्पादक, एचपीएल, के सर्वोत्तम उपयोग पर विचार किया जाना चाहिए ताकि

एचएमईएल की क्षति रहित कीमत बढ़ा-चढ़ाकर न आंकी जाए। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि एचएमईएल और एचपीएल दोनों विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन के लिए समान कच्चे माल और उपयोगिताओं का उपयोग करते हैं। प्राधिकारी ने आगे दोनों घरेलू उत्पादकों के कच्चे माल के उपभोग मानदंडों की तुलना की है और ऐसे उपभोग को समान सीमा में पाया है।

207. जहाँ तक एचएमईएल के आंकड़ों के इष्टतमीकरण का प्रश्न है, प्राधिकारी ने अनुबंध-III के प्रयोजन के लिए कच्चे माल और उपयोगिताओं के इष्टतमीकरण और एचएमईएल के लिए क्षति रहित कीमत के निर्धारण हेतु जांच अवधि के तिमाही आंकड़ों पर विचार किया है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि एचपीएल और एचएमईएल दोनों के उपभोग मानदंड समान सीमा में हैं और इसलिए, एचएमईएल की क्षति रहित कीमत की गणना के लिए एचपीएल के आंकड़ों पर विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार, प्राधिकारी के लिए सदारा और एडीपीसीएल की अनुरोधों को स्वीकार करने का कोई कानूनी या व्यावहारिक आधार नहीं है।
208. उपरोक्त के अनुसार, संबंधित उत्पादकों और निर्यातकों को एकल संस्था माना गया है और एकल क्षति अंतर आरोपित किया गया है जिसकी गणना सहयोगी संबंधित उत्पादकों और निर्यातकों के क्षति अंतरों के भारित औसत के आधार पर की गई थी।
209. पहुँच कीमत और ऊपर निर्धारित क्षति रहित कीमत के आधार पर, प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षति अंतर नीचे तालिका में प्रदान किया गया है।

क्षति मार्जिन तालिका

उत्पादक	पीसीएन	क्षति रहित कीमत (\$/मी.टन)	पहुँच कीमत (\$/मी.टन)	क्षति मार्जिन (\$/मी.टन)	क्षति मार्जिन (%)	क्षति मार्जिन (सीमा)
सऊदी अरब						
अल-जुबैल पेट्रोकेमिकल कंपनी ("केम्या")	एनएमजी	***	***	***	***	10-20
अरेबियन पेट्रोकेमिकल	एनएमजी	***	***	***	***	20-30

कंपनी ("पेट्रोकेम्या")						
ईस्टर्न पेट्रोकेमिकल कंपनी ("शर्क")	एनएमजी	***	***	***	***	20-30
जुबैल यूनाइटेड पेट्रोकेमिकल कंपनी ("यूनाइटेड")	एनएमजी	***	***	***	***	20-30
राबिघ रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल कंपनी	एनएमजी	***	***	***	***	20-30
सदारा केमिकल कंपनी	एनएमजी	***	***	***	***	0-10
यान्बू राष्ट्रीय पेट्रोकेमिकल कंपनी ("यानसाब")	एनएमजी	***	***	***	***	20-30
सऊदी अरामको - सैबिक समूह	एनएमजी	***	***	***	***	10-20
अन्य	सभी	***	***	***	***	20-30
यूएई						
अबू धाबी पॉलिमर्स कंपनी लिमिटेड	एनएमजी	***	***	***	***	10-20
अबू धाबी पॉलिमर्स कंपनी लिमिटेड	एमपीजी	***	***	***	***	20-30
अबू धाबी पॉलिमर्स कंपनी लिमिटेड	भारित औसत	***	***	***	***	10-20
अन्य	सभी	***	***	***	***	30-40
मलेशिया						10-20

सभी	सभी	***	***	***	***	30-40
-----	-----	-----	-----	-----	-----	-------

ज. शुल्क प्रभाव आकलन
सार्वजनिक हित और घरेलू उद्योग हित

ज.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

210. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा इस संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- i. हितबद्ध पक्षकारों ने प्रस्तुत किया कि एलएलडीपीई पैकेजिंग, फिल्मों, ढले हुए वस्तुओं और अन्य प्लास्टिक प्रसंस्करण अनुप्रयोगों सहित कई अनुप्रवाह क्षेत्रों के लिए एक महत्वपूर्ण कच्चा माल है।
- ii. यह तर्क दिया गया कि पाटन रोधी शुल्क लगाने से अनुप्रवाह उपयोगकर्ता उद्योगों की इनपुट लागत बढ़ेगी और भारतीय उपयोगकर्ताओं की लागत प्रतिस्पर्धात्मकता प्रभावित हो सकती है।
- iii. कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने भारत में मांग-आपूर्ति की स्थिति पर भरोसा किया और प्रस्तुत किया कि घरेलू उत्पादन कुल उपभोग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है। उन्होंने तर्क दिया कि आयातों पर कोई भी शुल्क आपूर्ति बाधाओं को और बढ़ा सकता है।
- iv. यह आगे प्रस्तुत किया गया कि भारत में एलएलडीपीई की मांग बढ़ने की अपेक्षा है और इसलिए, घरेलू आपूर्ति अंतराल को पाटने के लिए आयात आवश्यक बने रहते हैं।
- v. हितबद्ध पक्षकारों ने एलएलडीपीई आयातों पर मूल सीमा शुल्क की अस्थायी छूट का भी उल्लेख किया और प्रस्तुत किया कि सरकार का नीतिगत उद्देश्य पेट्रोरासायनिक इनपुटों की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करना, अनुप्रवाह उद्योगों पर लागत दबाव कम करना और आपूर्ति स्थिरता बनाए रखना था।
- vi. यह तर्क दिया गया कि यह जांच करते समय कि क्या पाटन रोधी शुल्क वाणिज्यिक और नीतिगत रूप से उचित है, प्रचलित भूराजनीतिक घटनाक्रमों और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान पर विचार किया जाना चाहिए।
- vii. एसआरटीपीएल ने प्रस्तुत किया कि यह एक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी केंद्र है और कोई भी पाटन रोधी शुल्क लगाने से इसकी अनुसंधान और विकास गतिविधियाँ प्रभावित हो सकती हैं।

- viii. हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी प्रस्तुत किया कि घरेलू उद्योग का यह दावा कि शुल्क प्रभाव 1% से कम होगा, प्राधिकारी द्वारा सत्यापित किया जाना चाहिए, चूंकि गणना निर्यातकों को प्रकट नहीं की गई थी।
- ix. भारतीय प्रसंस्कर्ता पहले से ही व्यवस्थित रूप से उच्च इनपुट लागतों के अधीन हैं, जहाँ विदेशी आपूर्तिकर्ता भारत को ऐसी कीमतों पर सामग्री प्रदान करते हैं जो चीन जैसे बाजारों को प्रस्तावित कीमतों से 150-200 अमेरिकी डॉलर प्रति मीट्रिक टन अधिक हैं। यह अंतर बाजार-चालित नहीं है बल्कि भारत में पाटन रोधी कार्रवाइयों के अनुमानित जोखिम का परिणाम है।
- x. घरेलू उद्योग सीमा शुल्क (7.5%) और भाड़े सहित आयात मूल्य समता पर सामग्री की आपूर्ति करता है। यह प्रभावी रूप से सुनिश्चित करता है कि घरेलू उत्पादक संपूर्ण शुल्क संरक्षण प्राप्त करें, जबकि अनुप्रवाह उपयोगकर्ता वैश्विक मानकों के सापेक्ष बढ़ी हुई कीमतों पर कच्चे माल की खरीद जारी रखते हैं।
- xi. शुल्क लगाने से कृत्रिम रूप से घरेलू कीमतें बढ़ेंगी, प्रतिस्पर्धी अनुशासन समाप्त होगा, और अनुप्रवाह सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की कीमत पर घरेलू उद्योग को अनुचित मूल्य निर्धारण शक्ति प्रदान करेगा।
- xii. घरेलू इनपुट लागतों में वृद्धि भारतीय प्रसंस्कर्ताओं को वियतनाम और अन्य आसियान अर्थव्यवस्थाओं जैसे देशों की तुलना में संरचनात्मक रूप से अप्रतिस्पर्धी बना देगी, जो मुक्त व्यापार समझौतों के तहत अधिमान्य व्यापार पहुँच से लाभान्वित होते हैं और वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी कीमतों पर कच्चे माल तक पहुँच रखते हैं।
- xiii. यदि कच्चे माल के आयात प्रतिबंधित होते हैं, तो तैयार वस्तुओं का आयात बढ़ जाएगा, जिससे घरेलू उत्पादन का प्रत्यक्ष विस्थापन होगा। अनुप्रवाह उद्योग, जो मूल्य जोड़ता है और बड़े पैमाने पर रोजगार उत्पन्न करता है, पीड़ित होगा।

अ.2 घरेलू उद्योग के विचार

211. घरेलू उद्योग द्वारा इस संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- i. घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने कोई परिमाणित अंतिम-उपयोगकर्ता प्रभाव आकलन प्रदान नहीं किया था।
- ii. यह प्रस्तुत किया गया कि, इसके विपरीत, घरेलू उद्योग ने यह स्थापित करने वाली विस्तृत गणनाएँ अभिलेख पर रखी थीं कि अंतिम उपयोगकर्ताओं पर पाटन रोधी शुल्क का प्रभाव 1% से कम होगा।

- iii. घरेलू उद्योग ने आगे प्रस्तुत किया कि पाटन रोधी शुल्क एक सुधारात्मक व्यापार उपचार है और आयातों को प्रतिबंधित नहीं करता। यह केवल सुनिश्चित करता है कि आयात निष्पक्ष और क्षति रहित कीमतों पर भारत में प्रवेश करें।
- iv. घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया कि एलएलडीपीई पर सीमा शुल्क को अस्थायी रूप से हटाना केवल मध्य पूर्व की स्थिति से जुड़ा एक अस्थायी उपाय था और इसे पाटन रोधी संरक्षण से इनकार करने का कारण नहीं माना जा सकता।
- v. यह भी तर्क दिया गया कि पाटन रोधी शुल्क प्रकृति में भावी हैं और भूराजनीतिक स्थिति काफी हद तक स्थिर हो गई थी।
- vi. घरेलू उद्योग ने आगे प्रस्तुत किया कि सीमा शुल्क हटाने से पाटित किए गए आयातों के विरुद्ध घरेलू उद्योग को उपलब्ध सीमित संरक्षण कम हो गया था और इसलिए, उपयुक्त पाटन रोधी शुल्क की आवश्यकता और मजबूत हो गई थी।
- vii. यह भी प्रस्तुत किया गया कि संबद्ध देशों से निर्यातक जहाजरानी मार्गों में अचानक व्यवधान के कारण उच्च मालसूची धारण कर रहे थे और, एक बार स्थिति सामान्य होने पर, ऐसी मालसूची आक्रामक रूप से भारत में पाटित की जा सकती थी, जिससे घरेलू उत्पादकों को क्षति और बढ़ सकती थी।

अ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

212. प्राधिकारी ने आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों सहित सभी हितबद्ध पक्षकारों से विचार आमंत्रित करते हुए जांच शुरू करने की सूचना जारी की। इसके अलावा, प्राधिकारी ने उपयोगकर्ताओं/उपभोक्ताओं से वर्तमान जांच से संबंधित प्रासंगिक सूचना प्रदान करने का भी अनुरोध किया जिसमें अंतिम उपयोगकर्ताओं पर पाटन रोधी शुल्क लगाने का संभावित प्रभाव, विचाराधीन उत्पाद की प्रतिस्थापनीयता, मांग की कीमत-संवेदनशीलता, दीर्घकालिक अनुबंध आदि शामिल हैं।
213. प्राधिकारी नोट करते हैं कि व्यापार उपचारात्मक उपाय लगाने का उद्देश्य आयातों को प्रतिबंधित करना नहीं है बल्कि अनुचित व्यापार प्रथाओं से घरेलू उद्योग को पहुँचाई गई क्षति को दूर करना और भारतीय बाजार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा स्थापित करना है। प्राधिकारी वास्तव में इस बात से अवगत हैं कि ऐसे शुल्कों का प्रभाव केवल विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उत्पादकों तक सीमित नहीं है बल्कि विचाराधीन उत्पाद के उपयोगकर्ताओं और

उपभोक्ताओं को भी प्रभावित करता है। जबकि शुल्क लगाने से घरेलू रूप से प्रतिस्पर्धा संबंधी चिंताएँ उत्पन्न हो सकती हैं लेकिन यह समवर्ती रूप से देश के भीतर नए उत्पादकों के उद्भव या आगे के निवेशों को भी प्रोत्साहित कर सकता है।

214. प्राधिकारी नोट करते हैं कि दो उपयोगकर्ता उद्योगों, अर्थात् एसआरटीपीएल और ईएमसीआईपीएल, ने वर्तमान जांच में भाग लिया है। जबकि एसआरटीपीएल ने आर्थिक हित प्रश्नावली दाखिल की है, ईएमसीआईपीएल ने आर्थिक हित प्रश्नावली दाखिल नहीं की है और स्वीकार्य रूप से, यह विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन या उपयोग में शामिल नहीं है। इसके अलावा, एसआरटीपीएल, स्वीकार्य रूप से, एक अनुसंधान केंद्र ने पाटन रोधी शुल्कों के प्रभाव की कोई गणना दाखिल नहीं की है। उपरोक्त उपयोगकर्ताओं के अलावा, अखिल भारतीय एचडीपीई/पीपी बुने कपड़े निर्माता संघ, एक उपयोगकर्ता उद्योग संघ ने भी वर्तमान जांच में भाग लिया है। तथापि, इसने संबद्ध वस्तुओं पर पाटन रोधी शुल्कों के प्रभाव से संबंधित कोई गणना प्रदान नहीं की है। दूसरी ओर, घरेलू उद्योग ने अंतिम-उपयोगकर्ता प्रभाव आकलन प्रदान किया है, जो दर्शाता है कि पाटन रोधी शुल्कों का प्रभाव, यदि अनुशंसित किया जाए, 1% से कम होगा।
215. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन रोधी शुल्क एक उपचारात्मक व्यापार उपाय है न कि आयातों पर प्रतिबंध। इसका उद्देश्य पाटित किए गए आयातों से उत्पन्न अनुचित मूल्य निर्धारण लाभ को निष्प्रभाव करने और भारतीय बाजार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा बहाल करने तक सीमित है। यह संबद्ध देशों से आयातों को प्रतिबंधित नहीं करता, न ही यह उपयोगकर्ताओं को वैश्विक आपूर्तिकर्ताओं से एलएलडीपीई प्राप्त करने से रोकता है।
216. प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि शुल्क लगाने के बाद भी भारतीय बाजार में घरेलू उत्पादकों, शुल्क-भुगतान वाले देशों से आयात और असंबद्ध देशों से आयात जारी रहेगा। इसलिए, यह आशंका कि पाटन रोधी शुल्क के परिणामस्वरूप एलएलडीपीई की अनुपलब्धता या आपूर्ति व्यवधान होगा, समर्थित नहीं है।
217. प्राधिकारी का कहना है कि उपयोगकर्ताओं पर प्रतिकूल प्रभाव के संबंध में अनुरोध सामान्य प्रकृति के हैं। किसी भी प्रयोक्ता ने ऐसा सत्यापन योग्य साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है, जिससे यह सिद्ध हो कि निर्धारित शुल्क के कारण डाउनस्ट्रीम परिचालन अव्यवहार्य हो जाएंगे,

उत्पादन लागत में उल्लेखनीय वृद्धि होगी अथवा उपभोक्ता मूल्यों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।

218. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि एलएलडीपीई डाउनस्ट्रीम उत्पादों में उपयोग किए जाने वाले कई इनपुट में से केवल एक है। ऐसे उत्पादों की अंतिम कीमत कई कारकों पर निर्भर करती है, जिसमें रूपांतरण लागत, श्रम, बिजली, योज्य, माल भाड़ा, वितरण लागत, प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी और मार्जिन शामिल हैं। इसलिए, एलएलडीपीई में किसी भी वृद्धि को तैयार उत्पादों की कीमत में समतुल्य वृद्धि के साथ यांत्रिक रूप से नहीं जोड़ा जा सकता है।
219. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान की गई गणनाओं की जांच की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पैकेजिंग, मोल्डिंग में उपयोग किए जाने वाले उत्पाद आम तौर पर विभिन्न प्रकार के एलएलडीपीई और अन्य पॉलीइथाइलीन जैसे एलडीपीई का संयोजन हैं। प्राधिकरण ने विभिन्न उत्पादों पर प्रभाव का आकलन निम्नानुसार किया है। इसे नीचे दर्शाया गया है:

Impact of Anti-Dumping Duty (ADD) on LLDPE Users & Consumers in India

Illustrative downstream impact analysis at ADD = USD 100/MT



₹ USD 100/MT ADD = approx. ₹9.68 per kg of LLDPE

Assumptions: Exchange rate: ₹96.8441/USD

#	Product	₹ Indicative Product Value	Article Weight	LLDPE Content	₹ Impact at USD 100/MT ADD (₹ increase per unit & % Impact)	
1	1 litre milk pouch	₹60	5 g	60%	₹0.03 per pouch (0.05%)	✓ Low Impact
2	1 kg rice / pulses pouch	₹60	8 g	60%	₹0.05 per pouch (0.08%)	✓ Low Impact
3	500 g snack / frozen food pouch	₹100	6 g	50%	₹0.03 per pouch (0.08%)	✓ Low Impact
4	Small retail carry bag	Goods value ₹300	10 g	70%	₹0.07 per bag (0.02%)	✓ Low Impact
5	Courier / e-commerce poly mailer	Shipment value ₹500	15 g	70%	₹0.10 per mailer (0.02%)	✓ Low Impact
6	25 kg industrial liner / bag	Packed goods value ₹1,000	60 g	70%	₹0.41 per bag (0.04%)	✓ Low Impact
7	50 kg heavy duty sack / liner	Packed goods value ₹1,125	120 g	70%	₹0.81 per bag (0.07%)	✓ Low Impact
8	Shrink film for multipack / carton	Packed goods value ₹500	20 g	90%	₹0.17 per pack (0.03%)	✓ Low Impact
9	Pallet stretch wrapping film	Goods value ₹50,000	500 g	90%	₹4.36 per pallet (0.009%)	✓ Low Impact

Absolute impact per unit at USD 100/MT ADD (₹ increase per unit)



CONSUMER PACKAGING
mostly **0.02% to 0.08%**
of product value



INDUSTRIAL PACKAGING
around **0.03% to 0.07%**
of packed product value



For most consumer and industrial applications, the impact of ADD at USD 100/MT is only **below 0.1%** of product value.



220. जैसा कि ऊपर से देखा जा सकता है, अंतिम उपभोक्ता उत्पाद पर शुल्कों का प्रभाव 0.5% से कम होगा।
221. अखिल भारतीय एचडीपीई संघ ने प्रस्तुत किया है कि संबद्ध देशों से निर्यातक भारत में पाटन रोधी कार्रवाइयों के अनुमानित जोखिम के कारण, उन कीमतों से 150-200 अमेरिकी डॉलर अधिक कीमत वसूलते हैं जिन पर ऐसी वस्तुएँ चीन को निर्यात की जाती हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन में कीमतें भारतीय बाजार की तुलना में अनेक कारकों जैसे आदेशों की मात्रा, मांग, वाणिज्यिक शर्तों आदि के कारण भिन्न हो सकती हैं। इसके अलावा, यदि निर्यातक दोनों बाजारों में निष्पक्ष व्यापार कर रहे हैं, तो ऐसे अंतर कीमत का कोई कारण नहीं है।
222. पाटन रोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भारतीय बाजार में कीमतों में वृद्धि के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि गैर-संबद्ध देशों के माध्यम से आयातों की एक महत्वपूर्ण मात्रा आती रहेगी। जांच अवधि के दौरान, लगभग 65% संबद्ध आयात गैर-संबद्ध देशों से आयात किए गए थे। इसके अलावा, भारतीय एलएलडीपीई बाजार अनेक एलएलडीपीई निर्माताओं की उपस्थिति से चित्रित है। इस प्रकार, घरेलू उत्पादकों के बीच आंतरिक प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ गैर-संबद्ध देशों से प्रतिस्पर्धा यह सुनिश्चित करेगी कि संबद्ध वस्तुएँ प्रतिस्पर्धी कीमतों पर उपलब्ध रहेंगी।
223. इसके अलावा, चूंकि लगभग 62% संबद्ध आयात गैर-संबद्ध देशों से आयातित होते रहेंगे, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उपभोक्ताओं के पास घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुओं के अलावा संबद्ध वस्तुओं की खरीद के लिए अनेक स्रोत बने रहेंगे।
224. प्राधिकारी हाल के पश्चिम एशिया संकट के प्रकाश में, विचाराधीन उत्पाद के आयातों पर केंद्र सरकार द्वारा प्रदान की गई मूल सीमा शुल्कों से छूट पर भी ध्यान देते हैं। यह ध्यान दिया जाता है कि उक्त छूट प्रकृति में अस्थायी है और जांच अवधि में घटित पाटन और क्षति के तथ्य पर कोई प्रभाव नहीं डालती।
225. प्राधिकारी यह भी मान्यता देते हैं कि दीर्घकालिक आपूर्ति सुरक्षा के लिए एक व्यवहार्य घरेलू एलएलडीपीई उद्योग महत्वपूर्ण है। निरंतर पाटन कुछ उपयोगकर्ताओं को अस्थायी मूल्य

लाभ दे सकती है, लेकिन यह घरेलू उत्पादन को कमजोर करेगी, निवेश घटाएगी, क्षमता उपयोग को क्षतिग्रस्त करेगी और विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता बढ़ाएगी।

226. इसलिए प्राधिकारी का मानना है कि सार्वजनिक हित का आकलन व्यापक रूप से किया जाना चाहिए, जिसमें निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा, घरेलू विनिर्माण क्षमता, रोजगार, निवेश, आपूर्ति स्थिरता और भारतीय मूल्य श्रृंखला की दीर्घकालिक सुदृढ़ता शामिल है।

227. तदनुसार, प्राधिकारी यह निष्कर्ष करते हैं कि उपयोगकर्ताओं और उपभोक्ताओं पर कथित प्रतिकूल प्रभाव अप्रमाणित और अतिरंजित है। पाटन रोधी शुल्क लगाने से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे, कमी उत्पन्न नहीं होगी या उपयोगकर्ताओं पर असंगत बोझ नहीं पड़ेगा। यह केवल सुनिश्चित करेगा कि आयात निष्पक्ष कीमतों पर भारत में प्रवेश करें और घरेलू उद्योग को क्षति न पहुँचाएँ।

ट. प्रकटीकरण-पश्चात टिप्पणियाँ

ट.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

228. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रस्तुतियाँ कीं:

सामान्य

- i. भारत ने सऊदी अरब से निर्यात, विशेष रूप से रसायनों और पेट्रो-रसायनों, के विरुद्ध बड़ी संख्या में व्यापार उपचार जाँचें प्रारंभ की हैं। यह प्रस्तुत किया गया कि बार-बार जाँचें प्रारंभ किए जाने से द्विपक्षीय व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और इनका उपयोग संरक्षणवादी उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

पात्रता

- ii. प्राधिकारी को समान वस्तु के सभी प्रासंगिक घरेलू उत्पादकों को शामिल करने के बाद स्वतंत्र रूप से यह निर्धारित करना चाहिए कि एचपीएल और एचएमईएल कुल घरेलू उत्पादन का प्रमुख अनुपात रखते हैं या नहीं।
- iii. विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम, विशेष आर्थिक क्षेत्र की इकाइयों द्वारा घरेलू बिक्री को प्रतिबंधित नहीं करता। ऐसी बिक्री का कानूनी परिणाम केवल यह है कि उस पर लागू सीमा-शुल्क देय होता है। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि संबंधित उत्पादक पाटनरोधी जाँच में घरेलू उद्योग की पात्रता के निर्धारण के लिए अप्रासंगिक हो जाता है।

- iv. ओपीएएल भारत में एलएलडीपीई का उत्पादन कर रहा था और भारतीय बाजार में इसकी पर्याप्त मात्रा की आपूर्ति कर रहा था। ऐसे उत्पादक को कुल घरेलू उत्पादन से बाहर रखने पर भारतीय उद्योग की वास्तविक स्थिति का पूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं होता।
- v. आरआईएल के आँकड़ों के संबंध में पूर्ण और सत्यापन योग्य प्रकटीकरण के अभाव में, आरआरपीसी घरेलू उद्योग की पात्रता पर सार्थक टिप्पणी नहीं कर सकता।

न्यून मात्रा वाले आयात

- vi. कुवैत से आयात की मात्रा कुल आयात का 2.44% तथा ओमान से आयात की मात्रा 2.90% है। चूँकि प्रत्येक देश से आयात का हिस्सा 3% से कम है और दोनों देशों का सामूहिक हिस्सा कुल आयात की मात्रा के 7% से कम है, अतः प्राधिकारी को नगण्य आयात मात्रा के आधार पर कुवैत और ओमान के विरुद्ध जाँच समाप्त करनी चाहिए।

उत्पादक/निर्यातक-विशिष्ट मुद्दे

- vii. केम्या ने विक्रय एवं वितरण व्यय समायोजन का विरोध करते हुए कहा कि उसने ये व्यय वहन नहीं किए। यदि समायोजन बनाए रखे जाते हैं, तो सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और सामान्य व्यापार क्रम परीक्षण में समान पद्धति अपनाई जानी चाहिए।
- viii. शार्क और एसपीडीसी ने मित्सुबिशी को संबद्ध पक्ष मानने का विरोध किया और अनुरोध किया कि उपलब्ध तथ्यों का प्रयोग, यदि किया जाए, तो केवल मित्सुबिशी के माध्यम से किए गए निर्यात तक सीमित रहे।
- ix. आरआरपीसी ने कहा कि सुमितोमो माध्यम उसके निर्यात के केवल एक भाग से संबंधित था। उसने उपलब्ध तथ्यों का प्रयोग उसी माध्यम तक सीमित रखने और सहयोगी समूह उत्पादकों पर लागू भारित औसत दर देने का अनुरोध किया।
- x. सदारा ने सऊदी अरामको-सैबिक समूह के लिए एक समान दर का विरोध किया। उसके अनुसार, केवल समान शेरधारिता परिचालन नियंत्रण या निर्यात को अन्य उत्पादक के माध्यम से मोड़ने की क्षमता सिद्ध नहीं करती।
- xi. सदारा ने यह भी दावा किया कि डाउ और सैबिक की विपणन संस्थाएँ उसकी विस्तारित विक्रय शाखाओं के रूप में कार्य करती हैं। इसलिए उनके विक्रय, सामान्य

एवं प्रशासनिक व्यय तथा लाभ की कटौती नहीं की जानी चाहिए और विपणन शुल्क के साथ इनकी कटौती दोहरी कटौती होगी।

- xii. डीसीआईपीएल ने कहा कि उसने केवल ऋण लागत का दावा किया था और प्रकटीकरण में माल-भाड़ा, बीमा, अंतर्देशीय परिवहन तथा बंदरगाह व्यय के उल्लेख को सुधारने का अनुरोध किया।

गैर-क्षतिकारक कीमत, मूल्य प्रभाव, क्षति और सार्वजनिक हित

- xiii. उत्पादन लागत और गैर-क्षतिकारक कीमत निर्धारित करते समय उप-उत्पाद, स्क्रेप और संयुक्त उत्पादों से प्राप्त वसूली का उचित समायोजन किया जाना चाहिए।
- xiv. सऊदी अरब से आयात पिछले दो वर्षों की तुलना में घटे और उनका मूल्य कटौती मार्जिन नकारात्मक था। इसलिए ऐसे आयातों से प्रतिकूल मात्रा या मूल्य प्रभाव नहीं पड़ा।
- xv. अधिकांश परिचालन मानदंडों में सुधार हुआ। कथित वित्तीय क्षति को एचएमईएल के आरंभिक संचालन, वित्तपोषण और मूल्यहास लागत, फीडस्टॉक अंतर, घरेलू प्रतिस्पर्धा, परिचालन व्यवधान तथा वैश्विक बाजार परिस्थितियों का परिणाम बताया गया। पक्षकारों ने यह भी प्रश्न उठाया कि क्या निर्यात प्रदर्शन से क्षति हुई।
- xvi. भारत में एलएलडीपीई की माँग-आपूर्ति में अंतर है और डाउनस्ट्रीम उद्योग आयात पर निर्भर है। शुल्क से कच्चे माल की लागत और प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने का दावा किया गया तथा वैकल्पिक रूप से शुल्क की अवधि दो वर्ष तक सीमित रखने का अनुरोध किया गया।

ट.2 घरेलू उद्योग के विचार

229. घरेलू उद्योग ने मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रस्तुतियाँ कीं:

उत्पाद दायरा, पीसीएन और घरेलू उद्योग

- बहिष्करण के अनुरोध साक्ष्य द्वारा समर्थित नहीं हैं और प्रकटीकरण में निर्धारित उत्पाद दायरे की पुष्टि की जानी चाहिए।
- निर्यातकों द्वारा रिपोर्ट किए गए पीसीएन का वास्तविक उत्प्रेरक, तकनीकी विशेषताओं और विनिर्माण प्रक्रिया के आधार पर सत्यापन किया जाना चाहिए।
- एचपीएल और एचएमईएल को नियम 2(ख) के अंतर्गत पात्र घरेलू उद्योग के रूप में पुष्टि की जानी चाहिए।

पाटन मार्जिन और बिक्री शृंखला संबंधी मुद्दे

- iv. कतर को छोड़कर अन्य संबद्ध देशों के भागीदार निर्यातकों के पाटन मार्जिन सकारात्मक और महत्वपूर्ण हैं। क्यूटोफिन के नकारात्मक मार्जिन की पुष्टि से पहले उसके समायोजनों की पुनः जाँच की जानी चाहिए।
- v. सुमितोमो की शेयरधारिता और वाणिज्यिक लेनदेन आरआरपीसी में उसकी निरंतर रणनीतिक भागीदारी दर्शाते हैं। मित्सुबिशी की वित्तीय रिपोर्टिंग में एसपीडीसी को संबद्ध संस्था बताया गया है।
- vi. अपूर्ण बिक्री शृंखला के कारण शार्क और आरआरपीसी की प्रश्नावली प्रतिक्रियाएँ उचित रूप से अस्वीकार की गईं। घरेलू उद्योग ने पूरे सऊदी अरामको-सैबिक समूह की प्रतिक्रिया अस्वीकार करने का अनुरोध किया।
- vii. पीरेफकेम और एसएपीपीएल के माध्यम से भेजी गई वस्तुओं की उत्पत्ति और बिक्री मार्ग स्पष्ट रूप से स्थापित नहीं हुए। इसलिए संबंधित बिक्री शृंखला को अस्वीकार करने का अनुरोध किया गया।
- viii. सदारा एनएमजी और एमपीजी दोनों श्रेणियों का उत्पादन करता है। सामान्य मूल्य सही पीसीएन के आधार पर निर्धारित होना चाहिए और महत्वपूर्ण गलत रिपोर्टिंग पाए जाने पर उसकी प्रतिक्रिया अस्वीकार की जानी चाहिए।

क्षति, गैर-क्षतिकारक कीमत और सार्वजनिक हित

- ix. पाटित आयात आधार वर्ष की तुलना में बढ़े, घरेलू उद्योग की बिक्री लागत से कम कीमत पर आए और मूल्य कटौती, दमन तथा अवनमन का कारण बने। उत्पादन और बिक्री में वृद्धि नई क्षमता और लागत से कम बिक्री के कारण हुई, जबकि हानि, नकद हानि और नकारात्मक प्रतिफल जारी रहे।
- x. निर्धारित गैर-क्षतिकारक कीमत घरेलू उद्योग के दावे से काफी कम है और इसकी पुनः जाँच की जानी चाहिए।
- xi. अंतिम उपभोक्ता पर शुल्क का अनुमानित प्रभाव 0.1% से कम है और कच्चे माल की कीमतों में बदलाव सामान्यतः रूपांतरण-लागत आधारित मूल्य निर्धारण के माध्यम से आगे हस्तांतरित हो जाते हैं।

ट.3 प्राधिकारी द्वारा परीक्षण

230. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग और अन्य इच्छुक पक्षों द्वारा प्रस्तुत प्रकटीकरण-पश्चात टिप्पणियों की जाँच की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रकटीकरण-पश्चात चरण में किए गए

अनेक प्रस्तुतीकरण, जाँच के दौरान पहले किए गए और प्रकटीकरण विवरण में पहले ही परीक्षण किए जा चुके प्रस्तुतीकरणों की पुनरावृत्ति हैं। तथापि, प्राधिकारी ने उन सभी प्रासंगिक टिप्पणियों पर विचार किया है, जो अभिलेख पर उपलब्ध साक्ष्य से समर्थित हैं और अंतिम निर्धारण के लिए महत्वपूर्ण हैं।

उत्पादक/निर्यातक-विशिष्ट मुद्दे

231. केम्या ने तर्क दिया है कि उसके कारखाना-बाह्य घरेलू बिक्री मूल्य और निर्यात कीमत के निर्धारण में समायोजन सही ढंग से लागू नहीं किए गए हैं। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इन अंतिम निष्कर्षों के पैरा 68 में वर्णित पद्धति के अनुसार, प्रत्येक व्यापारी के स्तर पर कारखाना-बाह्य मूल्य निर्धारित करने के लिए व्यापारी द्वारा वहन किए गए व्ययों को उसकी निर्यात कीमत अथवा सामान्य मूल्य से समायोजित किया गया है। इसके बाद उत्पादक द्वारा वहन किए गए व्ययों का समायोजन किया गया है। इसके अतिरिक्त, केम्या ने अपने संबद्ध उत्पादकों के विपरीत, अपने परिशिष्टों में किसी बिक्री, वितरण अथवा अन्य व्यय की सूचना नहीं दी। केम्या ने प्रकटीकरण विवरण पर अपनी टिप्पणियों में यह स्पष्ट नहीं किया कि जब उसने कोई बिक्री और वितरण व्यय वहन नहीं किया, तो घरेलू और निर्यात लेनदेन एफओबी आधार पर क्यों रिपोर्ट किए गए।
232. केम्या ने यह भी दावा किया है कि प्राधिकारी ने उसके सामान्य मूल्य में बिक्री और वितरण व्यय जोड़े हैं, जबकि निर्यात कीमत से इन्हें घटाया है। केम्या ने प्रस्तुत किया कि यदि प्राधिकारी सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत से ऐसे व्ययों की कटौती को उचित मानते हैं, तो यह समायोजन दोनों पर समान रूप से किया जाना चाहिए। प्राधिकारी स्पष्ट करते हैं कि केम्या द्वारा सुझाई गई पद्धति ही अपनाई गई है। बिक्री और वितरण व्यय को केम्या के सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत, दोनों से घटाया गया है और इस प्रकार दोनों की तुलना समान व्यापार स्तर पर की गई है।
233. केम्या के संबद्ध व्यापारी ईएमसीएपी ने कहा है कि केम्या का संयंत्र बंदरगाह के निकट स्थित है और इसलिए वह बिक्री एवं वितरण व्यय वहन नहीं करता। प्राधिकारी ने केम्या और उसके संबद्ध उत्पादकों की भौगोलिक स्थिति की जाँच की और पाया कि वे एक ही क्षेत्र में स्थित हैं। केवल संयंत्र का बंदरगाह के निकट होना यह सिद्ध नहीं करता कि माल के परिवहन शुल्क को छोड़कर। ईएमसीएपी ने यह स्पष्ट नहीं किया कि यदि केम्या इन व्ययों

को वहन नहीं करता, तो इन्हें कौन वहन करता है। अतः प्राधिकारी ने ईएमसीएपी के प्रस्तुतीकरण को स्वीकार नहीं किया है।

234. शार्क और एसपीडीसी ने तर्क दिया है कि मित्सुबिशी कॉरपोरेशन, जिसके माध्यम से वस्तुओं का भारत को निर्यात किया गया, उनका संबद्ध पक्ष नहीं है। इसलिए उनके निर्यात मूल्य और सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अंतर्गत नहीं किया जाना चाहिए था। उन्होंने यह भी कहा कि यद्यपि एसपीडीसी ने प्रश्नावली के परिशिष्टों में मित्सुबिशी के साथ अपने संबंध की प्रकृति नहीं बताई थी, तथापि संबंध निर्धारित करने के लिए अन्य साक्ष्य अभिलेख पर उपलब्ध थे। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यदि एसपीडीसी मित्सुबिशी को असंबद्ध पक्ष मानता था, तो उसे प्रश्नावली के परिशिष्टों में उसी रूप में घोषित किया जा सकता था। इसके विपरीत, एसपीडीसी ने दो अलग-अलग अवसरों पर आपूर्तिकर्ता एसपीडीसी और ग्राहक मित्सुबिशी के बीच संबंध से संबंधित कॉलम हटा दिए। एसपीडीसी द्वारा 6 नवंबर 2025 के ई-मेल में दिया गया स्पष्टीकरण बाद में दिया गया स्पष्टीकरण है, जो प्रथमदृष्टया गलत है और एसपीडीसी की वार्षिक रिपोर्ट के विपरीत है, जिसमें मित्सुबिशी कॉरपोरेशन को स्पष्ट रूप से संबद्ध पक्ष बताया गया है। इसके अतिरिक्त, सऊदी अरब से मोनो एथिलीन ग्लाइकोल के आयात से संबंधित पूर्व जाँच के अंतिम निष्कर्ष दिनांक 23 सितंबर 2025 में, जिसकी जाँच अवधि वर्तमान जाँच अवधि से आंशिक रूप से समान थी, मित्सुबिशी ने प्रश्नावली उत्तर में स्वयं को एसपीडीसी का संबद्ध पक्ष बताया था। प्राधिकारी द्वारा यह तथ्य प्रकट किए जाने के बाद भी एसपीडीसी ने न तो प्रकटीकरण विवरण के समय और न ही अंतिम निष्कर्षों के बाद इसका विरोध किया। यह स्थापित कानूनी सिद्धांत है कि स्वीकृत तथ्यों को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं होती। चूंकि मित्सुबिशी एसपीडीसी का संबद्ध पक्ष है और उसमें महत्वपूर्ण शेरधारिता रखता है, प्राधिकारी मानते हैं कि मित्सुबिशी, एसपीडीसी के माध्यम से शार्क पर प्रभाव डालने की स्थिति में है। अतः मित्सुबिशी को शार्क का संबद्ध पक्ष माना गया है।

235. आरआरपीसी ने प्रस्तुत किया है कि उसकी प्रश्नावली प्रतिक्रिया को अस्वीकार नहीं किया जाना चाहिए था, क्योंकि सत्यापन दस्तावेजों में सुमितोमो के पुनर्विक्रय मूल्य और लाभप्रदता से संबंधित सूचना दी गई थी। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जाँच 30 जून 2025 को प्रारंभ की गई थी और सभी इच्छुक पक्षों को 6 सितंबर 2025 तक प्रश्नावली उत्तर दाखिल करना था। इच्छुक पक्षों के अनुरोध पर यह समय-सीमा 12 सितंबर 2025 तक बढ़ाई गई। विचाराधीन वस्तु का संबद्ध निर्यातक होने के बावजूद सुमितोमो ने इस चरण में

प्रश्नावली उत्तर दाखिल नहीं किया। प्रश्नावली उत्तरों की प्रथमदृष्टया जाँच के बाद प्राधिकारी ने 15 अक्टूबर 2025 के ई-मेल द्वारा सभी भाग लेने वाले निर्यातकों को पूरक प्रश्नावली जारी कर अपनी प्रतिक्रियाएँ पूर्ण करने को कहा। आरआरपीसी ने 27 अक्टूबर 2025 के अपने पूरक उत्तर में भी सुमितोमो की ओर से कोई आँकड़ा नहीं दिया और न ही सुमितोमो ने स्वयं कोई उत्तर दाखिल किया। इसके बाद, उत्पादकों और निर्यातकों के आँकड़ों के डेस्क सत्यापन के दौरान, प्राधिकारी ने आरआरपीसी को सत्यापन प्रश्नावली जारी कर उसके दावों के समर्थन में साक्ष्य माँगे। सत्यापन उत्तर के साथ आरआरपीसी ने सुमितोमो के कथित पुनर्विक्रय मूल्यों और लाभप्रदता संबंधी आँकड़े तथा उनकी सहायक गणनाएँ प्रस्तुत कीं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि सत्यापन का उद्देश्य अभिलेख पर पहले से प्रस्तुत आँकड़ों की संबंधित कंपनियों के वित्तीय अभिलेखों और सहायक दस्तावेजों से जाँच करना है, न कि नए तथ्य एकत्र करना। सुमितोमो के कथित पुनर्विक्रय और लाभप्रदता संबंधी सूचना आरआरपीसी द्वारा 10 अप्रैल 2026 को, जाँच प्रारंभ होने के लगभग दस महीने बाद, प्रस्तुत की गई। प्राधिकारी ने सुमितोमो और आरआरपीसी दोनों को अपनी प्रतिक्रियाएँ पूर्ण करने के अनेक अवसर दिए। इसके बावजूद, सुमितोमो ने न तो जाँच में भाग लिया और न ही संबद्ध निर्यातकों पर लागू व्यापार सूचना के अनुसार आवश्यक सूचना प्रस्तुत की। अतः इतनी विलंबित अवस्था में प्रस्तुत सूचना को स्वीकार नहीं किया जा सकता था। उपर्युक्त के अतिरिक्त, सुमितोमो से संबंधित सूचना अधूरी भी थी। आरआरपीसी ने सुमितोमो के लाभ-हानि विवरण का डेटा प्रस्तुत किया, परंतु सुमितोमो की गैर-भागीदारी के कारण इसे उसके वित्तीय अभिलेखों से सत्यापित नहीं किया जा सका। प्रस्तुत लाभ-हानि, बिक्री और खरीद आँकड़ों के समर्थन में एसएपी अथवा ईआरपी आधारित स्क्रीनशॉट उपलब्ध नहीं थे। आरआरपीसी ने जाँच अवधि के लिए सुमितोमो के वित्तीय विवरण भी प्रस्तुत नहीं किए। इन महत्वपूर्ण कमियों के कारण आरआरपीसी की प्रतिक्रिया को पूर्ण नहीं माना जा सकता था। तदनुसार, प्राधिकारी निर्धारित करते हैं कि आरआरपीसी के निर्यात मूल्य और सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अंतर्गत सही रूप से किया गया है।

236. केम्या ने यह भी दावा किया है कि प्राधिकारी द्वारा निर्धारित उसकी उत्पादन लागत में बिक्री एवं वितरण व्यय जोड़कर वृद्धि की जानी चाहिए। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्य व्यापार क्रम का परीक्षण कारखाना-बाह्य स्तर पर किया जाता है। अतः केम्या की उत्पादन लागत में ऐसा समायोजन करने का कोई औचित्य नहीं है।

237. सदारा ने तर्क दिया है कि उसके निवल निर्यात मूल्य की गणना करते समय संबंधित व्यापारियों के लाभ मार्जिन तथा विक्रय, सामान्य एवं प्रशासनिक व्ययों का समायोजन नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि डाउ समूह और एसएबीआईसी समूह के माध्यम से की गई बिक्री सदारा की विस्तारित बिक्री शाखाओं के रूप में की जाती है। प्राधिकारी इस तर्क से सहमत नहीं हैं। एसएबीआईसी समूह और डाउ समूह विभिन्न उत्पादों तथा अनेक उत्पादकों के लिए बिक्री करते हैं और केवल सदारा की वस्तुओं का व्यापार नहीं करते। इसके अतिरिक्त, इन समूहों की शेयरधारिता संरचना सदारा से भिन्न है। सदारा स्वयं भी वस्तुओं की बिक्री से संबंधित अंतर्देशीय माल-भाड़े जैसे व्यय वहन करता है, जो उसके वित्तीय विवरणों में दर्ज हैं। अतः डाउ समूह और एसएबीआईसी समूह को सदारा की ओर से बिक्री करने के लिए गठित उसकी विस्तारित बिक्री शाखाएँ नहीं माना जा सकता।
238. सदारा ने यह भी प्रस्तुत किया है कि उसके निवल निर्यात मूल्य की गणना करते समय उसके द्वारा रिपोर्ट किए गए विपणन शुल्क की कटौती नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि यह उसके व्यापारियों द्वारा रखे गए लाभ को दर्शाता है। उसने तर्क दिया कि विपणन शुल्क के साथ-साथ डाउ समूह और एसएबीआईसी समूह के अप्रत्यक्ष विक्रय, सामान्य एवं प्रशासनिक व्ययों और लाभ की कटौती करने से एक ही व्यय की दोहरी कटौती होती है। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि डाउ समूह और एसएबीआईसी समूह के अप्रत्यक्ष विक्रय, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय सदारा से वास्तविक खरीद मूल्य तथा विभिन्न बिक्री माध्यमों में व्यापारियों द्वारा प्राप्त वास्तविक पुनर्विक्रय मूल्य के आधार पर निर्धारित किए गए हैं। खरीद मूल्य के रूप में विपणन शुल्क के समायोजन से पहले का निवल बीजक मूल्य लिया गया है। यही पद्धति सदारा के सामान्य मूल्य और निर्यात मूल्य, दोनों के निर्धारण में अपनाई गई है। इस पद्धति के आधार पर सदारा की सभी घरेलू बिक्री हानि वाली पाई गई, जिसका सदारा ने विरोध नहीं किया है।
239. यह भी उल्लेखनीय है कि उत्पादक का निर्यात मूल्य और सामान्य मूल्य स्वतंत्र ग्राहकों को प्रथम पुनर्विक्रय के स्तर से निर्धारित किया गया है। सदारा और उसके संबद्ध निर्यातकों के अभिलेखों में रिपोर्ट किए गए सभी प्रत्यक्ष बिक्री व्ययों को संबद्ध निर्यातकों के परिशिष्ट 5 के अनुसार अप्रत्यक्ष बिक्री व्ययों की गणना में उचित रूप से समायोजित किया गया है। इसके अतिरिक्त, संबद्ध निर्यातकों के लाभ का निर्धारण करते समय प्राधिकारी ने आपूर्तिकर्ताओं के लिए रिपोर्ट किए गए खरीद मूल्यों तथा परिशिष्ट 3ए/3बी/4ए/4बी में रिपोर्ट

किए गए निवल बीजक मूल्यों पर विचार किया है। चूँकि संबंधित बिक्री मूल्य में विपणन शुल्क पहले ही शामिल है, इसलिए लाभ की दोहरी गणना का प्रश्न नहीं उठता।

240. सदारा ने अनुरोध किया है कि उसे सऊदी अरामको-एसएबीआईसी समूह के लिए निर्धारित भारत औसत शुल्क के स्थान पर अलग शुल्क दिया जाए। सदारा ने यह भी कहा है कि वह कानूनी रूप से एक अलग इकाई है और सऊदी अरामको उसकी परिचालन गतिविधियों को नियंत्रित करने की स्थिति में नहीं है। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि सऊदी अरामको की एक्सीलेंट परफॉर्मेंस केमिकल्स कंपनी में 100% शेयरधारिता है, जो बदले में सदारा में 50% से अधिक शेयरधारिता रखती है। इसी प्रकार, सऊदी अरामको की एसएबीआईसी में 70% शेयरधारिता है। अतः सदारा को सऊदी अरब के अन्य उत्पादकों से असंबद्ध नहीं माना जा सकता। सदारा ने भी इस तथ्य का विरोध नहीं किया है कि वह सऊदी अरामको-एसएबीआईसी समूह से संबद्ध है। तदनुसार, प्राधिकारी ने सऊदी अरामको-एसएबीआईसी समूह के लिए एक समान शुल्क मार्जिन की सिफारिश की है।

उत्पाद दायरा और पीसीएन रिपोर्टिंग

241. प्राधिकारी ने भागीदार उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा रिपोर्ट किए गए पीसीएन की तकनीकी विनिर्देशों और सत्यापित अभिलेखों के आधार पर पुनः जाँच की है। अंतिम गणनाओं में केवल सही वर्गीकृत पीसीएन का उपयोग किया गया है।

घरेलू उद्योग और ओपीएएल का उपचार

242. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पात्रता के निर्धारण हेतु ओपीएएल को बाहर रखने से क्षति विश्लेषण प्रभावित नहीं होता और न ही इससे कोई विकृति उत्पन्न होती है, क्योंकि ओपीएएल की बिक्री और उत्पादन को भारतीय एलएलडीपीई उद्योग के व्यापक आर्थिक आँकड़ों में शामिल किया गया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि किसी उत्पादक के पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग का पात्र घटक न होने मात्र से उसकी बिक्री अथवा उत्पादन को माँग के आकलन से बाहर नहीं किया जा सकता, क्योंकि ऐसा करने से आकलन विकृत हो जाएगा।
243. आरआरपीसी ने तर्क दिया है कि ओपीएएल को केवल विशेष आर्थिक क्षेत्र की इकाई होने के कारण घरेलू उद्योग से बाहर नहीं किया जाना चाहिए था और आवेदन दाखिल किए जाने के समय तक ओपीएएल विशेष आर्थिक क्षेत्र से बाहर आ चुका था। इस संबंध में, प्राधिकारी

नोट करते हैं कि ओपीएल विशेष आर्थिक क्षेत्र से जाँच अवधि समाप्त होने के बाद बाहर आया था। यह भी नोट किया जाता है कि क्षति और पाटन से संबंधित सभी परीक्षण जाँच अवधि के संदर्भ में किए जाने हैं, न कि जाँच अवधि के बाद की परिस्थितियों के आधार पर। अतः जाँच अवधि के बाद ओपीएल के विशेष आर्थिक क्षेत्र से बाहर आने से जाँच अवधि के लिए क्षति और पात्रता का निर्धारण प्रभावित नहीं होता। प्राधिकारी पुनः स्पष्ट करते हैं कि किसी इकाई का भारत में निगमित होना अथवा भारत में वस्तुओं का भौतिक उत्पादन करना उसे स्वतः ही व्यापार उपचार के प्रयोजन से घरेलू उद्योग का भाग नहीं बनाता, विशेषकर जब लागू कानूनी व्यवस्था उस इकाई को भारत के सीमा-शुल्क क्षेत्र से बाहर संचालित मानती हो। तदनुसार, प्राधिकारी विचार करते हैं कि कुल पात्र घरेलू उत्पादन की गणना से ओपीएल को उचित रूप से बाहर रखा गया है।

244. आरआरपीसी ने यह भी तर्क दिया है कि आरआईएल के समर्थन-पत्र पर निर्भरता से पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग द्वारा “प्रमुख अनुपात” की शर्त पूरी न करने की कमी दूर नहीं हो सकती। इस संबंध में, प्राधिकारी स्पष्ट करते हैं कि एचपीएल और एचएमईएल द्वारा “प्रमुख अनुपात” की शर्त पूरी किए जाने के निर्धारण हेतु आरआईएल के समर्थन-पत्र पर निर्भरता नहीं रखी गई है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, एचपीएल और एचएमईएल कुल पात्र भारतीय उत्पादन का लगभग 25% से 30% भाग रखते हैं और पात्र घरेलू उत्पादन में उनका हिस्सा महत्वपूर्ण एवं पर्याप्त है। तदनुसार, प्राधिकारी ने एचपीएल और एचएमईएल को पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग माना है।
245. आरआरपीसी ने यह भी तर्क दिया है कि वह आरआईएल की स्थापित क्षमता, उत्पादन और बिक्री के आँकड़ों का सत्यापन नहीं कर सका, जिससे सार्थक प्रस्तुतीकरण करने का उसका अधिकार प्रभावित हुआ। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उक्त सूचना गोपनीय प्रकृति की है और आरआईएल द्वारा इसे सूचकांकित रूप में परिचालित किया गया था। आरआरपीसी सहित सभी इच्छुक पक्ष अपनी समान प्रकार की सूचना को गोपनीय बताते हैं और प्राधिकारी द्वारा भी उसे गोपनीय माना जाता है। अतः प्राधिकारी यह नहीं मानते कि आरआरपीसी के प्रस्तुतीकरण करने के अधिकार पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

मात्रा और मूल्य प्रभाव

246. अन्य इच्छुक पक्षों ने तर्क दिया है कि प्राधिकारी ने मात्रा प्रभाव को स्पष्ट करने के लिए मूल्य-संबंधी कारकों पर निर्भरता रखी है, जबकि आयातों की मात्रा में निरपेक्ष अथवा सापेक्ष रूप से हुई उल्लेखनीय वृद्धि को स्वतंत्र रूप से स्थापित किया जाना चाहिए। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जाँच अवधि में विचाराधीन देशों से आयात आधार वर्ष की तुलना में उल्लेखनीय रूप से बढ़े हैं। प्राधिकारी ने अभिलेख पर उपलब्ध तथ्यों को केवल घरेलू बिक्री की मात्रा में हुई वृद्धि के कारण को स्पष्ट करने के लिए परस्पर संबद्ध किया है।
247. सऊदी अरब के उत्पादकों ने तर्क दिया है कि सऊदी अरब से विचाराधीन वस्तुओं का भारत में आयात घरेलू उद्योग के बिक्री मूल्य से अधिक कीमतों पर हो रहा है और इसलिए ऐसे आयात घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं हो सकते। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन देशों से आयातों के प्रभाव का संचयी रूप से आकलन किया गया है। सऊदी अरब के उत्पादकों ने सऊदी अरब से आयातों को संचयी आकलन से अलग करने के समर्थन में कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि विचाराधीन देशों से समग्र आयातों का घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव पाया गया है।

आर्थिक मानदंड, भौतिक क्षति और कार्य-कारण संबंध

248. आरआरपीसी ने यह भी तर्क दिया है कि निर्यात बिक्री से संबंधित प्रवृत्ति संबंधी आँकड़े उपलब्ध न होने के कारण वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जाँच नहीं कर सका। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यात बिक्री से संबंधित विवरण घरेलू उद्योग द्वारा परिचालित आवेदन के अगोपनीय संस्करण में उपलब्ध थे। वास्तव में, आरआरपीसी ने स्वयं अपने प्रकटीकरण-पश्चात प्रस्तुतीकरण के पैरा 188 में घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री की प्रवृत्तियों पर निर्भरता रखी है।
249. अन्य इच्छुक पक्षों ने प्रस्तुत किया है कि पाटित आयातों की उपस्थिति के बावजूद जाँच अवधि में भारतीय उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि एचएमईएल ने अपना एलएलडीपीई संयंत्र वर्ष 2018 में स्थापित किया था और क्षति अवधि के दौरान उत्पादन प्रारंभ किया।
250. आरआरपीसी ने तर्क दिया है कि जाँच अवधि में घरेलू उद्योग का बिक्री मूल्य बढ़कर 91 सूचकांक अंक हो गया था, इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि घरेलू उद्योग की कीमतों का दमन हुआ। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की कीमतों में

वृद्धि, विचाराधीन देशों से आयातों के पहुँच मूल्य में हुई वृद्धि के अनुरूप थी। इसके अतिरिक्त, विचाराधीन देशों से आयात घरेलू उद्योग की बिक्री लागत से कम कीमत पर भारतीय बाजार में प्रवेश करते रहे।

251. अन्य इच्छुक पक्षों ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई, क्योंकि उसकी बिक्री, उत्पादन, क्षमता उपयोग, मजदूरी और उत्पादकता में वृद्धि हुई है तथा ये सकारात्मक मानदंड लाभप्रदता में गिरावट से अधिक महत्वपूर्ण हैं। इस संबंध में, प्राधिकारी पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि मात्रा संबंधी मानदंडों में सुधार वित्त वर्ष 2023-24 में एचएमईएल द्वारा उत्पादन प्रारंभ किए जाने के कारण हुआ। प्राधिकारी नोट करते हैं कि महत्वपूर्ण पूँजी निवेश के बाद बाजार में प्रवेश करने वाले नए घरेलू उत्पादक से अपनी क्षमता निष्क्रिय रखने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। अतः क्षति के आकलन के लिए मात्रा और वित्तीय, दोनों मानदंडों की जाँच आवश्यक है। वर्तमान मामले में एचएमईएल द्वारा उत्पादन प्रारंभ किए जाने से घरेलू उद्योग के मात्रा संबंधी मानदंडों में सुधार हुआ, परंतु घरेलू उद्योग अपनी लागत की वसूली नहीं कर सका, जिससे उसके वित्तीय मानदंड प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुए।
252. अन्य इच्छुक पक्षों ने यह भी तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग की हानियाँ वित्त वर्ष 2023-24 में एचएमईएल द्वारा उत्पादन प्रारंभ किए जाने के कारण हुईं, क्योंकि उसी वर्ष घरेलू उद्योग की हानियाँ सर्वाधिक थीं। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वित्त वर्ष 2022-23 की तुलना में वित्त वर्ष 2023-24 में विचाराधीन देशों से आयातों की कीमतों में उल्लेखनीय गिरावट हुई। फलस्वरूप, घरेलू उद्योग को विचाराधीन आयातों के पहुँच मूल्य के अनुरूप अपनी कीमतें कम करनी पड़ीं।
253. अन्य इच्छुक पक्षों ने यह भी तर्क दिया है कि प्राधिकारी क्षति की जाँच में अन्य घरेलू उत्पादकों से संबंधित सूचना पर निर्भरता नहीं रख सकते थे। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति की जाँच घरेलू उद्योग के संबंध में की गई है। तथापि, बाजार हिस्सेदारी और माँग में हुए परिवर्तनों का आकलन करने के लिए अन्य भारतीय एलएलडीपीई उत्पादकों के व्यापक आर्थिक और मात्रा संबंधी आँकड़ों की जाँच करना आवश्यक था।
254. अन्य इच्छुक पक्षों ने तर्क दिया है कि केवल उच्च क्षमता उपयोग तथा अन्य घरेलू उत्पादक के समान उपभोग मानदंड और रूपांतरण लागत प्राप्त कर लेने से यह सिद्ध नहीं होता कि

एचएमईएल के परिचालन और वित्तीय मानदंड स्थिर हो गए थे। उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि प्राधिकारी ने एचएमईएल के चुनिंदा वित्तीय मानदंडों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि नव-स्थापित पेट्रोकेमिकल संयंत्र के आरंभिक वर्षों से सामान्यतः जुड़ी लागतों और अक्षमताओं का उसके प्रदर्शन पर प्रभाव नहीं पड़ा। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि एचएमईएल के सभी लागत संबंधी मानदंडों की जाँच की गई और उनकी तुलना अन्य घरेलू उत्पादक से की गई। उत्पादन प्रारंभ करने का प्रभाव उच्च ब्याज लागत और अधिक मूल्यहास के रूप में परिलक्षित होता है। अतः प्राधिकारी ने एचएमईएल के मूल्यहास, ब्याज और कर से पूर्व लाभ (पीबीडीआईटी) की जाँच की और उसे ऋणात्मक पाया।

255. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि अन्य इच्छुक पक्ष इस तथ्य से सहमत हैं कि क्षमता उपयोग, उपभोग मानदंडों और रूपांतरण लागत में सुधार से यह संकेत मिलता है कि एचएमईएल ने तकनीकी स्थिरता प्राप्त कर ली है। तथापि, उनका तर्क है कि इससे परिपक्व वाणिज्यिक परिचालन स्थिति सिद्ध नहीं होती। प्राधिकारी नोट करते हैं कि एचएमईएल ने जाँच अवधि में अपने कुल उत्पादन का लगभग 97% घरेलू और निर्यात बाजारों में बेचा। इससे स्पष्ट है कि उसने न केवल तकनीकी स्थिरता, बल्कि वाणिज्यिक परिचालन स्थिरता भी प्राप्त कर ली थी।
256. समग्र आकलन के आधार पर, प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन देशों से पाटित आयात महत्वपूर्ण मात्रा में भारत में आए, घरेलू समान वस्तु से प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा की तथा घरेलू उद्योग को अपनी लागत की वसूली और उचित प्रतिफल अर्जित करने के लिए कीमतें पर्याप्त रूप से बढ़ाने से रोका। अतः प्राधिकारी पुष्टि करते हैं कि विचाराधीन देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

गैर-क्षतिकारक कीमत

257. अन्य इच्छुक पक्षों ने यह भी तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत के निर्धारण में उप-उत्पादों से प्राप्त आय का समायोजन किया जाना चाहिए था। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के निर्माण में घरेलू उद्योग द्वारा कोई उप-उत्पाद उत्पन्न नहीं किया जाता। ऐसे उप-उत्पाद आंतरिक उपयोग के आदानों के निर्माण के चरण में उत्पन्न होते हैं और उनसे संबंधित आय को क्षतिरहित कीमत की गणना में उचित रूप से समायोजित किया गया है।

258. घरेलू उद्योग ने यह भी आरोप लगाया है कि प्राधिकारी ने उसकी क्षतिरहित कीमत में अनुचित समायोजन किए हैं। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग का दावा सामान्य प्रकृति का है और उसके समर्थन में कोई ठोस साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है। अतः प्राधिकारी घरेलू उद्योग के प्रस्तुतीकरण से सहमत नहीं हैं।

सार्वजनिक हित, प्रयोक्ता प्रभाव और शुल्क की अवधि

259. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि विभिन्न प्रकार के उत्पादों पर शुल्क के प्रभाव की उचित गणना की गई है और इस गणना में अपनाई गई मान्यताओं के आधार को भी समुचित रूप से स्पष्ट किया गया है।

260. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि इच्छुक पक्षों ने माँग और आपूर्ति के बीच अंतर होने के कारण पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश न किए जाने का अनुरोध किया है। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि केवल माँग-आपूर्ति अंतर का होना विदेशी निर्यातकों की अनुचित व्यापार पद्धतियों के प्रतिकार हेतु उपायों की सिफारिश न करने का आधार नहीं है।

261. मूल सीमा-शुल्क से अस्थायी छूट, गुणवत्ता नियंत्रण संबंधी उपाय तथा जाँच अवधि के बाद के भू-राजनीतिक घटनाक्रम अलग-अलग नीतिगत उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। ये कारक क्षतिकारक पाटन को जारी रहने देने को उचित नहीं ठहराते। इसके अतिरिक्त, उपाय की अवधि को दो वर्ष तक सीमित करने के लिए कोई असाधारण परिस्थिति स्थापित नहीं की गई है।

ठ. निष्कर्ष

262. सभी इच्छुक पक्षों द्वारा प्रस्तुत अभ्यावेदनों, उनमें उठाए गए मुद्दों तथा अभिलेख पर उपलब्ध तथ्यों की जाँच करने के बाद, प्राधिकारी निम्नलिखित निष्कर्ष निकालते हैं:

क. विचाराधीन उत्पाद 908.4 से 940.4 किलोग्राम प्रति घन मीटर घनत्व वाला रैखिक निम्न-घनत्व पॉलीएथिलीन है।

ख. अन्य इच्छुक पक्षों द्वारा किए गए बहिष्करण अनुरोधों की जाँच की गई है। प्राधिकारी ने पाया कि घरेलू उद्योग उन उत्पादों के समान वस्तु का उत्पादन और बिक्री करता है, जिनके बहिष्करण का अनुरोध किया गया था। अतः किसी भी बहिष्करण अनुरोध को स्वीकार नहीं किया गया है।

- ग. वर्तमान जाँच में अपनाई गई पीसीएन पद्धति मेटालोसीन-आधारित तथा गैर-मेटालोसीन उत्प्रेरकों पर आधारित है।
- घ. पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने का आवेदन भारतीय एलएलडीपीई उत्पादकों की ओर से केमिकल्स एंड पेट्रोकेमिकल्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन, इंडिया द्वारा दाखिल किया गया। क्षति संबंधी सूचना हल्दिया पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड और एचपीसीएल-मितल एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रदान की गई। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने आवेदन का समर्थन किया तथा निर्धारित प्रारूप में समर्थक आँकड़े दिए। एचपीएल और एचएमईएल पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के अंतर्गत भारतीय एलएलडीपीई उत्पादन का प्रमुख अनुपात रखते हैं और आवेदन नियम 5(3) के अंतर्गत पात्रता संबंधी मानदंडों को पूरा करता है।
- ङ. प्राधिकारी ने विचाराधीन वस्तुओं के आयात की जाँच के लिए लेनदेन की उचित समीक्षा के बाद डीजी सिस्टम्स के आँकड़ों पर निर्भरता रखी है।
- च. जाँच कुवैत, मलेशिया, ओमान, कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के विरुद्ध प्रारंभ की गई थी। जाँच प्रारंभ करते समय कुवैत, कतर और ओमान से आयात का व्यक्तिगत हिस्सा कुल आयात के 3% से कम, किंतु उनका सामूहिक हिस्सा 7% से अधिक था। जाँच के दौरान कतर से आयात अपाटित पाए गए। फलस्वरूप, 3% से कम हिस्सेदारी वाले कुवैत और ओमान का सामूहिक हिस्सा 7% से कम हो गया। अतः पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 14 के अंतर्गत कुवैत, ओमान और कतर के विरुद्ध जाँच समाप्त कर दी गई है। वर्तमान जाँच के विचाराधीन देश मलेशिया, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात हैं।
- छ. विचाराधीन देशों के उत्पादकों और निर्यातकों के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण हैं।
- ज. जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है, जैसा कि निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट है:
- आधार वर्ष की तुलना में विचाराधीन देशों से पाटित आयातों की मात्रा निरपेक्ष रूप से बढ़ी है।
 - क्षति अवधि में घरेलू उद्योग की स्थापित क्षमता और माँग में वृद्धि के बावजूद, जाँच अवधि में उसकी क्षमता का महत्वपूर्ण भाग निष्क्रिय रहा।
 - विचाराधीन देशों से आयातित वस्तुएँ घरेलू उद्योग की कीमतों का मूल्य कटौती कर रही हैं।
 - विचाराधीन देशों से आयातित वस्तुओं के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में गिरावट हुई है।
 - क्षति अवधि के दौरान एचएमईएल द्वारा उत्पादन प्रारंभ किए जाने से घरेलू उद्योग के मात्रा संबंधी मानदंडों में सुधार हुआ। तथापि, समग्र भारतीय उद्योग की

बाजार हिस्सेदारी में गिरावट आई। कुछ मात्रा संबंधी मानदंडों में सुधार से वास्तविक क्षति समाप्त नहीं हो जाती, विशेषकर जब मूल्य और लाभप्रदता संबंधी मानदंडों में महत्वपूर्ण गिरावट हुई हो।

(vi) जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को वित्तीय और नकद हानियाँ हुईं तथा नियोजित पूँजी पर ऋणात्मक प्रतिफल संचित हुआ।

(vii) भारत में उत्पाद की माँग होने के बावजूद घरेलू उद्योग उचित प्रतिफल अर्जित नहीं कर सका।

झ. किसी अन्य ज्ञात कारक के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है। घरेलू उद्योग को हुई क्षति भारत में विचाराधीन आयातों के पाटन के कारण हुई है।

ञ. विचाराधीन देशों के उत्पादकों और निर्यातकों के लिए निर्धारित क्षति मार्जिन सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण हैं।

ट. पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना व्यापक जनहित में है, जैसा कि निम्नलिखित से स्पष्ट है:

(i) किसी भी इच्छुक पक्ष ने यह सिद्ध नहीं किया है कि शुल्क लगाए जाने से जनहित पर असंगत रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

(ii) शुल्क लगाए जाने से विदेशी उत्पादकों और निर्यातकों को पाटन के माध्यम से मिलने वाला अनुचित लाभ समाप्त होगा तथा भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग को समान प्रतिस्पर्धात्मक अवसर मिलेगा।

(iii) पाटनरोधी शुल्क आयातों पर प्रतिबंध नहीं लगाता। उचित और अपाटित कीमतों पर आयात भारतीय बाजार में जारी रह सकते हैं।

ड. सिफारिशें

263. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जाँच प्रारंभ की गई और इसकी सूचना सभी इच्छुक पक्षों को दी गई। घरेलू उद्योग, निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य इच्छुक पक्षों को पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध से संबंधित प्रासंगिक सूचना प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया। पाटनरोधी नियमावली के प्रावधानों के अनुसार पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध की जाँच प्रारंभ तथा संचालित करने के बाद, प्राधिकारी का विचार है कि पाटन और उससे हुई क्षति के प्रतिकार के लिए पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना आवश्यक है। अतः प्राधिकारी विचाराधीन देशों से विचाराधीन वस्तुओं के आयात पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं।

264. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए न्यूनतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए, घरेलू उद्योग को हुई क्षति दूर करने के लिए पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन में से जो कम हो, उसके बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की जाती है। तदनुसार, प्राधिकारी विचाराधीन देशों में उत्पन्न अथवा वहाँ से निर्यात की गई विचाराधीन वस्तुओं के आयात पर, इस संबंध में केंद्र सरकार द्वारा जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से 5 पाँच वर्ष की अवधि के लिए, नीचे दी गई शुल्क तालिका के स्तंभ 7 में उल्लिखित राशि के बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं:

शुल्क तालिका

क्रम सं.	शीर्षक	वस्तु का विवरण	उद्गम देश	निर्यातक देश	उत्पादक	राशि (अमेरिकी डॉलर/मीट्रिक टन)
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
1	3901 10 10 3901 40 10	लीनियर लो-डेंसिटी पॉलीइथिलीन, जिसकी डेंसिटी 908.4 से 940.4 kg/m ³	सऊदी अरब साम्राज्य	सऊदी अरब सहित कोई भी देश	अल-जुबैल पेट्रोकेमिकल कंपनी (केम्या)	75
2	-वही-	-वही-	सऊदी अरब साम्राज्य	सऊदी अरब सहित कोई भी देश	अरेबियन पेट्रोकेमिकल कंपनी (पेट्रोकेम्या)	75
3	-वही-	-वही-	सऊदी अरब साम्राज्य	सऊदी अरब सहित कोई भी देश	ईस्टर्न पेट्रोकेमिकल कंपनी (शर्क)	75
4	-वही-	-वही-	सऊदी अरब साम्राज्य	सऊदी अरब सहित कोई भी देश	जुबैल यूनाइटेड पेट्रोकेमिकल कंपनी (यूनाइटेड)	75
5	-वही-	-वही-	सऊदी अरब साम्राज्य	सऊदी अरब सहित कोई भी देश	राबिग रिफाइनरी एंड पेट्रोकेमिकल कंपनी	75
6	-वही-	-वही-	सऊदी अरब साम्राज्य	सऊदी अरब सहित कोई भी देश	सदारा केमिकल	75

			अरब साम्राज्य	सहित कोई भी देश	कंपनी	
7	-वही-	-वही-	सऊदी अरब साम्राज्य	सऊदी अरब सहित कोई भी देश	यानबू नेशनल पेट्रोकेमिकल कंपनी (यानसाब)	75
8	-वही-	-वही-	सऊदी अरब साम्राज्य	सऊदी अरब सहित कोई भी देश	क्रम सं. 1 से 7 के अतिरिक्त कोई भी उत्पादक	225
9	-वही-	-वही-	संबद्ध देशों के अतिरिक्त कोई भी देश	सऊदी अरब साम्राज्य	कोई भी	225
10	-वही-	-वही-	संयुक्त अरब अमीरात	संयुक्त अरब अमीरात सहित कोई भी देश	अबू धाबी पॉलिमर्स कंपनी लिमिटेड (बोरोज़) - सोल प्रोप्राइटरशिप L.L.C.	41
11	-वही-	-वही-	संयुक्त अरब अमीरात	संयुक्त अरब अमीरात सहित कोई भी देश	क्रम सं. 10 के अतिरिक्त कोई भी उत्पादक	94
12	-वही-	-वही-	संबद्ध देशों के अतिरिक्त कोई भी देश	संयुक्त अरब अमीरात	कोई भी	94
13	-वही-	-वही-	मलेशिया	मलेशिया सहित कोई भी देश	कोई भी	368
14	-वही-	-वही-	संबद्ध देशों के अतिरिक्त	मलेशिया	कोई भी	368

			कोई भी देश			
--	--	--	---------------	--	--	--

टिप्पणी- उपर्युक्त कंपनियों के लिए निर्दिष्ट अलग-अलग शुल्क दरों का लाभ सीमा-शुल्क प्राधिकारियों के समक्ष वैध वाणिज्यिक बीजक प्रस्तुत किए जाने पर ही उपलब्ध होगा। ऐसे बीजक पर बीजक जारी करने वाली इकाई के किसी अधिकृत अधिकारी द्वारा उसके नाम और पदनाम सहित दिनांकित एवं हस्ताक्षरित निम्नलिखित घोषणा अंकित होनी चाहिए:

“मैं, अधोहस्ताक्षरी, प्रमाणित करता/करती हूँ कि इस बीजक के अंतर्गत भारत को निर्यात के लिए बेची गई (विचाराधीन उत्पाद) की (मात्रा) का निर्माण (उत्पादक का नाम और पता) द्वारा (देश का नाम) में किया गया है। मैं घोषणा करता/करती हूँ कि इस बीजक में दी गई सूचना पूर्ण और सही है।” ऐसा बीजक प्रस्तुत न किए जाने पर अन्य सभी उत्पादकों पर लागू शुल्क दर लागू होगी। यह शर्त लागू सीमा-शुल्क कानूनों और विनियमों के अंतर्गत सीमा-शुल्क प्राधिकारियों द्वारा स्वतंत्र रूप से की जाने वाली सत्यापन कार्यवाही पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना लागू होगी।

ढ. आगे की प्रक्रिया

265. इन अंतिम निष्कर्षों में नामित प्राधिकारी के निर्धारण के विरुद्ध अपील अधिनियम और नियमों के प्रासंगिक प्रावधानों के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय अधिकरण के समक्ष की जा सकेगी।

अमिताभ कुमार
निर्दिष्ट प्राधिकारी